

जून-जुलाई, 2024

₹15

www.mediamanach.in

# मीडिया मंच

सम्पूर्ण समाचार पत्रिका

## मार लिया मैदान



जनता-जनार्दन की जीत





योगी आदित्यनाथ

मा0 मुख्यमंत्री जी, उत्तर प्रदेश



75  
आज़ादी का  
अमृत महोत्सव



यूपी रेरा क्यू.आर. कोड  
UPRERAPRJ482505/06/2024

## हनुमत विहार आवासीय योजना-2024



Rate  
₹ 25,300/-  
sq. mtr.

### मुख्य विशेषताएँ

- विश्व स्तरीय नागरिक सुविधाएँ
- आसपास में व्यावसायिक क्षेत्र और शैक्षणिक संस्थान
- मथुरा में सबसे बेहतरीन नियोजित टाउनशिप
- राष्ट्रीय राजमार्ग-19 तक आसान पहुंच मार्ग
- जेवर हवाई अड्डे के निकटतम
- मथुरा-वृन्दावन के निकटतम
- एक्सप्रेस के माध्यम से उत्कृष्ट मल्टीसिटी कनेक्टिविटी

### हनुमत विहार आवासीय योजना में भूखण्डों का विवरण

क्र.सं.	योजना कोड	वर्ग मी0 में भूखण्डों की श्रेणी ब्रेकेट	भूखण्डों की संख्या	पंजीकरण शुल्क	
				अनुसूचित जाति / अनुसूचित जनजाति (प्लॉट की अनुमानित लागत का 5%)	अन्य सभी आवेदन के लिए (प्लॉट की अनुमानित लागत का 10%)
1	HVRS - 2024	R1 (170 to 225)	26	₹ 2,84,625.00	₹ 5,69,250.00
2	HVRS - 2024	R2 (120 to 150)	77	₹ 1,89,750.00	₹ 3,79,500.00
3	HVRS - 2024	R3 (70 to 119)	127	₹ 1,50,535.00	₹ 3,01,070.00
कुल प्लॉट संख्या			230		

पंजीकरण प्रारम्भ तिथि  
02.07.2024

पंजीकरण समाप्ति तिथि  
31.07.2024 | 06:00 PM

लॉटरी ड्रा की तिथि और समय  
अलग से अधिसूचित किया जाएगा

रेरा पंजीकरण संख्या  
UPRERAPRJ482505/06/2024

मथुरा-वृन्दावन विकास प्राधिकरण ने ऑनलाईन ब्रोशर में निर्धारित नियमों और शर्तों के अनुसार, हनुमत विहार आवासीय योजना में आवासीय भूखण्डों के आवंटन के लिए लॉटरी ड्रा की घोषणा की है।

**भाग लेने का तरीका/अन्य विवरण:-** इच्छुक आवेदकों को <https://janhit.upda.in/> पर साइन अप करके यूजर आई.डी. और पासवर्ड प्राप्त करना होगा और निर्धारित तिथि तक दस्तावेज, शुल्क और पंजीकरण राशि जमा करनी होगी। विस्तृत जानकारी [www.mvdamathura.com](http://www.mvdamathura.com) अथवा <https://janhit.upda.in/> पर उपलब्ध है।

बैंकिंग पार्टनर



कृपया ध्यान दें- कृपया आवेदन पत्र एवं भुगतान करने के लिए आधिकारिक लिंक का उपयोग करें। कृपया गूगल खोज परिणामों में दिये गये किसी अन्य अनाधिकृत लिंक का उपयोग न करें। मथुरा-वृन्दावन विकास प्राधिकरण या एचडीएफसी बैंक लिमिटेड किसी भी अनाधिकृत लिंक के उपयोग के कारण होने वाले किसी भी नुकसान के लिए उत्तरदायी नहीं होगा। एचडीएफसी बैंक आवास ऋण के लिए ऋण सुविधा प्रदान करता है।

प्रसून द्विवेदी (पी.सी.एस)

विशेष कार्यधिकारी / सम्पत्ति अधिकारी  
मथुरा-वृन्दावन विकास प्राधिकरण, मथुरा

अरविन्द कुमार द्विवेदी (पी.सी.एस)

सचिव,  
मथुरा-वृन्दावन विकास प्राधिकरण, मथुरा

श्याम बहादुर सिंह (आई.ए.एस)

उपाध्यक्ष,  
मथुरा-वृन्दावन विकास प्राधिकरण, मथुरा



मथुरा-वृन्दावन विकास प्राधिकरण, मथुरा

राजकीय संग्रहालय, डैमियर नगर, मथुरा

Email: [vcmvda2014@gmail.com](mailto:vcmvda2014@gmail.com) | Website: [www.mvdamathura.com](http://www.mvdamathura.com)

Follow us on





## मीडिया मंच

वर्ष - 27

अंक : 02-03



संपादक

तेज बहादुर सिंह  
सलाहकार संपादक  
हनुमान सिंह 'सुधाकर'

कार्यकारी संपादक  
वीरेन्द्र शुक्ल

समाचार संपादक  
वीरेन्द्र सिंह

उप संपादक  
आयुष सिंह

फोटो जर्नलिस्ट  
योगेश योगी

मार्केटिंग  
सिग्मा ट्रेड विंग्स

लेआउट  
विष्णु बिसेन  
छत्तीसगढ़ ब्यूरो  
एडवोकेट अपूर्वा त्रिपाठी

स्वात्वाधिकारी

'मीडिया मंच पब्लिकेशन्स'  
के लिए प्रकाशक, मुद्रक,  
सम्पादक टी.बी. सिंह  
द्वारा प्रिंट आर्ट,  
कैन्ट रोड, लखनऊ  
से मुद्रित तथा जी-7,  
खुशनुमा कॉम्प्लेक्स,  
7-मीराबाई मार्ग,  
लखनऊ से प्रकाशित  
RNI No. : UPHIN/1998/5628

समस्त विवादों का न्यायक्षेत्र  
लखनऊ होगा

वेबसाइट :  
[www.mediamanch.in](http://www.mediamanch.in)

ई-मेल :  
[mediamanch@gmail.com](mailto:mediamanch@gmail.com)  
[tejsingh007@yahoo.com](mailto:tejsingh007@yahoo.com)

मोबाइल-09415000151



## स्थायी स्तम्भ

वास्तु/ज्योतिष	04
ब्यूरोक्रेसी	31
खेल	36
स्वास्थ्य	38
चकल्लस	44
आंखिन देखी	45
सिनेमा	47
यूपीनामा	48





## मंगल ग्रह पर पहुंचा यूपी



टी.बी. सिंह

संपादकीय

यह बड़े गर्व की बात है कि मंगल ग्रह पर यूपी की भी दस्तक हो चुकी है। केवल यूपी ही नहीं बल्कि बिहार के शहर हिल्सा का नाम भी मंगल ग्रह पर पहुंच चुका है। हिल्सा बिहार के नालंदा जिले में मौजूद है। मंगल ग्रह के जिस स्थान पर उत्तर प्रदेश के शहर का नाम अंकित हुआ है, उसका नाम 'मुरसान' है। मुरसान उत्तर प्रदेश के हाथरस जिले में स्थित है। जबकि एक क्रेटर का नाम प्रसिद्ध भौतिक



विज्ञानी दिवंगत देवेन्द्र लाल के नाम पर रखा गया है। इस तरह मंगल ग्रह की सतह पर हाल ही में खोजे गए तीन गड्ढों (क्रेटर) के नाम रखे गए हैं। यह खोज वैज्ञानिकों की एक टीम द्वारा की गई थी। जिसमें अहमदाबाद स्थित भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला (पीआरएल) के शोधकर्ता शामिल थे। मंगल ग्रह पर इन जगहों की खोज का काम साल 2021 में ही कर लिया गया था। इस महीने की शुरुआत में ही एक अंतर्राष्ट्रीय निकाय ने इन नामों के नामकरण को मंजूरी दी है। पीआरएल की सिफारिश पर अंतर्राष्ट्रीय खगोलीय संघ ने तीनों क्रेटरों को लाल क्रेटर, मुरसान क्रेटर और हिल्सा क्रेटर के नाम के प्रस्ताव को मंजूरी दी। खगोलीय संघ की अनुमति के बाद अब इन क्रेटरों का नाम आधिकारिक रूप से लाल क्रेटर, मुरसान क्रेटर और हिल्सा क्रेटर के नाम से जाना जाएगा। इन तीनों क्रेटरों की खोज से ठोस प्रमाण मिले हैं कि मंगल ग्रह कभी गोला था। और इसकी सतह पर पानी था। ये खोज मंगल ग्रह की जलवायु और भविष्य में मानव के रहने लायक अध्ययन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। ये तीनों क्रेटर्स मंगल के थारिस क्षेत्र में मौजूद हैं जो ज्वालामुखियों से भरा हुआ है। खास बात यह है कि यह क्षेत्र सौर मंडल के सबसे बड़े ज्वालामुखियों के घर के रूप में भी जाना जाता है। ऐसे स्थान पर मुरसान और हिल्सा के साथ ही लाल नाम की जगह भी अब चर्चा में रहेगी। लाल नाम पीआरएल के पूर्व निदेशक देवेन्द्र लाल के नाम पर रखा गया है। वास्तव में यह नामकरण वैज्ञानिक देवेन्द्र लाल को भी सच्ची श्रद्धांजलि की तरह है। सबसे बड़े क्रेटर के लिए डॉ. देवेन्द्र लाल के नाम की संस्तुति की गई। थारिस मंगल ग्रह के पश्चिमी गोलार्ध में भूमध्यरेखा के पास केन्द्रित विशाल ज्वालामुखी पठार है। भारत सरकार के अंतरिक्ष विभाग की ईकाई पीआरएल के निदेशक अनिल भारद्वाज के अनुसार यह नाम अंतर्राष्ट्रीय दिशा-निर्देशों के अनुसार रखे गए हैं। इसके अनुसार छोटे क्रेटरों के नाम छोटे शहरों के नाम पर और बड़े क्रेटरों के नाम प्रसिद्ध हस्तियों के नाम पर रखे गए हैं। पीआरएल के निदेशक अनिल भारद्वाज के मुताबिक इन तीनों क्रेटरों में लाल क्रेटर सबसे बड़ा है। यह करीब 65 किलोमीटर चौड़ा है। जबकि आसपास स्थित मुरसान और हिल्सा 10-10 किलोमीटर चौड़े हैं। लाल क्रेटर जिसका नामकरण प्रोफेसर देवेन्द्र लाल के नाम पर रखा गया है उनका जन्म वाराणसी में हुआ था। उन्होंने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय और बांबे विश्वविद्यालय से स्नातक किया था। वे 1972 से 1983 के बीच पीआरएल के निदेशक थे। प्रोफेसर लाल की गिनती भारत के प्रमुख भौतिक विज्ञानिकों में होती है। मुरसान क्रेटर की बात करें तो 10 किलोमीटर चौड़ा यह क्रेटर लाल क्रेटर के पूर्वी रिम पर टिका हुआ है। मुरसान में पीआरएल के वर्तमान निदेशक डॉ. अनिल भारद्वाज का जन्म हुआ था। डॉ. भारद्वाज देश के प्रतिष्ठित अंतरिक्ष वैज्ञानिक हैं। हिल्सा क्रेटर की बात करें तो यह क्रेटर भी 10 किलोमीटर चौड़ा है और लाल क्रेटर के पश्चिमी रिम के नजदीक है। हिल्सा में पीआरएल के एक और वैज्ञानिक डॉ. राजीव रंजन भारती का जन्म हुआ था। डॉ. रंजन भारती उस टीम का हिस्सा हैं जिसने इन क्रेटर की खोज की है। मंगल ग्रह पर मौजूद इन गहरे गड्ढों में कभी पानी हुआ करता था। शायद ज्वालामुखी की वजह से पानी सूख गया। लेकिन वैज्ञानिक मंगल ग्रह पर पानी की खोज में निरंतर लगे हुए हैं। यह तो अब साबित हो चुका है कि किसी दौर में मंगल पर पानी बहा करता था। मंगल को धरती से देखते हुए या मंगल यान से खींची गई तस्वीरों की मदद से अध्ययन काफी आगे बढ़ चुका है और वैज्ञानिक मंगल के हर स्थान को खंगालकर अपने-अपने हिसाब से नामकरण कर रहे हैं। जिसे अंतर्राष्ट्रीय खगोलीय संघ मंजूरी दे रहा है। □



# CS का पद चुनौती नहीं, अवसर है : मनोज सिंह

कि

सी विजन को साकार करने के लिए सबसे जरूरी है, एक बेहतरीन टीम, जो अपने लीडर के विजन को साफ नीयत और सटीक क्रियान्वयन के साथ

मिशन मोड में धरातल पर उतार सके। 2017 में मुख्यमंत्री बनने के बाद योगी आदित्यनाथ ने सबसे पहले ब्यूरोक्रेसी में कुछ ऐसे अधिकारियों को चिन्हित किया, जिनमें अनुभव और दक्षता तो हो ही, सत्यनिष्ठा के साथ-साथ कार्य करने के प्रति जीवटता और जुझारूपन भी हो। कड़ी परीक्षा के बाद बनी 'टीम योगी' के एक ऐसे ही अहम सदस्य हैं आईएस मनोज कुमार सिंह, जिन्होंने उत्तर प्रदेश के मुख्य सचिव पद का कार्यभार ग्रहण किया है।

प्रदेश के 55वें मुख्य सचिव बने मनोज कुमार सिंह प्रशासनिक मुखिया के इस पद को चुनौती नहीं अवसर मानते हैं। उनका कहना है कि यह पद जनता के लिए काम करने का एक बड़ा अवसर है। वह इस पद पर रहते हुए सरकार की नीतियों और योजनाओं को धरातल पर उतारने और थाना, तहसील स्तर पर भी जनता को न्याय दिलाने की व्यवस्था को प्रभावी बनाने में करेंगे। जिसके चलते जनता को न्याय के लिए लखनऊ की भाग-दौड़ न करनी पड़े। उन्होंने कहा कि उनकी प्राथमिकता उत्तर प्रदेश की 24 करोड़ जनता के उन्नयन के लिए काम करना है।

1988 बैच के आईएस मनोज कुमार सिंह ने दुर्गा शंकर मिश्र से यह पदभार ग्रहण किया। दुर्गा शंकर मिश्र ढाई साल तक प्रदेश के मुख्य सचिव रहे। श्री मिश्र को चौथा सेवाविस्तार न मिलने की वजह से मनोज कुमार सिंह के नाम पर सरकार ने मुहर लगा दी। उन्हें 1987 बैच के अरुण सिंघल, लीना नंदन और 1988 बैच के रजनीश दुबे को सुपर सीड करके मुख्य सचिव बनाया गया है। अरुण सिंघल और लीना नंदन फिलहाल केन्द्र में प्रतिनियुक्त पर हैं। जबकि रजनीश दुबे इसी साल अगस्त में रिटायर होने वाले हैं। मनोज कुमार सिंह का कार्यकाल अगले साल जुलाई तक है।

मनोज कुमार सिंह मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के न केवल भरोसेमंद अफसरों में शुमार हैं बल्कि उनकी पहचान योगी सरकार के परफार्मर और योजनाओं को समय पर पूरा करने वाले डिलीवरी मैन के तौर पर भी होती



- प्रदेश में अब नहीं होंगे पेपर लीक।
- प्रदेश की नौकरशाही में बेहतर सामंजस्य है।
- आईजीआरएस एक अनूठा और अच्छा फार्मूला है। इसे और प्रभावी बनाएंगे।

है। उनके बारे में कहा जाता है कि 'डिलीवरी ऑन टाइम' के योगी मंत्र को उन्होंने आत्मसात कर लिया है। योगी सरकार बनने के पहले वह केन्द्रीय प्रतिनियुक्त पर थे। 2017 में जब योगी सरकार बनी तो न केवल उनकी प्रदेश में वापसी ही हुई बल्कि उनके पास हमेशा आम जिम्मेदारियों वाला पद भी रहा।

केन्द्र से लौटते ही जहां उन्हें नगर विकास जैसा महत्वपूर्ण विभाग दिया गया तो वहीं कोविड काल में उन्होंने प्रदेश में इस महामारी की भयावहता को रोकने में अहम भूमिका निभाई। वह प्रमुख सचिव नगर विकास के पद पर 2019 तक रहे। उन्हीं के कार्यकाल के दौरान कुंभ जैसा बड़ा और भव्य आयोजन हुआ। वह कुंभ 2019 के नोडल अधिकारी भी थे। वह अगले साल जनवरी में प्रयागराज में होने वाले महाकुंभ को लेकर अभी से सतर्क व सचेत हैं। इस संदर्भ में उनका कहना है कि महाकुंभ को पहले की अपेक्षा और अधिक सुव्यवस्थित और सुरक्षित करने पर खासा जोर रहेगा। इसके लिए पूरी टीम बेहतर समन्वय के साथ काम करेगी।

वह मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के इतने विश्वासपात्र अधिकारी रहे हैं इसका अंदाजा इस बात से लग जाता है कि कोविड काल में वह मुख्यमंत्री की टीम के 11 सदस्यों में शामिल रहने के बाद फिर टीम 9 में भी शामिल रहे। अपर मुख्य सचिव पंचायती राज के रूप में उन्होंने सीएम के मिशन को धरातल पर उतारा। इस विभाग में रहते हुए उन्होंने 'बैंकिंग एट योर डोर' की परिकल्पना को साकार करने वाली सीएम योगी की 'बीसी सखी' योजना को धरातल पर उतारा।

बिहार के रहने वाले मनोज कुमार सिंह ने काशी हिंदू विश्वविद्यालय से अपनी पढ़ाई की। उन्होंने इंस्टीट्यूट ऑफ एग्रीकल्चर साइंस से 1983-85 बैच में बीएससी की। फिर 1988 में शस्य विज्ञान (एग्रोनॉमी) में एमएससी करने के उपरान्त प्रशासनिक सेवा में आ गए।

नगर विकास और पंचायती राज विभाग के बाद मई 2022 में उन्हें इंडस्ट्री विभाग की जिम्मेदारी मिली। उन्हें एपीसी (कृषि उत्पादन आयुक्त) के साथ-साथ प्रदेश के अवस्थापना एवं औद्योगिक विकास आयुक्त की जिम्मेदारी सौंपी गई। उन्हीं की अगुवाई में चौथी ग्राउंड ब्रेकिंग सेरेमनी का आयोजन राजधानी में विशाल और भव्य आयोजन हुआ। इस दौरान पहली बार प्रदेश में 10 लाख करोड़ रुपये से अधिक की परियोजनाओं का शिलान्यास हुआ।





आचार्य वंदना तिवारी  
7048200123



**मि**

त्रों! पिछले दो अंकों से कुंडली देखने की ज्योतिषीय विधा की चर्चा की जा रही है। हमने इस बात की जानकारी हासिल की कि कुंडली ज्ञान अर्जित करने के लिए मुख्यतः कुंडली के किन विषयों पर सर्वाधिक बल देना चाहिए एवम कुंडली के भाव कौन-कौन से हैं एवम इन भावों के कारक तत्व कौन-कौन से हैं।

आइए इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए इस अंक में ग्रहों कारकत्वों की चर्चा करते हैं-

ज्योतिष अनुसार ग्रहों की स्थिति से कुंडली की रूपरेखा निर्धारित होती है जैसे ग्रह की कुंडली में क्या स्थिति है अर्थात वह मुदित है, अस्त है, उनकी डिग्रियां क्या है, कारकत्व आदि। ज्योतिषीय अनुसार ग्रहों की कुल संख्या 9 है। ये हैं- सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, वृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु एवं केतु।

आइए इन ग्रहों की विस्तृत चर्चा में शामिल होते हैं-

**सूर्य-** सूर्य प्रथम भाव का कारक माना जाता है। काल पुरुष की कुंडली में इसका पंचम स्थान होता है। सूर्य मेष राशि में 10 डिग्री तक उच्च का एवम तुला राशि में 10 डिग्री तक नीच का होता है। राशियों में इसे सिंह राशि का स्वामित्व प्राप्त है। सामान्य भाषा में कहा जाए तो सूर्य मेष राशि में 10 डिग्री तक अपने शुभ कारकत्वों को देने की क्षमता रखता है, इसके विपरीत तुला राशि में अपने शुभ कारकत्वों को देने में असमर्थ हो जाता है। इसे प्राप्त करने के लिए जातक को काफी मशक्कत करनी पड़ती है।

सूर्य पुरुष जाति, रक्त वर्ण, पित्त प्रकृति एवं पूर्व दिशा का स्वामी माना जाता है। यह आत्मा, आरोग्य, स्वभाव, राज्य, देवालय का सूचक एवं पितृ कारक ग्रह है। कुंडली में सूर्य के पीड़ित रहने पर मंदाग्नि, अतिसार, सिर दर्द एवं हृदय रोग की संभावना बढ़ जाती है। सूर्य अगर

# कुंडली कैसे देखें



पीड़ित हो तो भावनात्मक स्तर पर जातक में उदासी, शोक, अपमान कलह, आदि की वृद्धि होती है। शरीर में मेरुदंड, स्नायु, हृदय, नेत्र आदि अवयवों पर इसका विशेष प्रभाव होता है। रिश्ते में यह पिता का कारक माना जाता है। सूर्य को क्रूर ग्रह माना गया। यह जातक के स्वभाव को उग्र बनाता है।

**चंद्र-** कुंडली में चंद्र चतुर्थ भाव का कारक माना जाता है। काल पुरुष की कुंडली में यह चतुर्थ भाव में स्थित भी होता है। चंद्र वृष राशि में 3 डिग्री तक उच्च का होता है तथा वृश्चिक राशि में 3 डिग्री तक नीचे का होता है। सामान्य तौर पर उच्च नीच को आप अच्छे एवं बुरे प्रभाव के रूप में ले सकते हैं। रिश्ते में यह माता का कारक माना जाता है। इसे किसी भी वृद्ध महिला का प्रतीक माना जाता है। अगर चंद्र पीड़ित होता है तो आप माता या माता समान महिलाओं का या वृद्ध महिला का सम्मान करें तो आपका चंद्र शुभ फलदायी हो सकता है।

चंद्र ग्रह स्त्री जाति, श्वेत वर्ण, जलीय एवं पश्चिम दिशा का स्वामी माना जाता है। कुंडली में चंद्र का सीधा संबंध मन से होता है। स्वास्थ्य की दृष्टि से चंद्र जलीय रोग, मानसिक रोग आदि का कारक होता है। चंद्र के पीड़ित होने पर इन रोगों की होने की संभावना बढ़ जाती है। चंद्र शरीर में रक्त का कारक भी माना जाता है। शुक्ल पक्ष के दशमी से कृष्ण पक्ष के पंचमी तक चंद्रमा पूर्ण बली रहता है।

**मंगल ग्रह-** मंगल ग्रह को आक्रामक ग्रह के रूप में देखा जाता है। कुंडली में यह तीसरे

एवं छठे भाव का कारक माना जाता है। काल पुरुष की कुंडली में इसे पहली राशि एवं आठवीं राशि का स्वामित्व प्राप्त है। मंगल ग्रह मकर राशि में 28 डिग्री तक उच्च का होता है एवं कर्क राशि में 28 डिग्री तक नीच का होता है।

इसे कुंडली में धैर्य एवं पराक्रम के रूप में देखा जाता है। संबंधों में भाई-बहनों का कारक माना जाता है। शरीर की बात करें तो यह हड्डी एवम अस्थि-मज्जा का कारक माना जाता है।

**बुध-** यह ग्रह नपुंसक जाति, श्याम वर्ण, उत्तर दिशा का स्वामी एवं त्रि-दोष (वात पित्त कफ) प्रकृति का होता है। बुध के बलि होने पर जातक, चिकित्सा, शिल्प, कानून, व्यवसाय आदि में कुशल होता है। राशि चक्र में यह तृतीय राशि एवं छठे राशि का स्वामी होता है। संबंधों की बात करें तो यह चचेरे, ममेरे, फुफेरे भाई-बहनों का कारक होता है। बुध ग्रह कन्या राशि में 15 डिग्री तक उच्च का होता है एवं मीन राशि में 15 डिग्री तक नीच का होता है। बुध ग्रह पर साथी ग्रह का प्रभाव बहुत पड़ता है अर्थात यह जिस ग्रह के साथ होता है उसी ग्रह का स्वभाव ले लेता है।

**वृहस्पति ग्रह** - इसे गुरु ग्रह तथा देव गुरु के नाम से भी जाना जाता है। राशियों में धनु राशि एवं मीन राशि का स्वामित्व इन्हें प्राप्त है। कर्क राशि में 5 डिग्री तक यह उच्च का माना जाता है तथा मकर राशि में 5 डिग्री तक नीच हो जाता है। गुरु ग्रह के कारकत्वों में धन भाव, पंचम भाव, आय भाव एवम भाग्य भाव शामिल हैं। यह ग्रह ग्रह पुरुष जाति, पित्त एवम पूर्वोत्तर



दिशा का स्वामी माना जाता है। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह ग्रह कफ, धातु तथा चर्बी का कारक होता है। यह ग्रह हृदय का कारक भी माना जाता है। इस ग्रह के द्वारा पारलौकिक एवं आध्यात्मिक सुखों का विशेष विचार किया जाता है।

**शुक्र ग्रह** - ज्योतिषीय अनुसार शुक्र ग्रह को ग्रह वृष राशि एवं तुला राशि का स्वामी माना जाता है। कुंडली में इसे जाया कारक के नाम से भी जाना जाता है। शुक्र का शुभ दृष्ट होना व्यक्ति को चरित्रवान बनाता है। शुक्र को 64 कलाओं का स्वामित्व प्राप्त है। यह कफ, वीर्य आदि धातुओं का कारक माना जाता है।

यह ग्रह स्त्री जाति, गौर वर्ण, दक्षिण पूर्व दिशा का स्वामी, कार्य कुशल एवं जलीय तत्वों वाला होता है। शरीर में यह आँखों का कारक माना जाता है। इसके द्वारा जातक की चातुर्यता, सांसारिक सुख, व्यवहारिक सुख आदि पर विचार किया जाता है।

ज्योतिषीय अनुसार शुक्र एवं गुरु ग्रह को शुभ ग्रह माना जाता है। शुक्र मीन राशि में 27 डिग्री तक उच्च का माना जाता है एवं कन्या राशि में 27 डिग्री तक नीच का माना जाता है।

**शनि ग्रह** - शनि ग्रह को मकर राशि एवं कुंभ राशि का स्वामित्व प्राप्त है यह मेष राशि में 20 डिग्री तक नीच का होता है एवं तुला राशि में 20 डिग्री तक उच्च का होता है। शनि को पापी ग्रह समझा जाता है।



यह ग्रह नपुंसक जाति, कृष्ण वर्ण, पश्चिम दिशा का स्वामी वायु तत्व का कारक माना जाता है। इस ग्रह से आयु, शारीरिक बल, दृढ़ता, विपत्ति, प्रभुता, मोक्ष, यश, ऐश्वर्य, नौकरी आदि विषयों का विचार किया जाता है।

**राहु ग्रह** - राहु ग्रह छाया ग्रह है। इनका अपना अस्तित्व नहीं होता। ये ग्रह जिस राशि में बैठे होते हैं उनकी प्रकृति को धारण कर लेते हैं। ये ग्रह कृष्ण वर्ण, दक्षिण दिशा का स्वामी एवं क्रूर ग्रह के रूप में जाने जाते हैं। राहु जहाँ बैठता है वहाँ के कारकत्वों को अवरोधित करता है।

**केतु ग्रह** - केतु ग्रह भी छाया ग्रह है। इसका भी अपना अस्तित्व नहीं होता। यह जिस ग्रह या जिस राशि के साथ स्थित होता है उस की प्रकृति को धारण कर लेता है। यह मोक्ष कारक ग्रह माना जाता है।

यह कृष्ण वर्ण एवं क्रूर ग्रह माना जाता है। रिशतो में जहाँ राहु दादा-दादी के कुटुंब को प्रतिनिधित्व करता है वहीं केतु नाना-नानी के घर का प्रतिनिधित्व करता है। इस ग्रह से चर्म रोग का भी विचार किया जाता है। कुछ स्थितियों में केतु शुभ ग्रह भी माना जाता है।

उपर्युक्त बातें अन्य तथ्यों को स्थिर रखते हुए बताई गई है। कुंडली में इन ग्रहों की अपनी स्थिति एवम अन्य ग्रहों की दृष्टि आदि का भी प्रभाव पड़ता है जिससे फलित प्रभावित होते हैं

॥ सर्वे भवन्तु सुखिनः॥ □

**डॉ. चन्द्र भूषण**

आईएएस  
विशेष सचिव

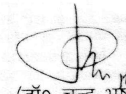


पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग  
उत्तर प्रदेश

**शुभकामना संदेश**

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि 'मीडिया मंच' समाचार पत्रिका ने अपना स्थापना के 26 वर्ष पूर्ण कर लिए हैं तथा मई 2024 में पत्रिका 27वें वर्ष में प्रवेश कर चुकी है। देश के प्रमुख हिन्दी भाषी राज्यों विशेषतः उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड की सभी प्रकार की गतिविधियों, समस्याओं को पाठकों के समक्ष इस पत्रिका ने सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया है। स्थापना दिवस के अवसर पर प्रकाशित होने वाला 'विशेषांक' निश्चित रूप से पाठकों के लिए अत्यन्त उपयोगी अतएव संग्रहणीय होगा।

मैं इस शुभ अवसर पर 'मीडिया मंच' के सफल प्रकाशन के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

  
(डॉ० चन्द्र भूषण)



# मार लिया मैदान



• वीरेन्द्र शुक्ल



भी सफल हुए।

17 सालों के अपने लंबे करियर में रोहित ने एक मिडिल आर्डर बैट्समैन के रूप में शुरुआत कर ओपनर बल्लेबाज बनने की महारथ भी हासिल की।

रोहित शर्मा यूं ही महान और चैंपियन खिलाड़ी बनकर न केवल हमारे सामने हैं बल्कि उन की महानता, आक्रामकता और परिपक्वता की कहानी आंकड़े खुद बयां करते हैं। उन्होंने टी-20 इंटरनेशनल में 159 मैच खेल डाले हैं।

यह एक विचित्र संयोग या इत्तेफाक ही कहा जाएगा कि जिस दक्षिण अफ्रीका के विरुद्ध खेल कर अपने अंतर्राष्ट्रीय करियर का आगाज 2007 में रोहित शर्मा ने किया था। उसी दक्षिणी अफ्रीका को टी-20 वर्ल्ड कप के फाइनल में पराजित कर न केवल अपने क्रिकेट सफर की संपूर्णता ही हासिल की, बल्कि भारत को 17 सालों के लंबे इंतजार के बाद टी-20 वर्ल्ड चैंपियन बनवाने में

## जीत का स्वाद

कप्तान रोहित शर्मा ने अपनी जीत का जश्न बहुत ही खास अंदाज में मनाया। उन्होंने इस पल को हमेशा के लिए अपने अंदर समाकर रखने के लिए पिच से मिट्टी उठाकर खा ली।

उन्होंने मैदान की पिच का स्वाद उसी तरह से चखा, जैसा कि दिग्गज टेनिस खिलाड़ी नोवाक जोकोविच विम्बल्डन जीतने के बाद करते हैं।

**6** यह जीत सितारों में लिखी हुई थी।.....

मैं मानता हूँ कि जो लिखा है, वह होकर रहेगा, जो हुआ है, वह पहले से लिखा था, लेकिन मैच ये पहले यह पता नहीं होता कि क्या लिखा है, यही तो खेल है, यही गेम है।







## दुनिया के महान कप्तानों की फेहरिस्त में रोहित शामिल

टीम को विश्व विजयी बनाने वाले भारतीय क्रिकेट कप्तान के रूप में ही रोहित शर्मा न केवल याद किए जाएंगे बल्कि वह दुनिया के अन्य खेलों के महान कप्तानों की फेहरिस्त में भी शामिल हो गए हैं। वह फुटबॉल जगत के अदभुत खिलाड़ी लियोनेल मेसी के कप्तान बनने की ही तरह की भूमिका में नजर आते हैं।

14 जुलाई 2014 को ब्राजील के रियो डि जेनेरियो में उस रात महान फुटबॉलर मेसी की आंखों से आंसू गिर रहे थे। क्योंकि अर्जेन्टीना विश्व कप फुटबाल का फाइनल जर्मनी से हार गया था। लेकिन फिर 18 दिसंबर 2022 की बात करें तो उस रात 37 साल के मेसी के हाथों में विश्व कप ट्राफी थी। ठीक उसी तरह रोहित शर्मा के जिंदगी की भी दास्तान है। गौरतलब है कि भारत के अहमदाबाद के नरेन्द्र मोदी स्टेडियम में 19 नवंबर 2023 की रात कप्तान रोहित अपने आसुओं को छुपाते हुए पवेलियन लौट रहे थे क्योंकि पूरे टूर्नामेंट में अजेय रही टीम इंडिया आस्ट्रेलिया के हाथों वर्ल्ड कप फाइनल हार गई थी। लेकिन उसी के सात महीने बाद बारबडोस में 37 साल के रोहित के हाथों में वर्ल्ड कप ट्राफी थी। इस तरह मेसी और रोहित दोनों ही महान कप्तान कहलाने के हकदार हो जाते हैं क्योंकि दोनों ने ही टीम को निराशा की गर्त से निकालकर सफलता की चोटी पर पहुंचा कर ही दम लिया। मेसी की ही तरह रोहित ने भी यह ऊँचाई तब हासिल की जब वह कैरियर के अंतिम पड़ाव पर हैं।

जो कि एक विश्व रिकॉर्ड है। इसी तरह उनके तूफानी बल्ले से निकले टी-20 में 4231 रन भी किसी बैटर के मुकाबले सर्वाधिक रन हैं। यही नहीं उन्होंने अपनी धुआंधार पारियों के दौरान जो गगनचुंबी 205 सिक्सरों की बौछार की। वह भी किसी खिलाड़ी के मुकाबले अब तक का सर्वाधिक रिकॉर्ड है।

सफलता और प्रसिद्धि के शिखर को चूमने वाले रोहित शर्मा इससे पहले तीन बड़े मौकों पर चूके भी थे। गौरतलब है कि करीब दो साल पहले जब उन्हें टीम इंडिया की कप्तानी सौंपी गई थी तब उसी के सात महीने बाद ही हुए पहले इम्तिहान टी-20 वर्ल्ड कप में ही वह फेल हो गए थे। फिर टेस्ट चैंपियनशिप में भी वह असफलता के ही दायरे में कैद रहे और पिछले साल जब भारत में ही वन डे वर्ल्ड कप हुआ तो पिछले दो फाइनल हारों की ही तरह इस बार का फाइनल भी वह उसी आस्ट्रेलिया से हार कर

## जीत और संयास साथ-साथ

टी 20 वर्ल्ड कप जीतने के साथ ही साथ कप्तान रोहित शर्मा और विराट कोहली ने साथ ही साथ क्रिकेट के सबसे छोटे फॉर्मेट (फटाफट क्रिकेट) से संयास ले लेने की घोषणा कर दी।

प्लेयर ऑफ द मैच विराट कोहली ने कहा कि यह मेरा आखिरी टी 20 वर्ल्ड कप था। अब हम यही हासिल करना चाहते थे और यही हुआ। अब अगली पीढ़ी के लिए टी 20 को आगे ले जाने का समय है। यदि हम हार भी जाते तो भी मैं ऐसा ही करता। कोहली ने 125 टी 20 में 48.69 की औसत से 4,188 रन बनाए। कोहली के बाद संयास की घोषणा करते हुए रोहित ने कहा कि मैं इस जीत के लिए बहुत बेताब था।

**जडेजा ने भी लिया संयास** - अनुभवी हरफनमौला खिलाड़ी रवीन्द्र जडेजा ने भी फटाफट क्रिकेट से संयास लेने की घोषणा कर दी है। पर टेस्ट व वन डे खेलते रहेंगे।





## द्रविड़ को मिली अविस्मरणीय गुरु दक्षिणा

शायद ही लोगों को पता हो कि राहुल द्रविड़ ने अपने लंबे कैरियर में मात्र एक अंतर्राष्ट्रीय टी 20 मैच खेला। यही नहीं भले ही वह भारत के महान खिलाड़ियों में शुमार व कप्तान भी रहे बावजूद इसके उनकी तमाम कोशिशों के बावजूद एक भी वर्ल्ड कप अपनी झोली में नहीं डाल सके। लेकिन आखिर में उन्होंने वह हासिल कर लिया जिसकी वह कल्पना ही किया करते थे। टीम इंडिया ने अपने कोच को टी 20 वर्ल्ड कप जीतकर और कितनी बड़ी गुरु दक्षिणा दे सकते थे? यह उनके अनुबंध का आखिरी मैच था। जबकि उनके कार्यकाल में पिछले साल टीम वन डे विश्व कप के फाइनल में पहुंची थी।

यही नहीं द्रविड़ के गुरुमंत्र का ही कमाल था कि टीम इंडिया ने पिछले 12 महीने में आईसीसी के तीन फाइनल मैच खेले। लेकिन जीत अंतिम टी 20 में मिली।

उल्लेखनीय है कि पिछले साल वन डे वर्ल्ड कप के फाइनल की हार के बाद राहुल द्रविड़ पूरी तरह कोच के पद से इस्तीफा देने का मन बना चुके थे। लेकिन कप्तान रोहित शर्मा की मान मनौव्वल के बाद वह टी 20 के लिए भी कोच बने रहने को राजी हुए थे। यही वजह है कि वह रोहित को बहुत याद करेंगे।

मायूस और निराश हो गए। लेकिन लगातार मिल रही असफलता और निराशा के बावजूद हिटमैन ने न ही हिम्मत हारी थी और न ही हथियार डालने का कार्य किया। बल्कि अपने संकल्प और हशरत को हकीकत में बदलने का अनोखा कारनामा कर दिखाया।

इस तरह रोहित शर्मा कपिल देव और महेन्द्र सिंह धोनी के बाद रोहित शर्मा भारत के तीसरे विश्व कप विजेता बने। वैसे भारत की झोली में चौथी बार विश्व कप आया है।

1983 में कपिल देव ने वन डे वर्ल्ड कप में भारत को पहली बार विश्व विजेता बनाया था। फिर 2007 में महेन्द्र सिंह धोनी के नेतृत्व में भारत ने पहला टी-20 वर्ल्ड कप जीता था। फिर धोनी के ही नेतृत्व में भारत ने 2011 में वन डे वर्ल्ड कप में विजयश्री हासिल की थी। तब से हम वर्ल्ड कप में जीत के लिए तरस रहे थे। रोहित टीम को निराशा की गर्त से निकालकर अमेरिका और वेस्टइंडीज के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित यह टी-20 वर्ल्ड कप जहां भारत के लिए बेहद खास साबित हुआ वहीं दक्षिण अफ्रीका के लिए यह एक बार फिर बुरा सपना बनकर रह गया। भले ही दक्षिण अफ्रीकी टीम सेमी फाइनल में आकर लगातार हारने की वजह से चोकर्स के रूप में अविश्वस्त होती रही थी लेकिन इस बार उन्होंने न केवल कमाल का ही प्रदर्शन किया बल्कि बिना एक भी मैच गंवाए अविजित रहते हुए फाइनल तक का सफर तय किया था। लेकिन रोमांचक और उतार-चढ़ाव भरे फाइनल में वह हार के दायरे से बाहर नहीं निकल सके और एक बार फिर चोकर्स का ठप्पा

लग गया। दक्षिण अफ्रीकी टीम पिछले 37 वर्षों से वर्ल्ड कप जीतने की अपनी तमन्ना पूरी नहीं कर पाई है। इस टीम ने आज तक सिर्फ एक ही आईसीसी ट्राफी (1998 में चैंपियंस ट्राफी) जीती है। वहीं भारतीय टीम ने भी पूरे टूर्नामेंट में अपराजित रहते हुए फाइनल में प्रवेश किया था। यह जीत केवल रोहित शर्मा या फिर टीम इंडिया की ही नहीं बल्कि करोड़ों भारतीयों की उम्मीद की जीत थी। इस जीत और फाइनल के पल-पल के रोमांच से क्रिकेट प्रेमी लंबे अरसे तक अभिभूत होते रहेंगे।

हर खिलाड़ी ने अपनी तरफ से सर्वश्रेष्ठ और शत प्रतिशत योगदान दिया। फिर भी विराट कोहली के फाइनल में चले बल्ले और सूर्य कुमार यादव का अकल्पनीय कैच बेहद खास है। फाइनल से पहले पूरे टूर्नामेंट में विराट कोहली का बल्ला शांत ही था। लोग तो कोहली के ओपनिंग को लेकर सवाल तक खड़े करने लगे थे। लेकिन विराट ने अंततः अपनी अहमियत दिखाई थी। सूर्य कुमार यादव का जिक्क किए बिना इस वर्ल्ड कप की कहानी ही अधूरी रहेगी। उन्होंने जिस अंदाज में मिलर का कैच पकड़ा वह अद्भुत था और यह मैच विनिंग कैच साबित हुआ। शुरुआती दौर में भारत का प्रदर्शन निराशा जनक होने लगा था। लेकिन ज्यों-ज्यों मैच आगे बढ़ा त्यों-त्यों रोहित के बेहतरीन नेतृत्व के साथ-साथ शानदार टीम वर्क और कमिटमेंट का नतीजा रहा कि भारत एक समय जो उसके हाथ से लगभग जाता हुआ प्रतीत हो रहा था वह टीम की पूरी प्रतिबद्धता के चलते जीत (7 रन) में बदल गया।

## भारत के खाते में अब तक 6 आईसीसी ट्राफी

कपिल देव के नेतृत्व में 1983 में पहली बार वन डे वर्ल्ड कप जीतने के बाद से इस बार की टी 20 वर्ल्ड कप में विजय को लेकर भारत ने 6 बार आईसीसी ट्राफी जीतने का सम्मान पा लिया है। इसके साथ ही भारत दूसरी बार टी 20 वर्ल्ड कप का चैंपियन बना है। इससे पहले टीम इंडिया ने महेन्द्र सिंह धोनी की कप्तानी में 2007 में पहला टी 20 वर्ल्ड कप जीता था। इसके अलावा 2011 में वन डे वर्ल्ड कप भी भारत ने अपने नाम किया इसके साथ ही 2002 और 2013 में भारत ने चैंपियंस ट्राफी अपने नाम किया था।

पैसे की बारिश- ऐतिहासिक जीत के बाद भारत को जहां आईसीसी की तरफ से 20.42 करोड़ रुपये मिले तो वहीं बीसीसीआई ने टीम इंडिया को 125 करोड़ रुपये का भारी भरकम ईनाम दिया है।





# जनता-जनार्दन की जीत



जागरूक है और उसमें इतनी क्षमता है कि वह खुद को राजनीति का धुरंधर कहने वाले नेताओं को भी धूल चटा सकता है। वह अपनी राय को अपने मत के जरिए प्रदर्शित करता है और इस तरह से प्रदर्शित करता है कि अनेक बार सारे राजनीतिक पंडित उसके आगे नतमस्तक दिखाई देते हैं।

2024 के लोकसभा चुनावों के नतीजों ने एक बार फिर इस बात को साबित कर दिखाया है। बीजेपी ने एनडीए गठबंधन के साथ 'अबकी बार 400 पार' का नारा दिया था और विपक्ष के ढीले ढाले गठबंधन ने कांग्रेस के नेतृत्व में अपनी सरकार बनाने का दावा ठोका था। 2 महीने से लंबी चली चुनावी प्रक्रिया में दोनों ही गठबंधन अपने-अपने तरीके से अपने अपने दावों को सच साबित करने की कोशिश में जुटे हुए थे।

मतदान पूर्ण होने के बाद आए एग्जिट पोल के तमाम नतीजों ने यह दिखाने की कोशिश की थी कि बीजेपी के नेतृत्व वाला एनडीए गठबंधन अपने नारे को सफल बनाता दिखाई दे रहा है। हालांकि विपक्षी गठबंधन ने इन सर्वेक्षणों के नतीजे को सरासर ठुकराया और दावा किया कि सरकार तो उनके गठबंधन की ही बन रही है। लेकिन जब चुनाव के नतीजे घोषित होने लगे तो यह साफ हो गया कि न तो एनडीए गठबंधन का दावा पूरी तरह सच साबित हुआ और न ही विपक्षी गठबंधन का। असल जीत तो जनता जनार्दन की हुई जिसने अपने मताधिकार का सतर्क इस्तेमाल किया और भारत के लोकतंत्र की मजबूती में एक और सुनहरा अध्याय लिख दिया।

एनडीए इस बात पर गदगद है कि नरेंद्र मोदी ने प्रधानमंत्री के रूप में तीसरी बार शपथ लेकर आजादी के बाद जवाहरलाल नेहरू द्वारा बनाए गए रिकार्ड की बराबरी कर ली है तो विपक्षी गठबंधन इस उम्मीद से भरा हुआ है कि अगर एनडीए गठबंधन सरकार की चूल्हे हिलेंगी तो आने वाले भविष्य में उसे भी सत्ता में आने का मौका मिल सकता है। राहुल गांधी और कांग्रेस इस बात से अति प्रसन्न है कि इस बार उसे पिछले चुनाव के मुकाबले लगभग दुगुनी सीटें मिली हैं

और वह संसद में नेता प्रतिपक्ष का पद भी हासिल कर सकेगी। समाजवादी पार्टी के लिए उत्तर प्रदेश से 37 सीटें जीतना एक ऐतिहासिक उपलब्धि है और अखिलेश यादव का सीना इस बात से जरूर चौड़ा हो रहा होगा कि उनके पिता भी जिस लक्ष्य तक नहीं पहुंच सके थे उन्होंने उसे हासिल कर दिखाया है। लालू के बेटों की आरजेडी, शरद पवार की एनसीपी और बाला साहब ठाकरे के पुत्र उद्धव ठाकरे की शिवसेना को भी इस चुनाव ने आक्सीजन दे दी है। वाम दलों को भी राहत मिली है और ऐसा ही कुछ ममता बनर्जी की तृणमूल कांग्रेस के साथ भी हुआ है।

कुल मिलकर नवीन पटनायक की बीजेडी के अलावा लगभग हर राजनीतिक दल इन चुनावों से किसी ने किसी रूप में लाभान्वित हुआ है। मायावती की बसपा को जरूर अपवाद कहा जा सकता है क्योंकि बीएसपी के संगठन और वोट प्रतिशत दोनों में ही काफी गिरावट आई है।

वोट प्रतिशत घटने का खामियाजा बीजेपी को भी झेलना पड़ा है पिछली बार के मुकाबले भाजपा के खराब प्रदर्शन के लिए बड़े राज्यों में उसके मत प्रतिशत में आई गिरावट जिम्मेदार है। समूचे देश में पार्टी को 36.56 फीसदी मत हासिल हुए। पिछली बार के 37.30 के मुकाबले महज 0.74 फीसदी की कमी आने के बावजूद उसे 63 सीटों का घाटा झेलना पड़ा। सबसे बड़ा घाटा उसे पांच बड़े राज्यों यूपी, बिहार, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल और राजस्थान ने दिया। इन राज्यों में कुल मिलाकर औसतन 5 फीसदी कम वोट मिलने का खामियाजा भाजपा को कुल 61 सीटें गंवाने के रूप में



गोविन्द पंत राजू  
9415014980



आठारहवीं लोकसभा चुनाव के नतीजे एक बार फिर इस तथ्य को स्थापित करते हैं कि देश का मतदाता बेहद



भुगतना पड़ा।

भाजपा के मुकाबले कांग्रेस को इस बार 21.19 फीसदी वोट मिले जो पिछली बार 19.46 फीसदी थे। देखने में यह अंतर बेहद मामूली लगता हो लेकिन पार्टी की सीटों की संख्या बढ़ाने में इसने बड़ा योगदान दिया है। बीजेपी को यूपी में पिछली बार 49.98 फीसदी वोट मिले थे जबकि इस बार इसमें करीब साढ़े आठ फीसदी की गिरावट आ गई। पार्टी को 41.37 फीसदी वोट मिले और उसकी सीटों की संख्या 26 घट गई।

खास बात यह है कि पिछली बार 5 सीटें जीतने वाली समाजवादी पार्टी को तब 18.11 फीसदी वोट मिले थे जबकि इस बार उसे 33.59 फीसदी वोट के साथ 37 सीटें मिली हैं। राज्य में पिछली बार अपने दम पर चुनाव लड़ी कांग्रेस को 2019 में सिर्फ 6.36 फीसदी वोट मिले थे। इस बार उसे सपा के साथ रह कर 9.36 फीसदी वोट और पिछली बार के मुकाबले 5 सीटें ज्यादा मिलीं।

भाजपा को वोटों का दूसरा बड़ा झटका राजस्थान में लगा जहां उसे 2019 में 59.07 फीसदी वोट मिले थे जबकि इस बार सिर्फ 49.24 फीसदी वोट मिले और उसके सीटों की संख्या 10 घट गई। उसके उलट कांग्रेस का वोट प्रतिशत पिछली बार के 34.24 के मुकाबले इस बार सिर्फ साढ़े तीन फीसदी बढ़ा मगर उसे 8 सीटें मिली जो पिछली बार शून्य थीं।

भाजपा को 240 की संख्या तक पहुंचाने में मध्यप्रदेश का बहुत बड़ा हाथ है जहां उसने सभी 29 सीटें जीतीं। यहां पार्टी को पिछली बार 28 सीटें और 58 फीसदी वोट मिले थे। इस बार पार्टी को 59.27 फीसदी वोट मिले। वहीं कांग्रेस ने 2019 में 34.5 फीसदी वोट के साथ एक सीट जीती थी मगर इस बार उसे 32.44 फीसदी वोट मिले। पार्टी यहां से छिंदवाड़ा की वह सीट भी हार गई जो पिछले कई चुनावों से उसका गढ़ था। भाजपा को सीटों का दूसरा सबसे बड़ा झटका महाराष्ट्र में लगा जहां उसे इस बार 14 सीटें कम मिली हैं। कांग्रेस-एनसीपी (शरद) - शिवसेना( उद्धव) गठबंधन को 43.91: वोट मिले, जबकि भाजपा गठबंधन को 43.60:। सिर्फ 0.31: मतों के अंतर से कांग्रेस गठबंधन ने 30 सीटें जीत लीं, एनडीए 17 पर सिमट गया।

यहां भाजपा का वोट प्रतिशत 1.66: कम हुआ है। 2019 में 27.84: वोट के साथ 23 सीटें मिली थीं, जबकि इस बार 26.18: वोट

और 9 सीटें मिलीं। कांग्रेस का वोट शेयर 16.41 फीसदी के मुकाबले सिर्फ आधा फीसदी बढ़कर 16.92 पहुंचा, मगर सीटों की संख्या एक से बढ़कर 13 पहुंच गई।

बंगाल में बीजेपी 2019 में 40.7: वोट और 18 सीटें मिली थीं। इस बार 38.73: वोटों के साथ 12 सीटें मिलीं। वहीं, ममता बनर्जी के वोट ढाई फीसदी बढ़ गए, जबकि सीटें सात बढ़ीं। पिछली बार 43.3:

के साथ उसे 22 सीटें मिलीं, जबकि इस बार 45.76: वोटों के साथ 29 सीटें मिलीं।

बिहार में राजद को पिछली बार कांग्रेस के साथ चुनाव लड़ने पर 15.36: वोट और शून्य सीटें मिली थीं, जबकि इस बार कांग्रेस और वाम दलों के साथ गठबंधन में लड़ने पर 8 फीसदी ज्यादा 23.58: वोट के साथ चार सीटें मिलीं। वहीं, भाजपा का गठबंधन करीब-करीब पिछली बार की तरह ही था, लेकिन उसका वोट करीब तीन प्रतिशत गिर गया और सीटों की संख्या 17 से गिरकर 12 रह गई। पार्टी को पिछली बार 23.58 जबकि इस बार 20.52 फीसदी वोट मिले।

बीजेपी के लिए दक्षिण भारत के चुनाव परिणाम तुलनात्मक रूप से बेहतर माने जा सकते हैं क्योंकि वहां पार्टी ने कुल 130 सीटों में से 29 पर जीत दर्ज की। दक्षिणी राज्यों में कर्नाटक को छोड़कर भाजपा के लिए अन्य सभी राज्यों में चुनावी परिस्थितियों कभी भी अनुकूल नहीं रहीं। 2019 की मोदी लहर में भी बीजेपी तमिलनाडु केरल और आंध्र प्रदेश में एक भी सीट नहीं जीत पाई थी लेकिन इस बार बीजेपी आंध्र प्रदेश में तीन सीट जीतने में सफल रही है। कर्नाटक में उसे 17 सीटें हासिल हुईं, तेलंगाना में गठबंधन के कारण उसके हिस्से में 8 सीटें आईं और पहली बार एक सीट केरल से भी जीतने में वह कामयाब रही।

आंध्र प्रदेश में पार्टी का मत प्रतिशत 2019 में 0.98 फीसदी रहा था जबकि इस बार उसके हिस्से 11.28 फीसदी वोट आए हैं। तेलंगाना में भी उसे उल्लेखनीय सफलता मिली है और उसका वोट शेयर 2019 के 19.65 फीसदी से बढ़कर 35.08 फीसदी हो गया है और सीटों की संख्या बढ़कर 8 हो गई है। केरल में बीजेपी का वोट प्रतिशत 2019 के 13 से बढ़कर 16.68 प्रतिशत हो गया है और



उसके हिस्से एक सीट भी आई है।

तमिलनाडु से बीजेपी को इस बार कोई सीट तो नहीं मिल पाई लेकिन 2019 के 3.66: के मुकाबले उसका वोट शेयर बढ़कर 11.24 फीसदी हो गया है। उल्लेखनीय है कि बीजेपी को 1999 में तीन सीटें जीतने के बावजूद तमिलनाडु में इस बार से कम वोट मिले थे। 2024 में बीजेपी के प्रदर्शन में यह भी उल्लेख नहीं रहा है कि पार्टी तमिलनाडु की 10 सीटों में दूसरे स्थान पर रही है। कर्नाटक में जरूर बीजेपी का मत प्रतिशत 2019 के 51.38 से घटकर 46.06 फीसदी हो गया लेकिन इसके बावजूद पार्टी 17 सीटें पाने में कामयाब रही।

वैसे तो बीजेपी ने उत्तर प्रदेश में हार के कारणों की छानबीन के लिए भारी भरकम टास्क फोर्स बनाने की घोषणा की है जो एक एक सीट पर जाकर इस बात की छानबीन करेगी कि भाजपा के वोट क्यों कम हुए और हार के कारण क्या रहे। लेकिन मोटे तौर पर जो कुछ बड़े कारण सामने आए हैं उनमें अनेक सीटों पर भाजपा के नेताओं का बड़बोला पन पराजय का एक बड़ा कारण रहा। लखीमपुर खीरी





,अयोध्या, प्रतापगढ़, रायबरेली, अमेठी व मोहनलालगंज आदि अनेक सीटें इसी कारण बीजेपी को गंवानी पड़ी। अनेक स्थानों पर पुराने उम्मीदवारों को तीसरी बार चुनाव लड़वाना भी बीजेपी को भारी पड़ा तो कई सीटों पर बाहरी उम्मीदवारों ने भी बीजेपी की उम्मीदों पर पानी फेरने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

कई सीटों पर पराजित नेता अब अपने विधायकों और स्थानीय पदाधिकारियों पर चुनाव में सहयोग न करने, निष्क्रिय रहने अथवा विरोध में काम करने का भी आरोप लगा रहे हैं। टिकट वितरण में भी कमियां रहीं। बड़े राजनीतिक सूत्र बताते हैं कि इस बार टिकट वितरण कुछ सर्वेक्षण एजेंसियों और कुछ खुफिया एजेंसियों की रिपोर्ट पर आधारित था। आलाकमान ने टिकट के दावेदारों के बारे में अपने खुद के मानदंड, पसंद और नापसंद तय कर लिए। जमीनी हकीकत पर एक शब्द भी नहीं सुना गया।

उत्तर प्रदेश में बीजेपी को सबसे बड़ा झटका फैजाबाद सीट पर लगा। अयोध्या फैजाबाद सीट में ही आती है और यहां इस साल 22 जनवरी को बड़ी ही धूमधाम से रामलला की स्थापना और राम मंदिर का उद्घाटन किया गया था। कयास ये लगाए जा रहे थे कि उत्तर प्रदेश ही नहीं पूरे देश में केवल राम मंदिर ही बीजेपी को रिकार्ड सीटों से जीत दिला देगा। लेकिन यहां तो खुद अयोध्या की सीट के ही लाले पड़ गए।

यह भी चर्चा है कि इस बार बीजेपी के दिग्गज नेताओं ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों और पार्टी के जमीनी कार्यकर्ताओं की अनदेखी की। जानकार कहते हैं कि 2014 और 2019 के चुनाव में आरएसएस ने जिस प्रकार जमीन पर उतरकर काम किया, इस बार ऐसा बिल्कुल भी नहीं था।

चुनाव के बीच में बीजेपी अध्यक्ष जेपी नड्डा के बयान ने भी संघ और भाजपा के रिश्तों में विवाद पैदा किया। संघ की सुस्ती भी बीजेपी को भारी पड़ी। पूर्वचल में सोशल मीडिया पर भी बीजेपी की पकड़ इस बार कमजोर रही। जबकि विपक्ष ने सोशल मीडिया का जमकर उपयोग किया। विपक्ष को 'बीजेपी 400 सीट लेकर संविधान बदल देगी और आरक्षण खत्म कर देगी' जैसा नरेंद्र फैंलाने में पूरी कामयाबी मिली जबकि बीजेपी इस सवाल पर अपना पक्ष लोगों के बीच पहुंचा ही नहीं पाई।

हरियाणा में भी बीजेपी को बड़ा झटका लगा। हरियाणा में लगातार 2 बार से बीजेपी सभी 10 सीटों पर जीत रही थी, लेकिन इस

बार आधी सीटों पर ही जीत हासिल कर पाई। कांग्रेस 5 सीटों पर कब्जा करने में सफल रही। हरियाणा में लोकसभा चुनाव से पहले बीजेपी ने सत्ता परिवर्तन किया था। साथ ही यहां चल रहा जननायक जनता पार्टी- जजपा गठजोड़ भी तोड़ दिया था। मतदाताओं को यह नागवार गुजरा।

25 सीटों वाले राजस्थान ने भी बीजेपी को चोट पहुंचाई है। वहां बीजेपी को 14, कांग्रेस को 8, सीपीआई-एम, राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी- आरएलटीपी और भारत आदिवासी पार्टी ने एक-एक सीट जीती।

उत्तर प्रदेश के बाद बीजेपी को सबसे बड़ा झटका महाराष्ट्र में लगा। यहां भाजपा ने 48 में से 9 सीटें जीतीं। उसके सहयोगी दल शिवसेना (शिंदे गुट) ने 7 और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी- एनसीपी ने एक सीट जीती। इससे राज्य में एनडीए की सीटों की संख्या तो 17 हो गई लेकिन 2019 में महाराष्ट्र में बीजेपी ने अपने दम पर ही 23 सीटें जीती थीं। इससे पता चलता है कि 2022 में शिवसेना और 2023 में एनसीपी का अलग होना मतदाताओं को रास नहीं आया।

राजनीतिक पंडितों का यह भी तर्क है कि शिक्षा और सरकारी नौकरियों में आरक्षण के लिए मराठा आंदोलन ने भी नतीजों को प्रभावित किया है। बीजेपी के खराब प्रदर्शन के पीछे एक और कारण यह हो सकता है कि पार्टी देश में बेरोजगारी के मुद्दे को हल करने में असमर्थ रही। बीजेपी के घोषणापत्र में महंगाई और बेरोजगारी का जिक्र तक नहीं था।

किसानों की कथित दुर्दशा, बेरोजगारी, कानून व्यवस्था और महंगाई ऐसे प्रमुख मुद्दे थे जिन्हें सत्तारूढ़ बीजेपी हल करने में विफल रही। इसके अलावा, कई पंडितों का मानना है कि बीजेपी ने अल्पकालिक अग्निवीर योजना को लेकर लोगों के गुस्से को ध्यान में नहीं रखा। ग्रामीण युवाओं ने इस सैन्य भर्ती योजना को लेकर अपना असंतोष वोट के जरिए व्यक्त किया। बीजेपी का अति आत्मविश्वास भी उसकी जीत के आड़े आया। इसके चलते बीजेपी के कार्यकर्ताओं में जोश और उत्साह की कमी बनी रही।

कुल मिलाकर मोदी के नेतृत्व में एनडीए सरकार ने कामकाज तो शुरू कर दिया है लेकिन यह तय है कि इस बार सरकार चलाने में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पिछले दो कार्यकालों की तरह हाथ खुला रखने का मौका तो नहीं मिलेगा। कुछ भी बड़ा करने से पहले उन्हें सहयोगी दलों को राजी करना



पड़ेगा। गठबंधन के सहयोगियों के इस दबाव के साथ-साथ उन्हें विपक्ष के हमले का भी सामना करना होगा जो कि इस बार अधिक सुनियोजित और तीखे होने वाले हैं।

आने वाले दिनों में अब चुनाव नतीजों पर तरह तरह के विश्लेषण होंगे। चिंतन मंथन होगा, आरोप प्रत्यारोपों का सिलसिला भी चलेगा। लेकिन इन सब के बीच दो टिप्पणियां गौर करने लायक हैं। पहली टिप्पणी आरएसएस के वरिष्ठ प्रचारक इंद्रेश कुमार की है, जिन्होंने जयपुर में कहा कि "रामराज का विधान देखिए, जिन्होंने रामभक्ति की मगर फिर अहंकार आ गया, उस पार्टी को सबसे बड़ी पार्टी तो बना दिया मगर जो शक्ति मिलनी चाहिए वह भगवान ने अहंकार के कारण रोक ली। जिनके अंदर राम के लिए अनास्था थी उन सबको मिल कर भी 234 से आगे जाने नहीं दिया।"

दूसरी टिप्पणी लखनऊ के ग्रामीण इलाके के सामान्य वोटर रमेश रावत की है, जो चुनाव नतीजे के बारे में कहते हैं कि मोदी जी और योगी जी को बीच में थोड़ी नींद आ गई थी, इस लिए झटका लग गया, अब फिर जाग गए हैं तो सब ठीक हो ही जाएगा।

मोदी समर्थकों की इस उम्मीद के साथ सरकार के भविष्य की संभावनाएं टिकी हैं और एनडीए सरकार के सामंजस्य की सफलता - विफलता पर टिकी हैं विपक्ष की सारी उम्मीदें।



# मौत का समागम



टी.बी. सिंह



पर हर तरफ चीत्कार, आहें, आंसू और रोने-धोने का ऐसा मंजर नजर आ रहा था कि सब बदहवास हो चले थे। किसी को कुछ समझ में नहीं आ रहा था।

इस बड़ी दुर्घटना के बाद खुलासे पर खुलासा होता चला आया है। अब नारायण साकार विश्व हरि उर्फ भोले बाबा पर हर तरफ

से उंगलियां उठने लगी हैं। बहुतों का मानना है कि इस बाबा के डोंग रचित सत्संग के चलते ही इतने बेगुनाह लोगों की जाने गई हैं। लेकिन ताज्जुब की बात है कि जो एफआईआर हुई है उसमें सूरज पाल जाटव उर्फ भोले बाबा का कहीं नाम तक नहीं है और यह अभी तक गिरफ्तारी की जद में नहीं आया है। जबकि भुक्तभोगियों के परिजनों के साथ ही साथ बसपा सुप्रीमो मायावती से लेकर अन्य तमाम नेताओं और सामाजिक संगठनों ने भोले बाबा की गिरफ्तारी की मांग कर डाली है।

यह जरूर हुआ है कि हाथरस कांड का मुख्य आरोपी देव प्रकाश मधुकर गिरफ्तार हो चुका है। लेकिन उसकी गिरफ्तारी को लेकर भी पुलिस प्रशासन और मधुकर के वकील का कथन अलग-अलग है। मधुकर नारायण हरि साकार उर्फ भोले बाबा का मुख्य सेवादर है। मधुकर के अधिवक्ता एपी सिंह का दावा है कि उसने खुद पुलिस के सामने आत्म समर्पण किया है। तो वहीं हाथरस के एसपी निपुण अग्रवाल का कहना है कि मधुकर को दिल्ली से गिरफ्तार किया गया। अधिवक्ता एपी सिंह का यह भी दावा है कि उन्होंने मधुकर को दिल्ली में यूपी पुलिस को सौंपा है। मधुकर पर एक लाख का इनाम भी रखा गया था। एपी सिंह उच्चतम न्यायालय के वकील हैं और वह सूरज पाल जाटव उर्फ नारायण साकार हरि उर्फ भोले बाबा का प्रतिनिधित्व करते हैं।

**हा** थरस में बीती दो जुलाई को जो भीषण और दिल को झकझोर देने वाला हादसा हुआ, उसकी कल्पना किसी ने नहीं की होगी। लाखों की भीड़ वहां आस्था के संग भोले बाबा का सत्संग सुनने को उमड़ी हुई थी। जब तक सत्संग चलता रहा तब तक तो सब सामान्य ही था। लेकिन जैसे ही सत्संग खत्म हुआ और बाबा जाने की तैयारी करने लगे त्यों ही उनके चरण रज को लेने की मची अफरा-तफरी में मौत का ऐसा तांडव मचा कि देखते-देखते 121 लाशें बिछ गईं। चारों तरफ हाहाकार मच गया।

यह हादसा इतना हृदय विदारक था कि यहां





## कौन हैं भोले बाबा

शूट-बूटधारी सूरज पाल जाटव उर्फ भोले बाबा आज भले ही चमत्कारिक बाबा के रूप में सामने हैं लेकिन वह मूलरूप से बहादुर नगर, पटियाली, एटा के रहने वाले हैं। पहले पुलिस में सिपाही थे। और उन पर उन सहित सात लोगों पर 18 मार्च 2000 को थाना शाहगंज में न केवल केस ही दर्ज हुआ था बल्कि गिरफ्तारी भी हुई थी।

सूरज पाल ने 24 साल पहले एक किशोरी को मलका चबूतरा में जिंदा करने की कोशिश की थी। पुलिस के पहुंचने पर वहां बवाल हुआ था।

1990 के दशक की बात है कि तब सूरज पाल का आना-जाना अर्जुननगर, शाहगंज में आयोजित होने वाले एक सत्संग से हो गया था। उसके बाद ही उन्होंने वीआरएस लेकर सत्संग शुरू कर दिया और धीरे-धीरे लोग उनसे जुड़ते गए।

प्रसिद्धि मिलने के बाद भोले बाबा के सत्संग को मानव मंगल मिलन सद्भावना समागम का नाम दिया गया। भोले बाबा की कथिल चमत्कारी बूटी की भी चर्चा ज्यादा है। यह एक प्रकार का पेय है जो भंडारे में भोले बाबा के अनुयायिकों को दिया जाता है।

1999 में पटियाली में भोले बाबा ने पहला आश्रम बनया। यह आश्रम इतना विशाल और बड़ा है कि इसमें हजारों भक्तों के रुकने और सत्संग में शामिल होने के इंतजाम हैं। ज्यों-ज्यों बाबा का बढ़ता गया अध्यात्म और चमत्कारों का साम्राज्य त्यों-त्यों बढ़ते गए भक्त और बनते गए आश्रम।

महज ढाई दशक में ही अध्यात्म के बहाने चमत्कार की यात्रा ने लाखों भक्तों के बीच सूरज पाल को लोगों ने भगवान विष्णु का स्वरूप बना लिया। आज भोले बाबा के मैनपुरी, राजस्थान, मध्य प्रदेश व अन्य स्थानों पर आश्रम बने हुए हैं। सेवादार भक्तों ने इस आश्रमों को भव्यता दी है।

बहादुर नगर में रहने वाली बाबा की बूढ़ी बहन सोनकली का कहना है कि जब वह नौकरी करते थे उसी दौरान उन्हें सिद्धि प्राप्त हो गई थी। वह चमत्कारिक रूप से अंगुली पर चक्र चलाते थे। लेकिन वही बाबा के ही निकटस्थ लोगों का कहना है कि वह कोई चमत्कारी नहीं हैं और न ही वह नाते-रिश्तेदारों से कोई लेना-देना रखते हैं।



मधुकर का जहां तक सवाल है यह मुख्य सेवादार न केवल भोले बाबा का अत्यंत करीबी और विश्वासपात्र ही है बल्कि वही बाबा के सत्संग के लिए भीड़ जुटाता था और चंदा भी इकट्ठा करता था। साथ ही भीड़ नियंत्रण, पंडाल की व्यवस्था, वाहन पार्किंग, बिजली आपूर्ति, सफाई समेत अन्य इंतजाम भी मुख्य सेवादार के निर्देशन में अन्य सेवादार करते हैं।

**घटना बेहद दुर्भाग्य पूर्ण, इसमें राजनीति बर्दाश्त नहीं : योगी**

इस दुर्घटना के अगले ही दिन मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ ने दुर्घटना स्थल का दौरा किया। साथ ही सरकार ने एक जांच आयोग का

गठन भी कर दिया। तीन सदस्यीय आयोग का अध्यक्ष रिटायर्ड न्यायाधीश बृजेश कुमार श्रीवास्तव को बनाया गया है। यह न्यायिक आयोग दो महीने में सरकार को अपनी रिपोर्ट देगा। मुख्यमंत्री ने एक बार फिर दोहराया कि दोषी किसी भी हाल में बख्शे नहीं जाएंगे। लेकिन उन्होंने साजिश की आशंका से भी इंकार नहीं किया। उन्होंने प्रशासनिक लापरवाही को देखते हुए अधिकारियों को फटकार भी लगाई और फिर जिला अस्पताल में जाकर पीड़ितों और घायलों का हालचाल जाना। उन्होंने कहा कि जो लोग निर्दोषों की जान से खेलते हैं उनकी जवाबदेही तय की जाएगी। सपा प्रमुख अखिलेश



यादव का नाम लिए बिना मुख्यमंत्री ने कहा कि सब को पता है कि संबंधित सज्जन (भोलेबाबा) की फोटो किसके साथ है और उनके राजनीतिक संपर्क किसके साथ हैं।

ताज्जुब की बात है कि जहां बाबा अभी तक बेदाग हैं, तो वहीं अफसर भी निर्दोष हैं। सारा गुनाह आयोजक सेवादार व निजी सुरक्षा कर्मियों का माना गया है। मुकदमें में भी सेवादारों द्वारा दंडों के बल पर भीड़ को जबरन रोकने का उल्लेख किया गया है। सेवादार कौन हैं, निजी सुरक्षा कर्मी कौन थे? इसकी जांच को पुलिस टीम गठित की गई है। चाहे आयोजन की अनुमति देने वाले एसडीएम की रिपोर्ट हो या फिर सिकंदराबाद थाने में दर्ज मुकदमा इन दोनों ही रिपोर्ट में भगदड़ के लिए इन्हें ही जिम्मेदार माना गया है। वहीं आयोजकों को इसके लिए दोषी ठहराया गया है कि उन्होंने पूर्व के सत्संगों में जुटने वाली भीड़ की स्थिति को छिपाते हुए केवल 80 हजार की भीड़ इकट्ठा होने की अनुमति मांगी थी। यह सही है कि 80 हजार से कहीं ज्यादा भीड़ जुटी और भगदड़ मची लेकिन सवाल यह है कि जब प्रशासन को यह पता था कि 80 हजार की भीड़ जुटने वाली है तो उस तरह का इंतजाम क्यों नहीं किया गया था। भीड़ तो दो लाख के करीब जा पहुंची थी। तब भी



किसी अफसर ने ध्यान नहीं दिया। इतनी भीड़ के लिए केवल 69 पुलिसकर्मियों की इयूटी लगाई गई थी लेकिन किसी डॉक्टर तक की इयूटी नहीं थी। केवल एक एम्बुलेंस और एक दमकल का ही इंतजाम था। कोई पुलिस अफसर और मजिस्ट्रेट नहीं था।

धीरे-धीरे सत्संग में मची भगदड़ में अपने को खोने वालों का गुस्सा अब मुखर रूप से बाबा के खिलाफ फूटने लगा है। जो श्रद्धालु बाबा के प्रति अगाध आस्था रखते थे अब वे ही बाबा

को निशाने पर रखने लगे हैं। उनका कहना है कि बाबा के कारण हमारा परिवार बर्बाद हुआ। उन्हें कड़ी सजा मिलनी चाहिए। पीड़ितों का हाल पूछने के लिए कांग्रेस व लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी भी पिलखना पहुंचे। उन्होंने कहा कि वे हाथरस प्रकरण को संसद में उठाते हुए पीड़ितों को न्याय दिलाएंगे।

## मैनपुरी का बिछवां आश्रम



हाथरस कांड के बाद बाबा के मैनपुरी के बिछवां आश्रम में छिपे होने की आशंका है। भगदड़ के मैनपुरी में ही उनकी अंतिम लोकेशन मिली थी। जहां तक बिछवां स्थित रामकुटीर

आश्रम की बात है तो यह भी अब सुर्खियों में आ चुका है। नौ बीघा में फैला यह आश्रम ऊंची दीवारों से घिरा है। चारों तरफ 12 फीट ऊंची दीवार है। आश्रम का मुख्य द्वार तो 25 फीट

ऊंचा है। इस आश्रम में ही बाबा के छिपे होने का संदेह है। लेकिन पुलिस-प्रशासन इसे नकारता है। कुछ कहते हैं कि बाबा इसी आश्रम में हाउस अरेस्ट हैं।



# नेपाल में राजनीतिक उथल-पुथल



रामसागर शुक्ल  
9839126463



पड़ोसी देश नेपाल में लगता है भगवान पशुपति नाथ कोई लीला कर रहे हैं। प्रधानमंत्री प्रचण्ड को त्यागपत्र देने के लिए 24 घंटे की समय सीमा खत्म होने के बाद गठबंधन सरकार की प्रमुख सहयोगी सी.पी.एन. एमाले के सभी मंत्रियों ने दो जुलाई 2024 को सामूहिक त्यागपत्र दे दिया। इसके साथ ही प्रचण्ड सरकार अल्पमत में आ गई है। फिलहाल प्रचण्ड ने त्यागपत्र देने से मना कर दिया है। परन्तु उनके सहयोगी दल एमाले के के.पी. शर्मा आली और नेपाली कांग्रेस के देउबा के बीच वैकल्पिक सरकार बनाने के लिए समझौता हो गया है। लिखित समझौते के अनुसार पहले के. पी. शर्मा ओली डेढ़ वर्ष तक प्रधानमंत्री रहेंगे बाद में नेपाली कांग्रेस के देउबा प्रधानमंत्री होंगे।

प्रचण्ड सरकार का गठन चार मार्च 2024 को हुआ था। सरकार में शामिल सी.पी.एन.

एमाले के सभी आठ मंत्रियों ने प्रधानमंत्री को अपना त्यागपत्र दे दिया है। प्रधानमंत्री प्रचण्ड अपने वर्तमान कार्यकाल में तीसरी बार विश्वास मत हासिल करने का प्रयास कर रहे हैं। परन्तु इस बार उन्हें सफलता मिलने की उम्मीद बिल्कुल न के बराबर है। नेपाल प्रतिनिधि सभा के सदस्यों की कुल



संख्या 275 है। गत चुनाव में नेपाली कांग्रेस को सबसे अधिक 80 सीटें मिली थीं जो बहुमत में काफी कम है। के.पी. शर्मा आली की पार्टी एमाले को 78 सीटें मिली थीं। नेपाल में पिछले सोलह वर्षों में कुल 13 सरकारों का गठन हुआ है।

2008 के बाद नेपाल में बनी सभी सरकारें दो या दो अधिक दलों की

गठबंधन सरकारें रही हैं। उनहत्तर वर्षीय प्रचण्ड तीन बार प्रधानमंत्री रह चुके हैं। जबकि 72 वर्षीय ओली दो बार प्रधानमंत्री रह चुके हैं। 78 वर्षीय देउबा पांच बार प्रधानमंत्री रह चुके हैं। नेपाल की राजनीति इन्हीं तीन नेताओं के बीच सत्ता संघर्ष है।

अगर देउबा और ओली की गठबंधन की सरकार बनती है तो उसका भविष्य कैसा होगा कुछ कहा नहीं जा सकता। ओली घोर वामपंथी हैं जबकि देउबा प्रजातंत्रवादी हैं। दोनों में घोर वैचारिक मतभेद है। अतः इस सरकार का भविष्य भी कुछ अच्छा नहीं है।

# नए कानून लाएंगे न्याय प्रक्रिया में तेजी



रोहित माहेश्वरी  
9450900065



## भा

रतीय न्याय संहिता, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता और भारतीय साक्ष्य संहिता एक जुलाई से लागू हो गए हैं। इसमें जीरो एफआइआर, ईएफआइआर का भी प्रावधान है। इससे आपराधिक मामलों में कमी आएगी। शीघ्र फैसला होने से आपराधिक प्रवृत्ति में कमी आएगी। नये तीन कानूनों ने भारतीय दंड संहिता 1860, दंड प्रक्रिया संहिता 1973 और भारतीय साक्ष्य अधिनियम 1872 का

स्थान लिया है। कानून की मौजूदगी समाज में आपराधिक प्रवृत्ति को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अपराधियों को दंड और सजा का डर भी होता है, जिससे वे कानूनी कार्यवाही से बचने का प्रयास करते हैं। इससे समाज में सुरक्षा और अनुशासन का माहौल बनता है।

केंद्र सरकार की ओर से कहा जा रहा है कि जहां ब्रिटिश काल में बने कानूनों का मकसद दंड देना था, वहीं नये कानूनों का मकसद नागरिकों को न्याय देना है। भारतीय न्याय संहिता में विवाह का प्रलोभन देकर छल के मामले में दस साल की सजा, किसी भी आधार पर माब लिंगिंग के मामले में आजीवन कारावास की सजा, लूटपाट व गिरोहबंदी के मामले में तीन साल की सजा का प्रावधान है।

नये कानून में आतंकवाद पर नियंत्रण के लिये भी प्रावधान हैं। वहीं किसी अपराध के मामले में तीन दिन में प्राथमिकी दर्ज की जाएगी तथा सुनवाई के बाद 45 दिन में फैसला देने की समय सीमा निर्धारित की गई है। वहीं एफआईआर अपराध व अपराधी ट्रैकिंग नेटवर्क

सिस्टम के जरिये दर्ज की जाएगी। व्यवस्था की गई है कि लोग थाने जाए बिना भी आनलाइन प्राथमिकी दर्ज कर सकें। साथ ही जीरो एफआईआर किसी भी थाने में दर्ज की जा सकेगी। आपराधिक कानूनों के डिजिटलीकरण और सरलीकरण से न्यायिक फैसलों में तेजी आएगी। पीड़ित व्यक्ति संचार माध्यमों के द्वारा किसी भी पुलिस थाने में आपराधिक मामला दर्ज करा सकता है, जिससे पुलिस अविलंब कार्रवाई कर सकती है। इससे पीड़ित व्यक्ति को न्याय मिलने में देरी नहीं होगी।

नये कानून वर्तमान चुनौतियों व जरूरतों के हिसाब से बनाये गये हैं। भारतीय दंड संहिता (आईपीसी, 1860) और इंडियन एक्ट्स एक्ट, 1872 ब्रिटिश राज की कानूनी व्यवस्थाएं थीं, जिन्हें हम आज भी ढो रहे थे। ये 'उपनिवेश की गुलामी' की याद दिलाती थीं। अब उनके स्थान पर पूर्णतः भारतीय संहिताएं होंगी। आपराधिक प्रक्रिया संहिता भी 1898 की विधिक व्यवस्था थी, लेकिन अब 'भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता' ने उसका स्थान लिया है। ये कानून

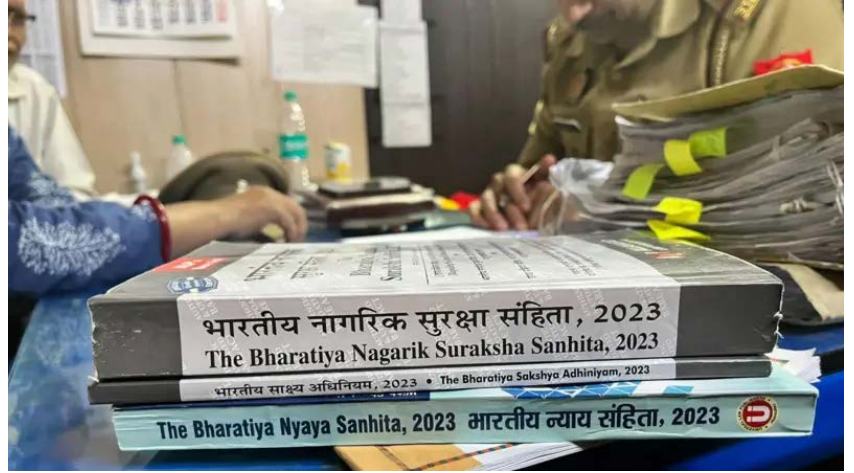


राज्य के साथ नागरिक के संबंधों और समझौतों को परिभाषित करते थे।

कानून का राज स्थापित करने के मद्देनजर बलपूर्वक भी व्यवस्था कार्रवाई करती थी। अर्थात् कानूनों का दुरुपयोग होता था। खासकर हमारे आपराधिक न्याय को लेकर कई सवाल और ढेरों आपत्तियां की जाती रही हैं। कानून और दृष्टि अप्रासंगिक हो चुके थे। जेलों में विचाराधीन कैदियों की संख्या असीमित हो गई है। पीडित पक्ष को इंसाफ के लिए जिंदगी भर जूतियां घिसनी पड़ती हैं, तब भी इंसाफ की उम्मीद अधूरी है। अदालतों में करोड़ों मामलों की भरमार है। यह बोझ बढ़ता जा रहा है। सब कुछ अनिश्चित और अपरिमित है, लिहाजा इन व्यवस्थाओं में सुधार की गुंजाइश लंबे अंतराल से महसूस की जा रही थी। इन तीनों नए कानूनों पर संसद की स्थायी समितियों में विमर्श किया गया होगा! केंद्रीय गृह मंत्रालय ने जुलाई, 2020 में विशेषज्ञों की एक समिति गठित की थी। उसने देश के नागरिकों के लिए एक विस्तृत प्रश्नावली तैयार की थी और उसे जारी भी किया गया। उस सूची में आपराधिक वैवाहिक बलात्कार, यौन अपराधों को लैंगिक तौर पर निरपेक्ष बनाना, इच्छा-मृत्यु और राजद्रोह सरीखे अपराधों पर नागरिकों के अभिमत लिए जाने थे।

अभिमत कितनी संख्या में आए, कितने राज्यों के किन-किन वर्गों के लोगों ने अपने अभिमत दिए, भारत सरकार ने उनका कोई खुलासा नहीं किया है। दरअसल संसद में ये विधेयक तब पारित किए गए, जब 146 सांसद निलंबित थे और सदनों में एकतरफा बहुमत था, लिहाजा ध्वनि-मत से विधेयक पारित किए गए। बाद में राष्ट्रपति के हस्ताक्षर से वे कानून बन गए, लेकिन इस संदर्भ में अब भी बहुत कुछ किया जाना शेष है। इन तीनों संहिताओं और अधिनियम पर देश का जनमत सामने आना भी शेष है, क्योंकि एक जुलाई से ही ये ऐतिहासिक परिवर्तन लागू किए गए हैं। अब 'प्राथमिकी' का नामकरण तक बदल दिया गया है। सजा के वैकल्पिक स्वरूप के तौर पर सामुदायिक सेवा का प्रावधान भी किया गया है। छोटे अपराधों के लिए 'समरी ट्रायल' को अनिवार्य किया गया है। वीडियो कान्फ्रेंस के जरिए ट्रायल अब सुनिश्चित होगा।

भीड़-हत्या और हिंसा, बाल विवाह



बलात्कार ऐसे अपराध हैं, जिनका समयबद्ध और गतिमय ट्रायल अनिवार्य होगा। अधिकतर सलाह-मशविरा, विमर्श कोरोना महामारी के दौरान किए गए, लिहाजा संहिताओं में कुछ बड़े परिवर्तन नहीं जोड़ पाए होंगे। कुछ राज्यों ने भी आपत्तियां की हैं और मांगें भी की हैं। मसलन-कानूनों के नाम अंग्रेजी में नहीं होने चाहिए। क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद करने में काफी वक्त लगता है।

कर्नाटक सरकार ने आपत्ति की है कि प्राथमिकी दर्ज करने से पहले प्राथमिक जांच के लिए पुलिस अफसर को 14 दिन का वक्त क्यों दिया जाना चाहिए? धारा 377 को बिल्कुल हटा देने पर भी सवाल किए गए हैं। यूपी कैबिनेट ने एक प्रस्ताव पारित किया है कि अंतरिम जमानत के प्रावधानों में कुछ अपवाद रखे जाएं और इस पर एक अध्यादेश लाया जाए। बहरहाल कुछ राज्यों के आग्रह तार्किक हैं और महत्वपूर्ण भी हैं।

इन कानूनों की अभी समीक्षा की जानी चाहिए। नये कानून के अनुसार मौत की सजा पाये अपराधी को खुद ही दया याचिका दायर करनी होगी, कोई संगठन या व्यक्ति ऐसा न कर सकेगा। दूसरी ओर कुछ कानून के जानकार नए आपराधिक कानूनों के लागू होने से उत्पन्न कई न्यायिक परेशानियों के सामने आने की बात कह रहे हैं। वे नये प्रावधानों पर गंभीर विचार-विमर्श की जरूरत बताते हैं। तो कुछ लोग अभिव्यक्ति के अतिक्रमण की बात कर रहे हैं। सवाल उठाये जा रहे हैं कि इन कानूनों के लागू होने से पहले हुए अपराधों की न्याय प्रक्रिया में विसंगति पैदा हो सकती है। सरकार को राज्यों की आपत्तियों और जमीनी दिक्कतों

को समझते हुए आवश्यक संशोधनों की दिशा में भी काम करना चाहिए।

नए आपराधिक कानून में विडियो क्लिप को प्रमुख मानने, आनलाइन शिकायत दर्ज कराने और त्वरित कार्रवाई को प्रमुखता दी गई है। इससे निश्चय ही अपराधियों में भय होगा और समाज में आपराधिक प्रवृत्ति कम होने की संभावना बढ़ेगी। बशर्ते कि इस कानून का पालन ईमानदारी से किया जाए।

जानकारों के मुताबिक आपराधिक प्रवृत्ति तभी कम होगी जब कानून का पालन करवाने वाली एजेंसियां उन्हें ईमानदारी से धरातल पर उतारने में अपने कर्तव्य का पालन करेंगी। कानून तो बहुत बन चुके हैं लेकिन मुकदमों के चलते चलते अपराधी या तो छूट जाता है या फिर जमानत पर बाहर आकर नए अपराध करने में लग जाता है। देश में नए आपराधिक कानून लागू करने का फैसला ऐतिहासिक है। ऐसे में पुलिस प्रशासन को नए आपराधिक कानून के बारे में आम लोगों को जागरूक करना चाहिए। अपराधियों को आसानी से जमानत नहीं मिले, इसका ध्यान विशेष रूप से रखना होगा। इसमें कोई दो राय नहीं है कि नए आपराधिक कानून लागू होने से समाज में अपराधों में निस्संदेह कमी आएगी बशर्ते कानून की पालना कार्रवाई जाए। प्रायः अपराधियों और पुलिसकर्मियों की मिलीभगत होती है, यह मिलीभगत टूटनी चाहिए। ऐसे में कानून नया हो चाहे पुराना कानून कागजी बनकर रह जाते हैं। पुलिस ईमानदारी से काम करेगी, तब ही अपराध में कमी संभव है, अन्यथा कोई बदलाव नहीं होगा।



# मोदी 3.0 सरकार पुरानों पर विश्वास, नयों पर भरोसा

• टी.बी. सिंह



**3**फरवरी अपने निर्णयों से चौंकाने वाले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस बार जब अपने तीसरे कार्यकाल के लिए अपनी मंत्रिमंडल टीम की घोषणा की तो इस बार उन्होंने अधिकांश अपने पुराने सहयोगियों को ही न केवल चुना बल्कि उनके विभागों में भी कोई फेरबदल न करते हुए यथास्थिति बरकरार रखी। ज्यादातर मंत्रियों को उनके पुराने विभाग ही नहीं मिले बल्कि यह भी साफ हो गया कि सहयोगी दलों का दबाव नहीं चला। गठबंधन (एनडीए) की सरकार के बावजूद लगभग सभी महत्वपूर्ण विभाग भाजपा नेताओं को ही मिले हैं।

पिछली बार की ही तरह इस बार भी राजनाथ सिंह नंबर दो की हैसियत में नजर आते हैं। क्योंकि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के शपथ लेने के बाद ही दूसरे नंबर पर शपथ लेने वाले राजनाथ सिंह ही थे। पिछली बार वह रक्षा मंत्रालय थे तो इस बार भी वह रक्षा मंत्रालय ही संभालेंगे। अमित शाह का वही पुराना गृह मंत्रालय है तो एस. जयशंकर और निर्मला सीमारमण क्रमशः विदेश व वित्तमंत्री के पद पर बरकरार हैं। नितिन गडकरी को भी फिर से सड़क परिवहन मंत्रालय मिला है।

यद्यपि हरदीप पुरी से शहरी विकास मंत्रालय वापस लेकर उन्हें उनके पुराने पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस का ही मंत्री बनाया गया है। ज्योतिरादित्य सिंधिया का कद जरूर कम हुआ है। उन्हें कम्युनिकेशन और उत्तर-पूर्व से जुड़ा मंत्रालय दिया गया है। वैसे अश्वनी वैष्णव का कद इस सरकार में और बढ़ा है। उन्हें

पहले की तरह रेल और आईटी मंत्रालय तो मिला ही है साथ ही इस बार उन्हें सूचना एवं प्रसारण मंत्री का भी उत्तरदायित्व सौंपा गया है। इस तरह अब उनके पास तीन अहम मंत्रालय हैं।

पिछली सरकार की ही तरह इस बार भी सीसीएस यानी कैबिनेट कमेटी ऑन सिक्वोरिटी में वही चेहरे हैं। प्रधानमंत्री के अलावा विदेश मंत्री, रक्षामंत्री, वित्तमंत्री और गृहमंत्री, सीसीएस का हिस्सा होते हैं और ये चारों सबसे पावरफुल मंत्रालय माने जाते हैं।

इसी तरह धर्मेन्द्र प्रधान, पियूष गोयल आदि को भी पुराना मंत्रालय ही मिला है। कुल मिलाकर जब 71 केन्द्रीय मंत्रियों ने शपथ ली तो उसमें लगभग तमाम पुराने नाम शामिल थे।

अपनी कैबिनेट में जिन प्रमुख भाजपा नेताओं को प्रधानमंत्री ने अपनी कैबिनेट में शामिल किया है उनमें मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर और भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा शामिल हैं। यद्यपि जेपी नड्डा मोदी के पहले कार्यकाल में स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री थे। अध्यक्ष बनने से पहले तक नड्डा यही मंत्रालय संभाल रहे थे। उन्हें इस बार भी वही जिम्मेदारी सौंपी गई है।

शिवराज सिंह चौहान को ग्रामीण विकास मंत्रालय और कृषि मंत्रालय का मंत्री बनाया गया है। जिस तरह शिवराज सिंह चौहान को दो-दो मंत्रालय दिए गए हैं उसी तरह मनोहर लाल का कद भी ऊंचा रखा गया है। मनोहर लाल ऊर्जा और शहरी विकास व आवासन जैसे अहम मंत्रालय का कार्य देखेंगे।

प्रधानमंत्री ने बिना किसी दबाव में अपने सहयोगी दलों के मंत्रियों को भी कुछ अहम मंत्रालय सौंपे हैं। मात्र एक सांसद होने के बावजूद जीतनराम मांझी को एमएसएमई जैसा महत्वपूर्ण मंत्रालय देना यह दर्शाता है कि वह

## पुराने बरकरार



## नई एंट्री



बिहार में एनडीए की जड़े मजबूत करना चाहते



हैं। इसी प्रकार दो सांसदों वाले जदएस के एचडी कुमार स्वामी को भारी उद्योग एवं इस्पात मंत्रालय दिया है। जबकि 16 सांसदों वाली टीडीपी के राममोहन नायडू को नागरिक उड्डयन सौंपा है। जबकि जदयू के राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह को पंचायती राज और चिराग पासवान को खाद्य प्रसंस्करण उद्योग की जिम्मेदारी दी गई है।

## कैबिनेट मंत्री

**नरेन्द्र मोदी**- प्रधानमंत्री, कार्मिक, लोक शिकायत एवं पेंशन, परमाणु ऊर्जा, अंतरिक्ष नीतिगत मुद्दे, ये सभी अन्य विभाग जो मंत्रियों को नहीं बांटे गए।

**राजनाथ सिंह**-रक्षा, **अमित शाह**-गृह और सहकारिता, **नितिन गडकरी**-सड़क परिवहन, राजमार्ग, **जेपी नड्डा** -स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, रसायन और उर्वरक। **शिवराज सिंह चौहान**-कृषि एवं किसान कल्याण, ग्रामीण

विकास। **निर्मला सीतारमण**- वित्त एवं कारपोरेट मामले। **एस. जयशंकर**-विदेश। **मनोहर लाल खट्टर**- ऊर्जा, आवास एवं शहरी विकास। **एचडी कुमार स्वामी**- भारी उद्योग एवं इस्पात। **पीयूष गोयल** -वाणिज्य एवं उद्योग, **धर्मेन्द्र प्रधान**-शिक्षा, **जीतनराम मांडी**-एमएसएमई। **राजीव रंजन उर्फ ललन सिंह**- पंचायती राज, मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी। **सर्वानंद सोनोवाल**-बंदरगाह, जहाजरानी एवं जलमार्ग। **वीरेन्द्र कुमार**-सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता। **राम मोहन नायडू**- नागरिक उड्डयन। **प्रहलाद जोशी**- उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं जन वितरण, नवीकरणीय एवं अक्षय ऊर्जा। **जुएल उरांव**- आदिवासी मामले। **गिरिराज सिंह**-कपड़ा। **अश्विनी वैष्णव**- रेल सूचना एवं प्रसारण, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी। **ज्योतिरादित्य सिंधिया**-दूरसंचार, पूर्वोत्तर विकास। **भूपेन्द्र यादव**-वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन। **गजेन्द्र सिंह शेखावत**-पर्यटन एवं संस्कृति। **अन्नपूर्णा देवी**- महिला एवं बाल विकास। **किरेन रिजिजू**- संसदीय कार्यमंत्री,

अल्पसंख्या मामले। **हरदीप सिंह पुरी**-पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस। **मनसुख मांडविया**- श्रम और रोजगार, खेल एवं युवा मामले। **जी. किशन रेड्डी**- कोयला एवं खनन। **चिराग पासवान**-खाद्य प्रसंस्करण उद्योग और **सी.आर. पाटिल** को जलशक्ति।

## स्वतंत्र प्रभार

**राव इंद्रजीत**- सांख्यिकी एवं कार्यक्रम क्रियान्वयन व योजना (स्वतंत्र), संस्कृति, **जितेन्द्र सिंह**- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी और पृथ्वी विज्ञान (स्वतंत्र), पीएमओ, कार्मिक, लोक शिकायतें एवं पेंशन, परमाणु ऊर्जा, अंतरिक्ष। **अर्जुन राम मेघवाल**- कानून एवं न्याय (स्वतंत्र), संसदीय कार्य। **प्रताप राव जाधव**- आयुष (स्वतंत्र), स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, **जयंत चौधरी**-कौशल विकास एवं उद्यमिता (स्वतंत्र), शिक्षा।

इसके अलावा मोदी की कुल 72 मंत्रिमंडल टीम में 36 राज्य मंत्री भी हैं।

# मोदी मंत्रिमंडल में सात महिलाएं



निर्मला सीतारमण



अन्नपूर्णा देवी



अनुप्रिया पटेल

मोदी मंत्रिमंडल में इस बार महिला मंत्रियों की भागीदारी बेहद कम नजर आयी है। मात्र सात महिलाओं को मंत्रिमंडल में जगह मिलने से इनकी भागीदारी दस फीसदी से भी कम (9.73) है। इस बार 72 महिलाएं विभिन्न दलों से चुनाव मैदान में थीं। पिछली बार 2019 में 6 महिलाओं को मंत्री बनने का सम्मान मिला था। जबकि 57 महिलाएं ही चुनाव लड़ी थीं और इस तरह उनका प्रतिशत 10.53 था। 2019 में शुरुआत में 57 सदस्यीय मंत्रिमंडल में महज 6 महिला मंत्री शामिल हुई थीं। जिनमें तीन कैबिनेट और तीन राज्य मंत्री थीं। हालांकि तब मंत्रिमंडल का आकार छोटा था। इसलिए प्रतिशत में हिस्सेदारी 10.53 प्रतिशत दर्ज की गई। जुलाई 2021 में जब कैबिनेट में फेरबदल हुआ तो मंत्रिमंडल का आकार बढ़कर 78 हो गया।

इससे पूर्व 2004 और 2009 में दोनों ही बार सात-सात महिला मंत्री बनायी गई थीं। यूपीए-2 में 2009 में 78 सदस्यीय कैबिनेट में सात महिला मंत्री शामिल की गई थीं। जिनमें तीन कैबिनेट और चार राज्य मंत्री थीं।

जबकि 2014 में सात महिलाएं मंत्रिमंडल में शामिल की गई थीं। जबकि 57 महिलाओं ने चुनाव लड़ा था।

इस बार 7 महिला मंत्रियों में दो को कैबिनेट (निर्मला सीतारमण और अन्नपूर्णा देवी) और पांच (अनुप्रिया पटेल, शोभा करंदलाजे, रक्षा खडसे, सावित्री ठाकुर और नीमूबेन बमभानिया) को राज्य मंत्री का दर्जा प्राप्त है।

64 वर्षीय निर्मला सीतारमण सबसे सीनियर और वरिष्ठ महिला हैं। वह राज्य सभा से सांसद हैं। उन्होंने 31 मई 2019 को

कारपोरेट मामलों के मंत्री और भारत के 28वें वित्तमंत्री के रूप में शपथ ली थी। वह भारत की दूसरी महिला रक्षामंत्री के तौर पर भी काम कर चुकी हैं। सबसे पहले 2014 में सीतारमण को नरेन्द्र मोदी के मंत्रिमंडल में आंध्र प्रदेश से एक जूनियर मंत्री के रूप में शामिल किया गया था। वह आंध्र प्रदेश से ही राज्य सभा सदस्य चुनी गई थी।

**अन्नपूर्णा देवी**- दूसरी बार सांसद बनने वाली अन्नपूर्णा देवी को इस बार कैबिनेट मंत्री के रूप में शामिल किया गया है। इससे पहले वह 2019 में झारखंड के कोडरमा से भाजपा के टिकट पर चुनाव लड़ी थीं और उन्हें तब शिक्षा राज्य मंत्री बनाया गया था। इस बार भी उन पर विश्वास जताते हुए दूसरी बार मंत्री पद की शपथ दिलाई गई है। वह भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्षों में से एक हैं। इससे पहले वह राष्ट्रीय जनता दल के अलावा आरजेडी में भी थीं। पति की मृत्यु के बाद वह राजनीति में उतरी थीं।

**अनुप्रिया पटेल**- अनुप्रिया पटेल उत्तर प्रदेश की राजनीति में एक युवा महिला चेहरा हैं। वे अपने पिता सोनेलाल की पार्टी अपना दल (एस) की राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं। अपना दल (एस) कोटे की राज्यमंत्री अनुप्रिया पटेल को स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण और रसायन एवं उर्वरक की जिम्मेदारी दी गई है। मोदी-2.0 सरकार में वह

वाणिज्य एवं उद्योग राज्यमंत्री थीं।



शोभा करंदलाजे

**शोभा करंदलाजे-** तीसरी बार संसद पहुंचने वाली शोभा करंदलाजे एक बार फिर मोदी मंत्रिमंडल में शामिल होने का सम्मान मिला है। मोदी सरकार 2.0 में वह कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय में राज्यमंत्री थीं। इस बार उन्हें एमएसएमई, श्रम एवं रोजगार मंत्रालय का राज्य मंत्री बनाया गया है।

57 वर्षीया शोभा सोशल वर्क से ग्रेजुएशन और समाज शास्त्र में एम.ए. की डिग्री हासिल कर चुकी हैं। उन्हें कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री यदुरप्पा के करीबी लोगों में गिना जाता है। वह पिछले 25 सालों से भाजपा से जुड़ी हुई हैं।

**सावित्री ठाकुर-** धार लोकसभा सीट से जीत हासिल करने वाली आदिवासी नेता अब सदन और केन्द्रीय मंत्रिमंडल में मध्य प्रदेश के मालवा



सावित्री ठाकुर

## सबसे युवा महिला मंत्री हैं रक्षा खडसे

महाराष्ट्र बीजेपी के कद्दावर नेता एकनाथ खडसे की बहू रक्षा खडसे मोदी मंत्रिमंडल में शामिल सबसे युवा महिला मंत्री हैं। वह 37 वर्ष की हैं।

मोदी मंत्रिमंडल में वह इस तरह दूसरी सबसे युवा मंत्री हैं। उनसे पहले के.राममोहन नायडू (36 वर्षीय) सबसे युवा हैं। रक्षा महाराष्ट्र की रावेर सीट से लगातार तीसरी बार सांसद बनने में सफल रही हैं। जब वह पहली बार सांसद बनीं थीं तब वह महज 26 साल की ही थीं। उन्होंने अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत सरपंच बनकर की थी।

पहली बार 2014 के आम चुनाव में उन्होंने राकांपा के मनीष जैन को 3 लाख से ज्यादा मतों से हराया था। तब वह 26 साल के उनके चलते 16वीं लोकसभा की सबसे युवा सांसद बनीं थीं। 2019 में भी उन्होंने यहीं से जीत हासिल की थी।

इस बार के आम चुनाव में उन्होंने शरद पवार के नेतृत्व वाली राकांपा के श्रीराम पाटिल को ढाई लाख ज्यादा मतों के अंतर से हराया है। उन्हें युवा खेलकूद मंत्रालय में राज्यमंत्री बनाया गया है।



और निमाण क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करेगी। 46 वर्षीया सावित्री ठाकुर मध्य प्रदेश में भाजपा का आदिवासी चेहरा हैं। उन्होंने पंचायत चुनाव से लेकर पार्लियामेंट तक का सफर तय किया है। 2004 से 2009 तक जिला पंचायत रहीं।

2014 में पहली बार सांसद बनीं थीं और एक बार फिर से सांसद बनीं हैं। उन्हें महिला एवं बाल कल्याण का राज्य मंत्री बनाया गया है।

### नीमूबेन बमभानिया-

नीमूबेन गुजरात से भावनगर से सांसद हैं। वह राजनेता होने के साथ ही साथ एक्टिविस्ट भी हैं। लोकसभा चुनाव लड़ने से पहले वह मेयर थीं। भावनगर से तत्कालीन सांसद भारतीय बेन शायल का टिकट काटकर उन्हें प्रत्याशी बनाया गया था। उन्होंने अपने प्रतिद्वंदी को साढ़े चार

लाख वोटों से हराया है। उन्होंने विज्ञान विषय में स्नातक करने के साथ ही बी.एड भी कर रखा है। उन्हें उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय का राज्य मंत्री का पदभार दिया गया है। □



नीमूबेन बमभानिया

## संसद में फिल्मी सितारों का ग्लैमर भी दिखेगा

एक बार फिर लोकसभा में कई फिल्मी सितारों का ग्लैमर दिखायी देगा। महिला फिल्मी सितारों में जहां हेमा मालिनी और कंगना रनौत प्रमुख हैं। हेमा जहां मथुरा सीट से लगातार तीसरी बार संसद पहुंची हैं तो वहीं कंगना रनौत ने हिमाचल प्रदेश के मंडी संसदीय क्षेत्र से प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष प्रतिभा सिंह के बेटे विक्रमादित्य को पराजित कर लोकसभा पहुंची हैं।

चर्चित टीवी धारावाहिक रामायण में राम की भूमिका निभाने वाले अभिनेता अरुण गोविल जहां मेरठ से जीते हैं तो वही भोजपुरी अभिनेता

और गायक मनोज तिवारी लगातार तीसरी बार उत्तर पूर्वी दिल्ली सीट से कांग्रेस के कन्हैया कुमार को पराजित कर संसद पहुंचे हैं। भोजपुरी फिल्मों के चर्चित कलाकार रवि किशन दूसरी बार गोरखपुर से सांसद बने हैं। उन्होंने सपा की काजल निषाद को पराजित किया।

त्रिशूर सीट से अभिनेता सुरेश गोपी न केवल केरल से एक मात्र भाजपा के विजयी उम्मीदवार होकर दिल्ली पहुंचे हैं बल्कि उन्हें ईनाम के तौर पर राज्य मंत्री के पद भी नवाजा



गया है। जबकि पश्चिम बंगाल की आसनसोल संसदीय सीट से टीएमसी के उम्मीदवार के तौर पर दिग्गज अभिनेता एक बार फिर संसद पहुंचने में सफल रहे हैं।



# इस बार अयोध्या में अवधेश प्रसाद

## सबसे बड़ी जीत



डॉ. महेश शर्मा

गौतमबुद्धनगर की लोकसभा सीट पर इस बार भी डॉ. महेश शर्मा ने न केवल अपना दबदबा ही कामय रखा बल्कि अपना ही पिछला रिकॉर्ड तोड़ते हुए प्रदेश में सर्वाधिक बड़ी जीत का श्रेय पाया। वैसे महेश शर्मा ने हैट्रिक लगाकर अपनी जीत का सिलसिला कायम रखा है। इस बार उन्हें कुल 8,57,829 वोट मिले। जबकि उनके प्रतिद्वंदी सपा प्रत्याशी डॉ. महेन्द्र सिंह नागर को महज 2,98,357 मत ही मिले। इस तरह उन्होंने 5,59,472 मतों के अंतर से प्रदेश में सर्वाधिक बड़ी जीत का एक बार फिर सम्मान हासिल किया।

उल्लेखनीय है कि वर्ष 2008 में नए परिशीमन के बाद गौतमबुद्धनगर लोकसभा सीट पर पहला लोकसभा चुनाव 2009 में हुआ था। उस समय इस सीट को खुर्जा लोकसभा के नाम से जाना जाता था।

इसी तरह दूसरी सबसे बड़ी जीत कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने रायबरेली सीट से हासिल की। उन्होंने 3,90,030 वोटों के अंतर से भाजपा के वीरेन्द्र प्रताप सिंह को हराया। राहुल गांधी न केवल रायबरेली से ही जीते बल्कि केरल के वायनाड से भी 3,64,422 वोटों से बहुत बड़ी जीत दर्ज की।

भाजपा के अतुल गर्ग ने गाजियाबाद सीट 3,36,965 वोटों के अंतर से कांग्रेस की डॉली शर्मा को हराकर जीता।

महिला प्रत्याशियों की बात करें तो महिलाओं में सबसे बड़ी जीत का सम्मान हेमा मालिनी को जाता है। भाजपा उम्मीदवार के रूप में उन्होंने मथुरा सीट से 2,93,407 वोटों के अंतर से कांग्रेस के मुकेश धनगर को हराया।

## सबसे उम्र दराज सांसद



इस बार उत्तर प्रदेश में लोकसभा चुनाव जीतने वाले दस प्रत्याशी ऐसे हैं जिनकी उम्र 70 साल या उससे अधिक है। इनमें भी चर्चित अयोध्या की फैजाबाद सीट से चुनाव जीतने वाले सपा के अवधेश प्रसाद सबसे उम्र दराज सांसद हैं। 79 साल के अवधेश प्रसाद सपा के संस्थापक सदस्यों में रहे हैं। वह 9 बार के विधायक भी हैं। जबकि प्रदेश सरकार में 6 बार मंत्री भी रहे हैं।

दलित समुदाय से संबंध रखने वाले अवधेश प्रसाद ने 1977 में जनता पार्टी के साथ अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत की थी। अयोध्या के सोहावल से विधानसभा के लिए अपना पहला चुनाव जीता। इसके बाद 1985 से 2022 के बीच विधानसभा के लिए आठ और चुनाव जीते। विधायक के तौर पर यह उनका नौवां कार्यकाल था। सर्वाधिक चर्चित सीटों में से एक फैजाबाद सीट पर जीत का इतिहास बनाने वाले अवधेश ने नारा दिया था - 'मथुरा न काशी, इस बार अयोध्या में पासी'।

## सबसे युवा सांसद

सपा सुप्रीमो अखिलेश यादव का इस बार विदेश से आए युवाओं को सियासी पिच पर लाने का प्रयोग बड़ा सफल रहा। उन्होंने इस चुनाव में कई ऐसे युवाओं को टिकट दिया जिनके पास कोई राजनीतिक अनुभव नहीं था। यद्यपि उनकी परिवर्ति राजनीतिक परिवारों में जरूर हुई है।



पुष्पेन्द्र सरोज

यूपी की कौशांबी इस बार सबसे चर्चित सीटों में शामिल रही। इस सीट पर सपा ने पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव और पूर्व कैबिनेट मंत्री इंद्रजीत सरोज के बेटे पुष्पेन्द्र सरोज को टिकट दिया था। पुष्पेन्द्र ने भाजपा प्रत्याशी विनोद सोनकर को 1,03,944 वोटों से हराकर न केवल अपने पिता की हार का बदला ही लिया बल्कि वह यूपी के ही नहीं बल्कि देश के सबसे कम उम्र के सांसद बनने का सम्मान भी हासिल कर चुके हैं।

वह बीते एक मार्च को ही 25 साल के हुए हैं। उन्होंने लंदन क्वीन मैरी यूनिवर्सिटी से एकाउंटिंग एण्ड मैनेजमेंट में ग्रेजुएट की डिग्री हासिल कर चुके हैं। उनकी उम्र 25 साल तीन महीने हैं।

इसी तरह मछलीशहर सीट पर सफलता हासिल करने वाली प्रिया सरोज भी 25 वर्ष की ही हैं। पिछले साल नवंबर में ही उन्होंने 25 साल की उम्र पूरी की है। वह सपा के पूर्व सांसद और वर्तमान विधायक तूफानी सरोज की बेटी हैं। □

## इस बार 5 मुस्लिम सांसद

1. इमरान मसूद, सहारनपुर, कांग्रेस। 2. इकरा हसन, कैराना, सपा। 3. अफजाल अंसारी, गाजीपुर सपा। 4. मोहिबुल्लास, रामपुर, सपा। 5. जिया-उर-रहमान बर्क, संभल, सपा।

## 9 में से 7 केन्द्रीय मंत्री हारे जीते

1. नरेन्द्र मोदी (भाजपा), वाराणसी। कुल वोट- 6,12,970. जीत का अंतर- 152, 513. 2. राजनाथ सिंह (भाजपा), लखनऊ। कुल वोट- 6,12,709. जीत का अंतर- 1.35 लाख से अधिक।

## हारे

1. कौशल किशोर, (भाजपा), मोहनलालगंज। कुल वोट- 5,65,58. हार का अंतर- 70,292. 2. महेन्द्र नाथ पांडेय (भाजपा), चंदौली। कुल वोट- 4,52,911. हार का अंतर - 21565. 3. संजीव बालियान (भाजपा), मुजफ्फरनगर। कुल वोट- 4,34,981. हार का अंतर- 24,672. 4. स्मृति ईरानी (भाजपा), अमेटी। कुल वोट- 3,72,032. हार का अंतर- 1,67,196. 5. भानु प्रताप (भाजपा), जालौन। कुल वोट- 4,75,780. हार का अंतर- 53,898. 6. अजय मिश्रा उर्फ टेनी (भाजपा), खीरी। कुल वोट- 5,23,036. हार का अंतर- 34,329. 7. निरंजन ज्योति (भाजपा), फतेहपुर। कुल वोट- 4,63,853. हार का अंतर - 33,199.

## सांसद दंपति की एकमात्र जोड़ी अखिलेश-डिंपल



इस बार के लोकसभा चुनाव में सपा ने कई कीर्तिमान बनाए। इनमें एक दिलचस्प रिकॉर्ड यह भी बना है कि जब इस बार सदन चल रही होगी और सभी सांसद बैठे होंगे तो उत्तर प्रदेश से अखिलेश यादव और डिंपल यादव के रूप में पति-पत्नी की एकलौती जोड़ी सभी के आकर्षण का केन्द्र होगी।

अखिलेश जहां अपने परंपरागत सीट कन्नौज से जीते हैं तो वहीं उनकी पत्नी डिंपल यादव मैनपुरी से सांसद बनी हैं। डिंपल सपा के सांसदों में सबसे ज्यादा वोटों के अंतर से भी जीती हैं। जबकि अखिलेश यादव की जीत का अंतर पार्टी में दूसरे नंबर पर है। यह भी एक अनोखा रिकॉर्ड है। वैसे सपा सुप्रीमो अखिलेश यादव और डिंपल यादव 2019 में भी सांसदी का चुनाव लड़े थे। जहां अखिलेश आजमगढ़ से विजयी रहे तो वहीं डिंपल कन्नौज से पराजित हुई थीं। यद्यपि सपा संस्थापक मुलायम सिंह यादव के निधन के बाद मैनपुरी सीट खाली हुई थी तो डिंपल वहां से उप चुनाव जीतकर सदन में पहुंची थीं। परिस्थिति वश पहले ही अखिलेश मैनपुरी की ही करखल सीट से विधायक निर्वाचित हो गए थे। फिर नतीजों के बाद विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष की जिम्मेदारी निभाने के लिए उन्होंने लोकसभा सीट आजमगढ़ सीट से इस्तीफा दे दिया था। उनके इस्तीफे के करीब 10 महीने बाद डिंपल उप चुनाव जीतकर लोकसभा पहुंची थीं। इस तरह

17वीं लोकसभा का सदस्य निर्वाचित होकर भी

साथ में सदस्य नहीं रहे थे।

**तीन भाईयों के साथ सदन में बैठेंगे अखिलेश**

इस बार यादव परिवार का बड़ा कुनबा सदन में नजर आएगा। संभवतः यह भी एक तरह का अलग रिकॉर्ड होगा। जब चार भाई एक साथ संसद में नजर आएंगे। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव जहां कन्नौज से जीतकर दिल्ली पहुंचे हैं तो उनके अन्य भाई आजमगढ़ से धर्मेन्द्र यादव, फिरोजाबाद से अक्षय यादव और बदायूं से आदित्य यादव भी सांसद चुने गए हैं। यानी अखिलेश के तीन भाई भी सांसद चुने गए हैं। मतलब अखिलेश के तीन भाई भी संसद में साथ में बैठेंगे।

इसके अलावा डिंपल को भी जोड़ लिया जाए तो यादव परिवार के कुल चार सदस्य संसद में नजर आएंगे।

यहीं नहीं अखिलेश के चाचा प्रोफेसर राम गोपाल यादव भी सांसद हैं। लेकिन वह राज्य सभा में हैं। इस तरह कुल मिलाकर देखा जाए तो इस बार दोनों संसद को मिलाकर यादव परिवार के पांच सदस्य नजर आएंगे। यह भी एक तरह का अनोखा नजारा होगा। □

### पप्पू यादव और उनकी पत्नी रंजीता एन रहीं दो बार रहे साथ-साथ सांसद

अखिलेश-डिंपल की पति-पत्नी की देश भर में पहले ही 18वीं लोकसभा में एक मात्र जोड़ी है। लेकिन इससे पहले बिहार के पप्पू यादव और उनकी पत्नी रंजीता रंजन दो बार साथ-साथ सांसद रहे। पति-पत्नी की यह जोड़ी 2004 और 2014 में दो बार एक साथ चुनाव जीतकर लोकसभा पहुंचे थे। हालांकि दोनों अलग-अलग पार्टी से लड़कर चुनाव जीते थे।

इस बार भी पप्पू यादव निर्दलीय चुनाव जीतकर लोकसभा पहुंचे हैं। जबकि उनकी पत्नी रंजीता रंजन कांग्रेस से राज्यसभा की सांसद हैं। दोनों जोड़ी के तौर पर तीसरी बार संसद में होंगे। लेकिन दोनों अलग-अलग सदन का हिस्सा होंगे।







# नेहरू से आगे मोदी



**वै**

से तो जवाहर लाल नेहरू के बाद एक ही संसदीय सीट से लगातार तीन बार जीत कर प्रधानमंत्री बनने वाले दूसरे नेता नरेन्द्र मोदी हैं लेकिन जहां तक सर्वाधिक लंबे समय तक प्रधानमंत्री बने रहने की बात है तो नेहरू से आगे मोदी हैं।

नेहरू तो केवल प्रधानमंत्री ही रहे लेकिन नरेन्द्र मोदी गुजरात के मुख्यमंत्री रहने के बाद प्रधानमंत्री भी बने और इस तरह उनका अब तक का कुल कार्यकाल 8,277 दिनों का है। जबकि जवाहर लाल नेहरू का प्रधानमंत्रित्व काल 6,130 दिनों का ही रहा। इसके बाद इंदिरा गांधी का नंबर आता है। इंदिरा गांधी 5,829 दिनों तक प्रधानमंत्री रहीं। मनमोहन सिंह प्रधानमंत्री की कुर्सी पर 3,656 दिनों तक बैठे रहे। मोरार जी देसाई 2,511 और अटल बिहारी वाजपेयी 2,272 दिनों तक प्रधानमंत्री रहे।

भले ही नेहरू की तरह मोदी भी तीसरी बार देश के प्रधानमंत्री बने हैं लेकिन यहां एक अंतर है। नेहरू जहां तीनों बार पूर्ण बहुमत के साथ प्रधानमंत्री बने थे तो वहीं नरेन्द्र मोदी तीसरी बार गठबंधन के प्रधानमंत्री बने हैं।

## मोदी रहे सबसे बड़े लड़ैया

तीसरी बार सत्ता हासिल करने के लिए मोदी ने दिन-रात एक कर दिया था। भीषण

तपिश के बीच भी उन्होंने धुआंधार प्रचार कार्य किया। गर्मी से बेपरवाह मोदी ने 75 दिनों के चुनावी अभियान में 206 जनसभाएं व रोड शो करके अपना ये पुराना रिकॉर्ड तोड़ दिया। पिछली बार उन्होंने 142 रैलियां की थीं।

उनका सर्वाधिक फोकस उत्तर प्रदेश, बंगाल समेत चार राज्यों की 210 सीटों पर थी। चुनाव अभियान में सबसे ज्यादा समय उन्होंने यूपी, बिहार, पश्चिम बंगाल और महाराष्ट्र को दिया। इन राज्यों में लोकसभा की कुल 210 सीटें हैं। इन चार राज्यों में उन्होंने 92 जनसभाओं को संबोधित किया। इस दौरान

उन्होंने 80 मीडिया संस्थानों के प्रतिनिधियों को इंटरव्यू भी दिया। उन्होंने यूपी में अपने 57 दिनों के चुनावी अभियान के दौरान 24 रैलियों और पांच रोड शो को

अंजाम देने के साथ कार्यकर्ता संवाद के जरिए 70 से अधिक लोकसभा क्षेत्र को कवर किया। नरेन्द्र मोदी ने चुनाव प्रचार अभियान की शुरुआत अधिसूचना जारी होने से एक दिन पहले ही दक्षिण भारत से कर दी थी। जबकि उनकी अंतिम जनसभा 30 मई को पंजाब के होशियार पुर में हुई। □

## नेहरू बनाम मोदी

### जवाहर लाल नेहरू

प्रधानमंत्री  
15 अगस्त 1947 से 27 मई 1964  
पहला कार्यकाल  
इलाहाबाद-जौनपुर : 38.7 %  
कांग्रेस - 364 सीटें, 45 % वोट  
दूसरा कार्यकाल  
फूलपुर : 36.9 %  
कांग्रेस : 371 सीटें, 47.8 % वोट  
तीसरा कार्यकाल  
फूलपुर : 61.6 %  
कांग्रेस : 361 सीटें, 44.7 % वोट

### नरेन्द्र मोदी

प्रधानमंत्री  
26 मई 2014 से  
पहला कार्यकाल  
बड़ोदरा : 72.8 %, वाराणसी : 56.4 %  
बीजेपी : 282 सीटें, 31.3 %  
दूसरा कार्यकाल  
वाराणसी : 63.6 %  
बीजेपी : 303 सीटें, 31.3 % वोट  
तीसरा कार्यकाल  
वाराणसी : 54.2 %  
बीजेपी : 240 सीटें, 36.6 %

# सम्मान



**IAS Shailendra K. Singh**



**IAS Gyanendra Singh**



**IAS Dr. R. K. Prajapati**



**IAS Vijay Kumar**



**PCS Bachchu Singh**



**PCS Girish Dwivedi**



# सम्मान



**Ex. IAS Ram Bahadur**



**Ex. IAS Rakesh K. Singh**



**PCS Alok Kumar**



**Ram Prasad Mishra**  
**Zila Adhyaksh BJP, Amethi**



**Ex. PCS Raj Mangal**

# केन्द्र में कम नहीं U P का रूतबा



राजनाथ सिंह



हरदीप पुरी

• टी.बी. सिंह



**भ**ले ही लोकसभा चुनाव में भाजपा को उत्तर प्रदेश में अपेक्षित सीटें नहीं मिलीं और पिछले आम चुनाव के मुकाबले बेहद कम सीटें आयीं। बावजूद इसके इस बार भी केन्द्र में यूपी का रूतबा बरकरार ही नजर आता है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपनी सरकार में जिन 71 नेताओं को मंत्री पद सौंपा है उसमें से यूपी के 11 चेहरे शामिल किए गए हैं। इसमें चार नए मंत्री हैं। पिछली सरकार में प्रधानमंत्री सहित यूपी से 15 मंत्री थे। राजनाथ सिंह का कद जहां बरकरार है वहीं हरदीप पुरी, पंकज चौधरी, अनुप्रिया पटेल, प्रो. एस.पी. सिंह बघेल और बी.एल. वर्मा को पुनः मौका मिला है। वहीं पांच बार के सांसद कीर्ति वर्धन सिंह को पहली बार मंत्री मंडल में शामिल किया गया है।

इसी तरह चुनाव घोषित होने के ऐन पहले इंडिया गठबंधन को छोड़कर एनडीए में शामिल होने वाले रालोद प्रमुख जयंत चौधरी का राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) का ईनाम मिला। वे अंग्रेजी में पद की शपथ लेने वाले यूपी के एक मात्र मंत्री रहे। बांस गांव (सुरक्षित) सीट से जीते

कमलेश पासवान को भी राज्य मंत्री बनाया गया है। मेनका व वरुण गांधी की परंपरागत सीट माने जाने वाली पीलीभीत से जीत दर्ज करने वाले जितिन प्रसाद को राज्य मंत्री बनाकर उनका भी कद बढ़ाया गया है। हरदीप पुरी के साथ ही बी.एल. वर्मा को मंत्रि परिषद में बतौर राज्यसभा सांसद स्थान मिला है।

मोदी-3 मंत्रिपरिषद में यूपी से दो कैबिनेट मंत्री राजनाथ सिंह और हरदीप पुरी हैं तो वहीं एक राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) के रूप में रालोद के जयंत चौधरी शामिल किए गए हैं। जबकि अन्य आठ को राज्यमंत्री का पदभार मिला है। इसमें कई दूसरी बार भी मंत्री बनने में सफल रहे हैं।

उल्लेखनीय बात तो यह है कि राजनाथ सिंह को पुनः रक्षा मंत्रालय का भार सौंपा गया है। पिछली बार भी रक्षामंत्री थे। लखनऊ से लगातार तीसरी बार सांसद चुने गए राजनाथ सिंह लगातार तीसरी बार भी कैबिनेट मंत्री बनाए गए हैं। मोदी के पहले कार्यकाल में वह गृहमंत्री थे। 1977 में मिर्जापुर से विधानसभा सदस्य वे पहली बार बने थे।

1991 में जब भाजपा की पहली बार राज्य में सरकार बनी तो उन्हें शिक्षामंत्री बनया गया था। 2000 में वह यूपी के मुख्यमंत्री बने।



जयंत चौधरी

यही नहीं वह दो बार भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष भी रहे हैं।

इसी तरह हरदीप पुरी को पेट्रोलियम व प्राकृतिक गैस की जिम्मेदारी पिछली बार की ही तरह सौंपी गई है। यद्यपि उनसे आवास और शहरी मंत्रालय विभाग से हटा दिया गया है। पिछली बार यह मंत्रालय भी देख रहे थे।

यद्यपि हरदीप पुरी यूपी के नहीं रहने वाले हैं पर वह यूपी से ही राज्य सभा सांसद हैं। 2014 में भाजपा में शामिल होने वाले पुरी 2020 से यूपी से राज्यसभा के सदस्य हैं।

हरदीप पुरी राजनेता बनने से पहले राजनयिक थे। वह 1974 बैच के भारतीय विदेश सेवा के अधिकारी रहे हैं। 39 साल के कैरियर के दौरान वह विदेश और रक्षा मंत्रालयों में वरिष्ठ पदों के साथ यूके और ब्राजील में राजनयिक स्तर के पदों पर रहे।

यूपी से एक मात्र राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार)

## घटी महिला मंत्रियों की भागीदारी



अनुप्रिया पटेल

यूपी में भाजपा की सीटें घटीं तो मोदी मंत्रिमंडल में जहां प्रदेश की हिस्सेदारी पर असर पड़ा, वहीं महिला मंत्रियों की भागीदारी भी कम हुई है।

इस बार सिर्फ एक महिला सांसद अनुप्रिया पटेल को मंत्री बनाया गया है। जबकि इस बार यूपी से एनडीए की सिर्फ दो ही महिला सांसद चुनी गयीं हैं। अनुप्रिया के अलावा हेमा मालिनी ही अपनी सीट बचाने में सफल रहीं।

उल्लेखनीय हैं कि मोदी-2.0 में यूपी से तीन महिला सांसदों को मंत्री बनने का अवसर मिला था। स्मृति ईरानी व साध्वी निरंजन ज्योति के अलावा मेनका गांधी, रेखा वर्मा, नीलम सोनकर, राजरानी रावत सभी चुनाव हार गईं हैं। पिछली सरकार में अनुप्रिया के अलावा स्मृति ईरानी और साध्वी निरंजन ज्योति, मोदी मंत्रिमंडल का हिस्सा थीं।





की.एल. वर्मा



पंकज चौधरी



एस.पी. सिंह बघेल

जयंत चौधरी को भी अहम जिम्मेदारी मोदी ने सौंपी है। एनडीए का हिस्सा बने रालोद के राष्ट्रीय अध्यक्ष जयंत चौधरी को कौशल विकास एवं उद्यमिता विकास की जिम्मेदारी तो मिली ही है इसके अलावा उन्हें शिक्षा विभाग का राज्य मंत्री भी बनाया गया है।

लंदन से ग्रेजुएट जयंत चौधरी राज्यसभा सांसद हैं। जयंत चौधरी के पिता अजीत सिंह चार सरकारों में मंत्री थे। जबकि उनके दादा चौधरी चरण सिंह पूर्व प्रधानमंत्री रहे। जयंत के पिता अजीत सिंह 2011 से 2014 तक नागरिक उड्डयन मंत्री रहे। इस तरह इस राजनीतिक परिवार के हिस्से में दस सालों बाद मंत्री पद आया है। रालोद के जयंत चौधरी को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी देकर जाट मतदाताओं में उनकी पकड़ को और मजबूत करने का प्रयास किया गया है।

अपना दल (एस) की राष्ट्रीय अध्यक्ष अनुप्रिया पटेल तीसरी बार सांसद बनकर तीसरी बार मंत्री भी बनी हैं। दिल्ली के लेडी श्रीराम कॉलेज से पढ़ाई कर चुकी अनुप्रिया पहली बार वाराणसी के रोहनिया से विधायक चुनी गई थीं। 2014 की लोकसभा चुनाव में वह मिर्जापुर से पहली बार सांसद बनीं थीं।

मोदी-2 सरकार में वह वाणिज्य एवं उद्योग राज्यमंत्री थीं। जबकि इस बार उन्हें स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण और रसायन और उर्वरक की जिम्मेदारी दी गई है।

मोदी-2 सरकार में स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्यमंत्री रहे एस.पी. सिंह बघेल को

इस बार मत्स्य, पशुपालन व डेयरी और पंचायती राज की जिम्मेदारी मिली है। पिछली बार की तरह वह इस बार भी आगरा से सांसद बने हैं। जबकि 1998 में वह पहली बार सपा से सांसद बने थे। बघेल पूर्व में मुख्यमंत्री मुलायम सिंह के सुरक्षाकर्मी थे। बाद में बसपा ने उन्हें राज्यसभा भेजा था। वह 2017 में टुण्डला से विधायक बनकर योगी सरकार में कैबिनेट मंत्री भी बने थे।

महराजगंज से विजयी पंकज चौधरी सातवीं बार लोकसभा पहुंचे हैं। वह भाजपा का कुर्मी चेहरा हैं। मोदी-2.0 में 2022 विधानसभा चुनाव से पहले हुए कैबिनेट विस्तार में उन्हें वित्त राज्य मंत्री बनाया गया था। इस बार भी उन्हें वित्त राज्यमंत्री की जिम्मेदारी पुनः सौंपी गई है।

पंकज चौधरी की ही तरह बी.एल. वर्मा भी लगातार दूसरी बार राज्य मंत्री बने हैं। सन 2020 में पार्टी ने उन्हें पहली बार राज्यसभा भेजा था। मोदी सरकार -2.0 में हुए कैबिनेट विस्तार में उन्हें सहकारिता राज्यमंत्री बनाया गया था। इस बार उन्हें उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय के साथ ही सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय की भी जिम्मेदारी मिली है।

दो बार यूपीए सरकार में मंत्री पद का भार संभाल चुके जितिन प्रसाद को इस बार मोदी सरकार में वाणिज्य एवं उद्योग के साथ इलेक्ट्रॉनिक्स एवं इंफार्मेशन टेक्नोलॉजी जैसे महत्वपूर्ण मंत्रालय का राज्य मंत्री बनाया गया है। जितिन प्रसाद 2004 में पहली बार कांग्रेस

के टिकट पर शाहजहांपुर से सांसद चुने गए थे। यूपीए सरकार 1.0 में जितिन को स्टील मंत्रालय का राज्यमंत्री और 2009 में यूपीए सरकार-2.0 में पेट्रोलियम राज्यमंत्री बनाया गया था।

जितिन ने 2021 में कांग्रेस छोड़कर बीजेपी ज्वाइन की थी और उन्हें 2022 में योगी सरकार बनने के बाद कैबिनेट मंत्री बनाया गया था। इस बार वह वरुण गांधी की जगह पीलीभीत से भाजपा के प्रत्याशी थे।

कमलेश पासवान गोरखपुर की बांसगांव सीट से चौथी बार सांसद चुने गए हैं। वह पहली बार 2002 में सपा के टिकट पर गोरखपुर की मानीराम सीट से विधायक बने थे। जबकि 2009 में पहली बार भाजपा के टिकट पर बांसगांव सीट से लोकसभा पहुंचे थे। तब से वह लगातार बांसगांव से सांसद हैं। उन्हें ग्रामीण विकास मंत्रालय का राज्य मंत्री बनाया गया है।

गोंडा के लोकसभा सीट से सांसद बने कीर्ति वर्धन सिंह को पहली बार कैबिनेट में जगह मिली है। वह 1998 में सपा के टिकट पर पहली बार संसद पहुंचे थे। तब उन्होंने बृजभूषण शरण सिंह को हराया था। 2004 में सपा से दोबारा सांसद बने थे। 2014 में भाजपा से जुड़कर वह गोंडा से लगातार सांसद हैं। इनके पिता आनंद सिंह भी गोंडा से सांसद रह चुके हैं। उन्हें पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के साथ ही विदेश मंत्रालय का भी राज्यमंत्री बनाया गया है। □



कमलेश पासवान



कीर्तिवर्धन सिंह



जितिन प्रसाद



# महिलाएं पहुंची संसद

**18**

वी लोकसभा में उत्तर प्रदेश की महिला सांसद पिछली बार के मुकाबले कम ही नजर आएंगी। क्योंकि केवल सात महिलाएं ही जीत हासिल की हैं। जबकि

पिछले लोकसभा में प्रदेश की 11 महिलाओं का प्रतिनिधित्व था। इनमें से अकेले आठ महिलाएं भाजपा की थीं। अमेठी से स्मृति ईरानी, सुल्तानपुर से मेनका गांधी, प्रयागराज से रीता बहुगुणा जोशी, फतेहपुर से साध्वी निरंजन ज्योति, धौरहरा से रेखा अरुण वर्मा, मथुरा से हेमा मालिनी, बदायूं से संघमिश्रा मौर्य और फूलपुर सीट से केशरी देवी पटेल ने भाजपा के टिकट पर विजय श्री प्राप्त की थी। वहीं कांग्रेस से सोनिया गांधी (रायबरेली), सपा से डिंपल यादव (मैनपुरी) और अपना दल की अनुप्रिया पटेल (मिर्जापुर) से जीतकर संसद पहुंची थीं।

इस बार संसद पहुंची यूपी की सात महिलाओं में से अकेले सपा से पांच हैं। भाजपा से एक महिला दिल्ली पहुंची हैं। इनमें सर्वाधिक चर्चित हेमा मालिनी हैं। बॉलीवुड अभिनेत्री हेमा मालिनी तीसरी बार मथुरा सीट से भाजपा उम्मीदवार के रूप में जीती हैं। उनकी जीत का अंतर 2,93,407 का रहा।

उल्लेखनीय है कि इस बार यूपी से लोकसभा में 15 करोड़ से अधिक संपत्ति वाले 28 धनाढ्य संसद पहुंचे हैं और इसमें सबसे ज्यादा धनवान हेमा मालिनी ही हैं। उनकी कुल संपत्ति लगभग 278 करोड़ रुपये है।

सपा की प्रिया सरोज सबसे कम उम्र में महिला सांसद बनी हैं। उनकी उम्र 25 वर्ष है। पूर्व सांसद एवं वर्तमान में केराकत से सपा विधायक तूफानी सरोज की बेटी प्रिया दिल्ली यूनिवर्सिटी से पढ़ी हैं और वह पेशे से वकील हैं। इसी तरह समाजवादी पार्टी की कैराना सीट जीतने वाली 29 वर्षीया इकरा हसन की भी चर्चा है। इकरा ने कुल 5,80,013 वोट प्राप्त कर भाजपा के प्रदीप कुमार को 69 हजार वोटों



रुचि वीरा



कृष्णा देवी



इकरा हसन



प्रिया सरोज



अनुप्रिया पटेल



हेमा मालिनी

## यादव परिवार में डिंपल सब पर भारी



वैसे तो अखिलेश यादव की अगुवाई में सपा ने इन चुनावों में ऐतिहासिक जीत हासिल की है पर जहां तक यादव परिवार की बात है तो उनकी पत्नी डिंपल यादव सब पर भारी पड़ी हैं।

उन्होंने मैनपुरी सीट से कुल 5,98,526 वोट हासिल किए और इस तरह अपने प्रतिद्वंद्वी भाजपा के प्रदेश सरकार में पर्यटन

मंत्री जयवीर सिंह को 2,21,639 वोटों के अंतर से पराजित कर चौथी बार लोकसभा पहुंची। यह यादव परिवार के सभी सदस्यों में ही न केवल बड़ी जीत है बल्कि पार्टी के दूसरे निर्वाचित सांसद भी इतने बड़े अंतर से नहीं जीते।

वह दूसरी बार मैनपुरी से सांसद बनी हैं। पिछली बार 2022 में हुए उप चुनाव में भी वह जीती थीं। इस तरह वह इतने बड़े अंतर न तो पार्टी के दूसरे सांसद जीते हैं न ही परिवार को कोई अन्य सदस्य। इस तरह पार्टी और परिवार दोनों में ही डिंपल का नाम सबसे बड़े विजेता के रूप में उभरा है।



से पराजित किया है।

जहां तक इकरा की बात है तो दिल्ली यूनिवर्सिटी के लेडी श्रीराम कॉलेज से ग्रेजुएशन करने के बाद उन्होंने यूनिवर्सिटी आफ लंदन से मास्टर्स किया है। वह कैराना से लगातार तीसरी बार मौजूदा विधायक चौधरी नाहिद हसन की छोटी बहन हैं। इससे पहले इकरा जिला पंचायत सदस्य का चुनाव भी लड़ चुकी थीं। पर उन्हें असफलता हाथ लगी थी। इकरा का पूरा परिवार ही राजनीति से जुड़ा हुआ है। दादा अख्तर हसन जहां इसी सीट से सांसद रहे वहीं इकरा के पिता मुनव्वर हसन भी इसी सीट से संसद पहुंचे थे। यही नहीं पिता मुनव्वर की मृत्यु के बाद उनकी मां तबस्सुम हसन भी कैराना लोकसभा का सीट दो बार जीतने में सफल रहीं।

सपा से चुनाव जीतने वाली अन्य महिलाएं रुचि वीरा और कृष्णा देवी पटेल हैं। रुचि वीरा ने मुरादाबाद सीट से जीत दर्ज की है। एक बार विधायक रह चुकीं रुचि वीरा ने महात्मा ज्योतिबाफुले रुहेलखंड यूनिवर्सिटी से ग्रेजुएशन कर रखा है।

बांदा से सपा ने कृष्णा देव शिव शंकर पटेल पर भरोसा जताया था। वह उम्मीद पर खरी उतरतीं। उन्होंने बीजेपी के आर.के. सिंह पटेल को 71,210 वोटों से हराया है।

अपना दल की अध्यक्ष अनुप्रिया पटेल ने अपनी मिर्जापुर सीट को बरकरार ही नहीं रखा बल्कि वह लगातार तीसरी बार संसद पहुंचने में सफल रहीं हैं। लेकिन इस बार उन्हें कांटे के मुकाबले के बाद जीत मिली है।



हारी

**स्मृति ईरानी** - भाजपा (अमेठी)  
वोट मिले- 3,72,032,  
हार का अंतर - 1,67,196



**मेनका गांधी** - भाजपा (सुल्तानपुर)  
वोट मिले - 3,99,667,  
हार का अंतर- 43,174

## इस बार चुनी गईं 73 महिला सांसद

इस बार के लोकसभा चुनाव में कुल 73 महिलाओं ने जीत का अध्याय लिखा है। इनमें से सबसे अधिक 11 महिलाएं पश्चिम बंगाल से चुनी गईं हैं। इस बार कुल 797 महिलाओं ने चुनाव लड़ा था। सबसे अधिक 69 महिलाओं को भाजपा ने और 41 को कांग्रेस ने टिकट दिया था। चुनाव आयोग के आंकड़ों के अनुसार भाजपा की 30 महिलाएं जीतीं। जबकि कांग्रेस से 14, तृणमूल कांग्रेस की 11, सपा की पांच, द्रमुक की 3 और जदयू एवं लोजपा (रामविलास) की 2-2 महिला उम्मीदवार जीती हैं।

वैसे यह संख्या 2019 में चुनी गई महिला सांसदों से 5 कम है। पिछले चुनाव में 78 महिलाओं ने जीत दर्ज की थी।

### जीतने वाली चर्चित महिलाएं

भाजपा से जहां हेमा मालिनी, तृणमूल से महुआ मोईत्रा, एनसीपी से सुप्रिया सूले, सपा से डिंपल यादव ने जहां अपनी सीटें सुरक्षित रखीं तो वहीं भाजपा की कंगना रनौत, बांसुरी स्वराज और राजद की मीसा भारती पहली बार लोकसभा के लिए चुनी गईं।



**कंगना रनौत**-भाजपा (मंडी)  
वोट मिले - 5,37,022  
74,755 वोटों से जीतीं।  
मशहूर अभिनेत्री।



**महुआ मोईत्रा**- टीएमसी (कृष्णा नगर)  
वोट मिले- 6,28,789,  
56,705 वोटों से जीतीं।  
पैसे लेकर सवाल पूछने पर  
गई थी सांसदी।



**बांसुरी स्वराज**-भाजपा (नई दिल्ली)  
वोट मिले- 4,53,185,  
78,370 वोटों से जीतीं।  
दिवंगत विदेश मंत्री सुषमा  
स्वराज की बेटी।



**सुप्रिया सूले**- राकांपा (बारामती)  
वोट मिले- 6,34,336,  
1,26,447 वोटों से जीतीं।  
शरद पवार की बेटी चौथी  
बार भी जीतीं।



**रचना बनर्जी**- टीएमसी (हुगली)  
वोट मिले- 7,02,744,  
76,853 वोटों से जीतीं।  
टीवी और फिल्म अभिनेत्री,  
उद्यमी।



**शताब्दी राय**- टीएमसी (वीरभूमि)  
वोट मिले - 7,17,961,  
1,97,650 वोटों से जीतीं।  
अभिनेत्री, यहीं से तीन  
बार सांसद रहीं हैं।



**मीसा भारती**- राजद (पाटलीपुत्र)  
वोट मिले - 6,04,202,  
82,154 वोटों से जीतीं।



**माधवी लता**- भाजपा (हैदराबाद) वोट मिले-  
3,23,894, 3,38,087  
वोटों से हारीं।



**नवनीत राणा**- भाजपा (अमरावती) वोट मिले-  
5,06,540, 19,731 वोट  
से हारीं। पिछली बार  
निर्दलीय जीती थीं।

# अमेठी के रण में K L विजेता



● लाल मोहम्मद राईन  
9415664060



**के**

न्द्रीय मंत्री स्मृति ईरानी के अमेठी से हारने को लेकर राजनैतिक गलियारों में चर्चा का दौर अभी थमा नहीं है, लोग कयास नहीं लगा पा रहे हैं कि जिस अमेठी में उन्होंने राहुल गांधी को शिकस्त देकर इतनी सुखियाँ बटोरी, उसके अगले ही कार्यकाल में ऐसा क्या हो गया कि, पहली बार चुनाव मैदान में उतरे, के. एल. शर्मा से 1,67,196 मतों के भारी अन्तर से शिकस्त खा गई।

स्मृति ईरानी अमेठी में पिछले 10 साल से

सक्रिय हैं, हार जीत के बावजूद वे अमेठी के लोगो से बराबर जुड़ी रहीं, जबकि गांधी परिवार के करीबी के. एल. शर्मा पिछले 10 साल से अमेठी छोड़कर रायबरेली में सांसद सोनिया गांधी के प्रतिनिधि के तौर पर कार्यभार देख रहे हैं, चुनाव के अंतिम समय में उन्होंने अमेठी से पर्चा भरकर स्मृति ईरानी को इतना पीछे छोड़ दिया कि देश की राजनैतिक पटल पर सुखियाँ बन गया।

दिलचस्प बात ये है कि स्मृति ईरानी ने अमेठी में इतनी बड़ी मात खा गई, जबकि राजनीति की सारी गोटियाँ उनके पाले में थीं, संसदीय क्षेत्र के तिलोई, सलोन और जगदीशपुर से

बीजेपी के विधायक हैं, जिसमें तिलाई विधायक मयंकेश्वर सिंह योगी सरकार में मंत्री भी हैं। अमेठी और गौरीगंज विधायक अभी राज्यसभा चुनाव में अंतरात्मा की आवाज सुनकर बीजेपी के साथ हैं। इसके अलावा जिला पंचायत अध्यक्ष, पूर्व विधायक, पूर्व मंत्री, वर्तमान एमएलसी, पांचो नगर पालिका अध्यक्षों के साथ लगभग प्रधान, जिला व क्षेत्र पंचायत सदस्यों की भारी भरकम फौज भी बीजेपी के साथ हैं। बावजूद इसके पांचो विधान सभा क्षेत्रों में स्मृति ईरानी के हार का अंतर काबिले गौर है। राजनीति के सारे दाँव, पेंच होते हुए स्मृति ईरानी सलोन से 52,318 अमेठी से 46,689 गौरीगंज से 33,378 तिलोई से 18,118 व जगदीशपुर से 15,423 मतों से मात खा गई।

अमेठी में स्मृति ईरानी के हारने के तमाम सबब हो सकते हैं, लेकिन सबसे बड़ा सबब उनके अपने ही बन गए। नए-नए चेहरों को अधिक तरजीह देने से पुराने कार्यकर्ताओं में निराशा के भाव जगने लगे। अमेठी विधान सभा में डा० संजय सिंह की हार और संजय गांधी हास्पिटल की तालाबंदी के लिए भी स्मृति ईरानी को अप्रत्यक्ष रूप से जिम्मेदार माना गया। एक क्षेत्रीय पत्रकार के सवाल करने पर उसका

नौकरी से जाना और एक जनप्रतिनिधि के सवाल पर उसका नजरबंद होना भी स्मृति ईरानी के खिलाफ बने माहौल को हवा देता गया। जिसका परिणाम करारी हार के रूप में सामने आया।

अमेठी में स्मृति ईरानी की हार में महंगाई, बेरोजगारी आदि समस्याओं को दरकिनार कर जिलाध्यक्ष श्री राम प्रसाद मिश्रा कहते हैं कांग्रेस के झूठे प्रचार, संविधान बचाने, आरक्षण हटाने, और 8500 हर महीने महिलाओं के खाते में आने के चक्कर में दलित और महिला वोटों का बीजेपी से खिसक जाना ही हार का प्रमुख कारण रहा है। उन्होंने आगे कहा कि जब तक संविधान रहेगा, लोकतंत्र रहेगा, तब तक आरक्षण भी रहेगा।

पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी के समय से अमेठी से जुड़े नवनिर्वाचित कांग्रेस सांसद श्री के.एल. शर्मा ने अपनी जीत को अमेठी की जनता की जीत बताया है। उन्होंने अमेठी के लोगों के साथ गांधी परिवार, और महा गठबंधन के प्रति आभार जताते हुए कहा कि जीत के रूप में उन्हें जो जिम्मेवारी दी गई है, उसे पूरा करने का भरसक प्रयास करूंगा। बहुत ही सरल और सहज स्वभाव के धनी सांसद के. एल. शर्मा ने कंधे से कंधा मिलाकर चलने वाले कार्यकर्ताओं की मेहनत और लगन की भी सराहना की। सबको साथ लेकर चलने वाले, बहुत ही मिलनसार, अमेठी की हर समस्याओं से वाकिफ, सांसद के. एल. शर्मा पर लोगों को पूरा भरोसा है कि वे अमेठी के चहुंमुखी विकास के लिए अपना महत्पूर्ण योगदान देंगे। □





मुख्यमंत्री का अधिकारियों को निर्देश

# संवाद-समन्वय से जीतें जनता का विश्वास



## • मीमंडे

**मु**

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने राज्य की कानून व्यवस्था की समीक्षा कर अफसरों को जनता का दिल जीतने का मंत्र दिया।

उन्होंने कहा कि बेहतर कानून व्यवस्था के लिए जनता का विश्वास जीतें और जनप्रतिनिधियों से भी मार्गदर्शन लें। इसके लिए संवाद और समन्वय जरूरी है।

उन्होंने पर्व-त्योहारों को लेकर साफ और शख्त लफ्जों में कहा कि सरकार सभी की आस्था का सम्मान करती है। लेकिन कोई भी नई परंपरा शुरू नहीं होने दी जाएगी।

मुख्यमंत्री ने वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए शासन स्तर के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ पुलिस कमिश्नरों, मंडलायुक्तों, जिलाधिकारियों व पुलिस कप्तानों के शासन-प्रशासन को 24 घंटे सभी दिन एक्टिव मोड में रहने की आवश्यकता है।

योगी ने कहा कि ऐसी कोई घटना न हो। जिससे दूसरे धर्म के लोगों की भावनाएं आहत हों। शरारती तत्व दूसरे सम्प्रदाय के लोगों को अनावश्यक उत्तेजित करने की कुत्सित कोशिश कर सकते हैं। ऐसे मामलों पर नजर रखें। संवेदनशील क्षेत्रों में अतिरिक्त पुलिस बल की तैनाती की जाए। हर दिन सायंकाल पुलिस बल फुट पैट्रोलिंग करे।

## हूटर बजा तो थाने पर होगी कार्रवाई

सीएम ने कहा, वीआईपी कल्चर को किसी भी दशा में स्वीकार नहीं किया जाएगा। इसलिए वाहन सरकारी हो या प्राइवेट, प्रेशर हॉर्न अथवा हूटर नहीं बजना चाहिए। इसे तत्काल उतरवाएं। वीआईपी फ्लीट में सबसे आगे की गाड़ी में एक तय ध्वनि सीमा के साथ ही हूटर बजे। अन्य किसी वाहन में नहीं। इसे स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए कि यदि कहीं से भी प्रेशर हॉर्न अथवा हूटर बजने की सूचना मिली तो संबंधित

मंडल स्तर पर अधिकारी अपने क्षेत्रों के धर्मगुरुओं से संवाद बनाएं ताकि शांति-सौहार्द का माहौल बना रहे।

## कार्रवाई माफिया के खिलाफ, गरीब के खिलाफ नहीं

उन्होंने कहा कि हमारी कार्रवाई माफिया के खिलाफ है, गरीब के नहीं। यह कार्रवाई और तेज की जाए। अधिकारी, जनप्रतिनिधियों से संवाद बनाएं। उनकी अपेक्षाओं-समस्याओं को सुनें। मेरिट पर निराकरण करें। भ्रष्टाचार के खिलाफ



थाने पर कार्रवाई होनी तय है।

गर्मी के मददेनजर गांव, नगर, महानगर, कहीं भी रोस्ट्रिंग के नाम पर अनावश्यक 'पावर कट' न हो। थाना, सर्किल, जिला, रेंज, जोन,

- अफसरों को दिया जनता का दिल जीतने का मंत्र। कहा बेहतर कानून व्यवस्था के लिए जीतें जनता का विश्वास।
- आस्था का पूरा सम्मान, लेकिन नई परंपरा को प्रोत्साहन नहीं।
- वीआईपी कल्चर स्वीकार नहीं, वाहन सरकारी हो या प्राइवेट न बजे हूटर।
- हमारी कार्रवाई माफिया के खिलाफ, गरीब के नहीं।
- रोस्ट्रिंग के नाम अनावश्यक पावर कट न हो।

ब्लॉक हो या जिला मुख्यालय या फिर सचिवालय, कहीं भी किसी भी स्तर पर यदि अनैतिक लेन-देन की शिकायत प्राप्त हुई तो इसमें संलिप्त के खिलाफ कार्रवाई होनी तय है।

## डोभाल और मिश्रा की कुर्सी बरकरार

राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) के पद पर अजीत डोभाल एक बार फिर यह जिम्मेदारी निभाएंगे। इस तरह उन्हें लगातार तीसरी बार इस पद पर नामित किया गया है।

इसी तरह पूर्व आईएएस अधिकारी पी.के. मिश्रा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रधान सचिव के पद पर बने रहेंगे। कार्मिक मंत्रालय के आदेशानुसार दोनों की नियुक्ति 10 जून 2024 से प्रभावी है। डोभाल और मिश्रा की नियुक्ति प्रधानमंत्री के कार्यकाल तक या अगले आदेश तक बरकरार रहेगी। इन्हें कैबिनेट मंत्री का दर्जा दिया गया है।

अजीत डोभाल जहां केरल कॉर्डर के 1968 बैच के आईपीएस अधिकारी हैं तो



मिश्रा गुजरात कॉर्डर के 1972 बैच के पूर्व आईएएस हैं।

इसी के साथ पूर्व आईएएस अधिकारी अमित खरे और तरुण कपूर को फिर प्रधानमंत्री का सलाहकार नियुक्त किया गया है। खरे झारखंड कॉर्डर के 1985 बैच के जबकि कपूर हिमाचल प्रदेश कॉर्डर के 1987 बैच के अधिकारी हैं। इनकी नियुक्ति भी 10 जून से प्रभावी मानी जा रही है।

## IAS मो. मुस्तफा का VRS मंजूर

प्रदेश सरकार ने 1995 बैच के आईएएस मो. मुस्तफा को स्वैच्छिक सेवा निवृत्त (वीआरएस) दे दिया है। केन्द्रीय कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग (डीओपीटी) की मंजूरी के बाद नियुक्ति एवं कार्मिक विभाग ने मो. मुस्तफा को वीआरएस देने का आदेश जारी कर दिया।

मो. मुस्तफा वर्तमान समय में प्रमुख सचिव सार्वजनिक उद्यम पद पर तैनात थे। उन्हें सितंबर 2021 में प्रमुख सचिव सार्वजनिक उद्यम बनाया गया था।



## अभिषेक सिंह पुनः सेवा में आने को बेकरार

चर्चित आईएएस अफसर रहे अभिषेक सिंह का पुनः सेवा में लौटने का इरादा फिलहाल परवान नहीं चढ़ सका है। पुनः आईएएस सेवा में आने के लिए अभिषेक सिंह ने राज्य सरकार को पत्र लिखा था। लेकिन योगी सरकार ने उनके नौकरी में दोबारा आने के प्रयास पर ब्रेक लगा दिया है।

राज्य सरकार ने केन्द्र सरकार के डीओपीटी (डिपार्टमेंट ऑफ पर्सनल एण्ड ट्रेनिंग) द्वारा अभिषेक सिंह की सेवा में पुनः वापसी के प्रार्थना पत्र पर मांगी गई आख्य व सहमति को अस्वीकृत कर अपनी संस्तुति भेज दी है। अभिषेक सिंह आईएएस की नौकरी से इस्तीफा

देकर यूपी के जौनपुर जिले से लोकसभा चुनाव में उतरने की तैयारी में थे। वैसे उनके संबंध में अंतिम फैसला डीओपीटी ही लेगा।

यूपी एससी की परीक्षा में 94वीं रैंक हासिल कर अभिषेक सिंह 2011 में आईएएस की सेवा में आए थे। उन्हें 2013 में झंसी में बतौर ज्वाइंट मजिस्ट्रेट तैनाती मिली थी। इसके बाद वह यूपी के साथ-साथ दिल्ली में भी प्रतिनियुक्ति पर तैनात रहे। 2022 में उन्हें गुजरात विधानसभा चुनाव में प्रेक्षक बनाकर भेजा गया था। लेकिन एक विवादास्पद फोटो वायरल होने पर चुनाव आयोग ने उन्हें नियुक्ति से हटा दिया था। इसके बाद उन्हें संस्पेंड होना

पड़ा था। संस्पेंसन के बाद अक्टूबर 2023 में उन्होंने इस्तीफा दे दिया था। जिसे मार्च 2024 में स्वीकार कर लिया गया था। अभिषेक सिंह फिल्मी दुनिया में भी सक्रिय रहे हैं और गायन के क्षेत्र में भी वह नजर आ चुके हैं। वह आईएएस दुर्गाशक्ति नागपाल के पति हैं।



## PCS (J) 2022 मेंस की सभी कापियां फिर जचेंगी

पीसीएस (जे) मुख्य परीक्षा 2022 की सभी 18042 उत्तर पुस्तिकाओं की लोक सेवा आयोग फिर से जांच करेगा। इसकी प्रक्रिया प्रारंभ भी हो चुकी है।

पीसीएस (जे) अभ्यर्थी श्रवण पांडेय की याचिका पर हाईकोर्ट में दाखिल हलफनामे में इसकी जानकारी लोक सेवा आयोग ने दी है। आयोग ने यह माना है कि पूरी सतर्कता के बावजूद गलती हो सकती है। यदि ऐसा हुआ तो इस गलती को सुधारा जाएगा।

इससे पहले कोर्ट ने श्रवण पांडेय के 6

प्रश्न पत्रों की उत्तर पुस्तिकाएं कोर्ट के समक्ष प्रस्तुत का लोक सेवा आयोग को निर्देश दिया था। याची का आरोप है कि उसकी अंग्रेजी विषय की उत्तर पुस्तिका में हैंड राईटिंग बदली हुई है। तथा एक अन्य उत्तर पुस्तिका के कुछ पन्ने फाड़े गए हैं। इसके चलते वह मुख्य परीक्षा में सफल नहीं हो पाया। श्रवण पांडेय की याचिका पर न्यायमूर्ति सिद्धार्थ वर्मा और न्यायमूर्ति मनीष कुमार निगम की खंडपीठ सुनवाई कर रही है। श्रवण पांडेय ने 2022 पीसीएस (जे) मुख्य परीक्षा में असफल होने

पर आरटीआई से जानकारी मांगी थी। तभी पता चला कि अंग्रेजी की उत्तर पुस्तिका में उनकी हैंडराईटिंग नहीं है। इसी पर कोर्ट ने याची को सभी 6 विषयों की उत्तर पुस्तिकाएं प्रस्तुत करने को कहा था। इसी के चलते सभी उत्तर पुस्तिकाओं की जांच कराई जा रही है।

यह कापी कांड आयोग के गले की फांस बन गया है। इस प्रकरण के चलते प्रदेश में 2017 में सरकार बदलने के बाद से नियमित भर्तियां कर रहे आयोग की रफ्तार पर भी ब्रेक लग गया है।



# राजनीति के बिसात पर नौकरशाही को मात ही मात

इस बार के लोकसभा चुनाव में राजनीति के पिच पर जोरदार पारी खेलने का मंसूबा पाले जिन पूर्व नौकरशाहों ने चुनावी मैदान का रुख किया था, वे पूरी तरह बोल्ट होते नजर आए। केवल एक को छोड़कर बाकी पांच तो मुख्य मुकाबले के भी आसपास नहीं दिखाई पड़े।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कैबिनेट सेक्रेटरी रहे नूपेन्द्र मिश्रा के बेटे साकेत मिश्रा भाजपा के टिकट पर बड़ी उम्मीदों से श्रावस्ती से खड़े हुए थे। लेकिन उनके मंसूबों को सपा के राम शिरोमणि शर्मा ने 76,673 मतों से पराजित कर धराशायी कर दिया।

इसी तरह पूर्व आईपीएस अरविन्द्र सेन को भाकपा के टिकट पर फैजाबाद से लड़ना महंगा पड़ा। वे बुरी तरह हार गए। कौशांबी से डिप्टी एसपी रहे शुभ नारायण गौतम बसपा से चुनावी मैदान में थे लेकिन वे मुख्य मुकाबले के आसपास कहीं नजर नहीं आए। बसपा ने ही मथुरा से रिटायर्ड आईआरएस अधिकारी सुरेन्द्र सिंह को अपना उम्मीदवार बनाया था। लेकिन वे भी नाम मात्र के प्रत्याशी साबित हुए। इंजीनियरिंग संवर्ग के रिटायर्ड अफसर सुरेश गौतम की भी जालौन से कोई दाल नहीं गली। वह भी बसपा के टिकट पर चुनावी बैतरणी पार करने के प्रयास में थे। लेकिन यहां भी वह कहीं मुकाबले में नहीं दिखे।

सपा की तरफ से भी चुनाव मैदान में खड़े रिटायर्ड एडीजे मनोज कुमार को भी हार का



चंद्रशेखर आजाद

स्वाद चखना पड़ा। वह नगीना से खड़े थे। यहां आजाद समाज पार्टी और भाजपा के बीच ही मुकाबला था। जिसमें चंद्रशेखर आजाद उर्फ रावण विजयी रहे।

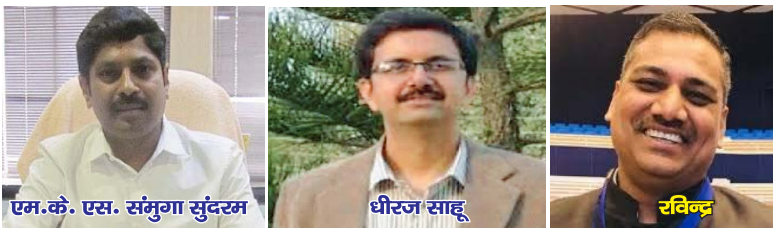
नौकरशाही के माहिर शख्स राजनीति में आने पर नेताओं की ही तरह दांवपेंच दिखाते जरूर रहे हैं। कुछ सफल हुए तो कुछ को असफलता भी मिली है। यही नहीं मौका पड़ने पर वे नेताओं की ही तरह पाला बदलने में भी नहीं चूकते हैं। इतिहास पर नजर डालें तो मायावती सरकार में सबसे कद्दावर अफसरों में शुमार आईएएस कुंवर फतेह बहादुर सिंह और राम बहादुर ने रिटायरमेंट के बाद शुरू में भले ही बसपा का दामन थामा पर फतेह बहादुर जहां सपाई हो गए तो वहीं राम बहादुर



तनुज पुनिया

ने भाजपा ज्वाइन कर ली। राम बहादुर तो मोहनलालगंज से पिछली बार 2019 में बसपा से संसदी का चुनाव लड़े थे पर मामूली अंतर से हार गए थे। इसी तरह बसपा सुप्रीमो मायावती के एक अन्य करीबी अफसर पीएल पुनिया ने कांग्रेस से राजनीति शुरू की और वह संसद तक भी पहुंचे। इस बार उनके बेटे तनुज पुनिया ने बाराबंकी से ही कांग्रेस के ही टिकट पर सांसद होने का सम्मान पाया है। वहीं पूर्व आईएएस अफसर नीरा यादव जो मुख्य सचिव तक भी बनीं उनके पति पूर्व आईपीएस महेन्द्र सिंह यादव सपा सरकार में मंत्री भी बने थे लेकिन बाद में उन्होंने भाजपा का दामन थाम लिया था।

## तीन IAS अफसर केन्द्र में अपर सचिव के पद पर नामित



उत्तर प्रदेश कॉडर के तीन आईएएस अफसर केन्द्र में अपर सचिव के पद पर इम्पैनलमेंट (नामित) किया गया है। इस संबंध में केन्द्रीय कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग ने आदेश भी जारी कर दिया है।

केन्द्र में जाने वाले तीन आईएएस अफसर एम. के. एस. संमुगा सुंदरम, रवीन्द्र और धीरज साहू हैं। 1997 बैच के सुंदरम

अभी तक बेसिक शिक्षा विभाग के प्रमुख सचिव और 1999 बैच के रवीन्द्र मत्स्य विभाग के प्रमुख सचिव के पद पर कार्यरत हैं। जबकि 1996 बैच के आईएएस धीरज साहू केन्द्र सरकार में पहले से ही संयुक्त सचिव वेयर हाउसिंग डेवलपमेंट एण्ड रेग्युलैटरी अथॉरिटी के पद पर प्रतिनियुक्ति पर हैं।

## पूर्व IAS ने बैकुंठधाम को भेंट किया वाटरकूलर

पूर्व आईएएस अधिकारी डॉ. अनीता भटनागर जैन ने अपने पिता स्व. आत्मा स्वरूप भटनागर की स्मृति में बैकुंठधाम को वाटरकूलर भेंट किया।

स्वर्गीय आत्मा स्वरूप भटनागर प्रमुख अभियंता लोकनिर्माण विभाग के पद से रिटायर हुए थे। उन्होंने सेवा उपरान्त विश्व बैंक की कन्सलटेंसी बीच में छोड़कर आजीवन विभिन्न बालिकाओं को निःशुल्क पढ़ाया। उनमें से कई बालिकाएं इंजीनियर, एमबीए आदि बनीं।

इस अवसर पर इंद्रजीत आईएएस नगर आयुक्त लखनऊ, आशु जैन पूर्व प्रिंसिपल चीफ कमिश्नर इंकमटैक्स आदि उपस्थित थे।

## DGP ने किया पूर्व IPS की किताब का विमोचन

डीजीपी प्रशांत कुमार ने रिटायर विशेष पुलिस महानिदेशक राजेश प्रताप सिंह की पुस्तक 'नक्सलवाद आकाश-कुसुम या यथार्थ' का विमोचन किया।



रिटायर आईपीएस राजेश प्रताप सिंह ने नक्सल प्रभावित क्षेत्रों का दौरा करके वहां पर तैनात अधिकारियों व अन्य लोगों से बातचीत करने के बाद अपने अनुभवों को अपनी पुस्तक में साझा किया है। पुस्तक में देश के अलग-अलग राज्यों में नक्सली आंदोलन के विस्तार, इसकी रणनीति के अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का विश्लेषण किया है। साथ ही नक्सलवाद के विकास, अस्तित्व और पराभव को वर्तमान संदर्भ के वैचारिक व सामाजिक विकास की प्रक्रिया को साथ-साथ

विश्लेषित किया है।

इस अवसर पर मीरा रावत अपर पुलिस महानिदेशक प्रशासन/यूपी-112, अपर पुलिस महानिदेशक स्थापना, अपर पुलिस महानिदेशक/पुलिस महानिदेशक के जीएसओ, अपर पुलिस महानिदेशक मानवाधिकार, अपर पुलिस महानिदेशक कानून व्यवस्था अमिताभ यश सहित अन्य उच्चाधिकारी उपस्थित थे।

## अक्टूबर में होगी PCS की परीक्षा

लोकसभा चुनाव के तत्काल बाद उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (यूपीपीएससी) ने परीक्षाओं का संसोधित कैलेंडर जारी कर दिया है। इस तरह जून से दिसंबर महीने तक आयोग 14 परीक्षाओं का आयोजन करेगा। इसके तहत सम्मिलित राज्य प्रवर अधीनस्थ सेवा प्रारंभिक (पीसीएस) की परीक्षा 27 अक्टूबर तथा पेपर लीक के कारण निरस्त की गई आर.ओ./ए.आर.ओ. की प्रारंभिक परीक्षा 22 दिसंबर को आयोजित किया जाना तय हुआ है।

आयोग द्वारा जारी संसोधित कैलेंडर में अभी लिखित परीक्षा की तारीख घोषित नहीं की गई है। ऐसे में आयोग के लिए भर्ती परीक्षाओं के सत्र को पट्टी पर लाना बड़ी चुनौती होगी। माना जा रहा है कि पीसीएस



की मुख्य परीक्षा अगले वर्ष हो सकती है।

विगत 11 फरवरी को हुई आर.ओ./ए.आर.ओ. की परीक्षा पेपर लीक होने की वजह से निरस्त कर दी गई थी। इसी तरह 22 मार्च को प्रस्तावित स्टाफ नर्स यूनानी, आयुर्वेदिक 'पुरुष-महिला' परीक्षा सात अप्रैल को प्रस्तावित सहायक नगर नियोजक प्रारंभिक परीक्षा, 9 अप्रैल को प्रस्तावित निजी सचिव आदि की परीक्षाएं भी सीगित कर दी गई थीं। आयोग ने सम्मिलित राज्य कृषि सेवा प्रारंभिक परीक्षा 18 अगस्त को आयोजित करने का निर्णय लिया है।

## 23 आईएस अफसरों के बैच में बदलाव

केन्द्रीय कर्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग ने स्टेट कोटे के 23 आईएस अधिकारियों को पहले जो बैच आवंटित किया गया था उसमें एक पहले का बैच आवंटित कर दिया है। एक ही सेलेक्ट लिस्ट (चयन सूची) में इन अधिकारियों के मुकाबले उनके वरिष्ठ अधिकारियों की सेवा अवधि कम थी, जिसके चलते कुल 23 अधिकारियों को भी एक बाद का बैच आवंटित हो गया था।

स्टेट कोटे के 16 आईएस अधिकारियों को पूर्व में 2010 बैच आवंटित किया गया था। जिसे अब 2009 कर दिया गया है। ये अधिकारी हैं-

इंद्र विक्रम सिंह, हीरा लाल, राम योग्य मिश्रा, शैलेन्द्र कुमार सिंह, प्रकाश चंद्र श्रीवास्तव, राकेश कुमार सिंह, फैसल आफताब, दीप चंद्र, अमर नाथ उपाध्याय, डॉ. अनिल कुमार सिंह, साहब सिंह, श्रीश चंद्र वर्मा, सुशील कुमार मौर्य, मानवेन्द्र सिंह, अटल कुमार राय और नरेन्द्र प्रसाद पांडेय।

इसी तरह से स्टेट कोटे के सात 4 अधिकारियों को 2015 बैच आवंटित किया गया था। अब इन्हें 2014 बैच मिल गया है। ये अधिकारी हैं - श्याम बहादुर सिंह, पवन कुमार गंगवार, ब्रजेश कुमार, हरिकेश चौरसिया, महेन्द्र सिंह, रविंद्र पाल सिंह और अनिल कुमार।

## रुचिरा कंबोज हुई रिटायर

संयुक्त राष्ट्र में भारत की स्थाई प्रतिनिधि रुचिरा कंबोज अब सेवानिवृत्त हो गई हैं। उन्होंने 35 वर्षों से अधिक का समय संयुक्त राष्ट्र में भारत के प्रतिनिधित्व के रूप में व्यतीत किया।



संयुक्त राष्ट्र में भारत की पहली महिला राजदूत रुचिरा कंबोज 1987 में भारतीय विदेश सेवा में शामिल हुई थीं। उन्होंने सोशल मीडिया एक्स पर लिखा कि- 'असाधारण वर्षों व अविस्मरणीय अनुभवों के लिए धन्यवाद।' कंबोज 1987 सिविल सेवा बैच की अखिल भारतीय महिला टॉपर और 1987 विदेश सेवा बैच की टॉपर रही हैं। उन्होंने दो अगस्त 2022 को न्यूयार्क में भारत के स्थाई प्रतिनिधि व राजदूत का पद संभाला था।



India's Leading Institute for becoming an IAS



**आकार IAS**

इण्टर (12th) के बाद IAS/PCS की तैयारी करें

**Think About IAS/PCS**

JUST AFTER 12TH

Age group  
15-20 year

**Junior IAS Batch (3 Year Course)**  
**(For 12th Passed Student)**

After **10th** Five Year Integrated Programme for **IAS/PCS**

**GENERAL STUDIES**

PRE CUM MAINS

Hindi & English Medium

**ADMISSION OPEN**

for **IAS/PCS 2024**

**Batch Time- 8:30 AM | 6:00 PM**

0522-4044438, 9519483938, 9935888651, 9129033494

Head Office: B-59, Sec-H, Opp. Axis Bank, Near Puraniya Chauraha, Aliganj, Lucknow

Our Centre: 1/803 Vardhan Khand, Gomti Nagar Extension, Near CMS Cambridge Branch, Lucknow, Uttar Pradesh - 226010

Follow us-

Website: [www.aakarias.co.in](http://www.aakarias.co.in)

To download the **AAKAR IAS App**  
get the QR code scan





## UFC में भारत की पहली महिला विजेता UP की पूजा

है।

पूजा ने खुद इतिहास रचने के बाद बड़े गर्व से कहा कि यह केवल मेरी जीत नहीं है यह भारत के सभी प्रशंसकों और भारतीय फाइटर की जीत है। इससे पहले लोग यही सोचा करते थे कि मिक्स्ट मार्शल आर्ट में भारतीय फाइटर चुनौती पेश नहीं कर सकते हैं। मैं केवल जीत के बारे में सोच रही थी और मैंने यह साबित किया कि भारतीय फाइटर हारने वालों में शामिल नहीं हैं।

‘साईक्लोन’ के नाम से चर्चित 30 वर्षीय पूजा ने अभी पिछले ही साल अक्टूबर में यूएफसी के साथ अनुबंध किया था। इस तरह से वह मिक्स्ट मार्शल आर्ट्स की सबसे बड़ी प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाली भारत की पहली महिला फाइटर बन गई।

वैसे अंशुल जुबली और भरत कटारे ने इससे पहले यूएफसी के मंच पर भारत का प्रतिनिधित्व किया था। यद्यपि ये दोनों ही अपना डेब्यू मैच नहीं जीत सके थे। पूजा ने यूएससी लुईसविले में स्ट्रावेट (52 किग्रा) मुकाबले में ब्राजील की रेयान डोन्स सैन्टोस पर 30-27, 27-30, 29-28 से जीत हासिल की। मुकाबले के बाद पूजा ने कहा कि मुझे जीत की पूरी उम्मीद थी और मैंने काफी आक्रमण किया। लेकिन मैं अपना शत प्रतिशत प्रदर्शन नहीं कर पायी। दूसरे राउंड में मैं दबाव में थी। मुझे अभी काफी सुधार करने की जरूरत है।

जहां तक पूजा की बात है तो उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर के बुधाना गांव में जन्मी पूजा

पांच बार की राष्ट्रीय वुशु चैंपियन हैं। वह कराटे और ताइक्वांडों में भी भाग लेती रही हैं। भारतीय सर्किट की सर्वश्रेष्ठ महिला फाइटरों में शामिल पूजा इंडोनेशिया के बाली में सोमा फाइटर क्लब से जुड़ी हुई हैं। पूजा ने इसके अलावा मैट्रिक्स फाइटर नाईट (एमएफएम) और वन चैंपियनशिप में भी हिस्सा लिया है। उसमें लगातार चार हार के बाद उसे छोड़ वह 2012 में मैट्रिक्स से जुड़ गई और उसमें चार मुकाबले जीते।

पूजा जब 6 साल की थीं तभी उनके पिता का देहान्त हो गया था। इसके बाद परिवार की जिम्मेदारियों ने उन्हें कठोर बना दिया। पूजा का कहना है कि कई दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं के कारण उन्होंने मैट्रिक्स फाइटर नाईट को चुना, न कि खेल के प्रति जिज्ञासा, रुचि या प्यार के कारण।

उनका मानना है कि एमएफएम में टॉप फाइटर में से एक बनने के लिए उनकी मानसिक दृढ़ता काम आयी। उन्होंने इसके लिए न केवल खेल की प्रकृति को जिम्मेदार ढहराया, बल्कि जीवन में होने वाले झगड़ों को जिम्मेदार ढहराया। पूजा के अनुसार उनकी दो और बहनें तथा मां हैं। मेरी एक बहन के पैर में समस्या थी। जब कोई इसके लिए परेशान करता था या चिढ़ाता था तो मुझे बहुत गुस्सा आता था। मैंने इसके लिए लड़कों को पीटना शुरू कर दिया था। बड़े होकर मैं जैकी चैन, अभिनीत फिल्में देखती थीं और मुझे लगता था कि मैं उनके स्टंट से कुछ चीजें सीख सकती हूँ और उन्हें इन लड़कों के खिलाफ इस्तेमाल कर सकती हूँ। धीरे-धीरे मैं मार्शल आर्ट की तरफ बढ़ गई। □



• वीरेन्द्र शुक्ल  
9936403929



**3** फ्लूटिमेंट फाइटरिंग चैंपियनशिप (यूएफसी) में आज तक किसी भारतीय (पुरुष/महिला) ने सफलता का स्वाद नहीं चखा था, लेकिन उत्तर प्रदेश की पूजा तोमर ने ऐसा कारनामा कर दिखाया कि उनका नाम इतिहास के पन्नों में दर्ज हो गया

## चुनाव में खिलाड़ियों का मिश्रित भाग्य

### पठान, कीर्ति जीते, दिलीप व झाझरिया हारे

इस बार लोकसभा चुनाव में खेल के महारथियों का मिश्रित भाग्य रहा। देश के लिए नाम रोशन करने वाले चार खिलाड़ियों में से दो को जहां सफलता मिली तो दो को हार के चलते निराशा हाथ लगी।

संयोग और उल्लेखनीय बात यह है कि जो दो क्रिकेट खिलाड़ी यूसुफ पठान और कीर्ति आजाद

राजनीति के पिच पर सफलता के झंडे गाड़ने में सफल रहे। वे दोनों ही पश्चिम बंगाल से चुनाव मैदान में थे और दोनों ही तृणमूल कांग्रेस के टिकट पर खड़े हुए थे। हारने वालों में एक हॉकी के खिलाड़ी दिलीप टिकी हैं तो दूसरे पैरालंपियन गोल्ड मेडलिस्ट देवेन्द्र झाझरिया हैं। दिलीप टिकी भारतीय हॉकी टीम के कप्तान भी रहे हैं। और



इस समय वे भारतीय हॉकी संघ के अध्यक्ष भी हैं।



## यूसुफ पठान

धुंआधार क्रिकेटर यूसुफ पठान पहली बार में ही चुनावी मैदान में जीत का छक्का जड़ने में सफल रहे। न केवल वे जीते ही बल्कि दिग्गज कांग्रेसी अधीर रंजन चौधरी को हराकर सभी को चौंका भी दिया। जबकि अधीर रंजन सिटिंग सांसद थे। सियासी पिच पर पहली पारी खेलते हुए यूसुफ पठान ने अधीर रंजन के खिलाफ बेरहामपुर सीट से कुल 4,58,831 वोट हासिल करते हुए दिग्गज नेता अधीर रंजन को 69,102 वोटों से हराकर बड़ी जीत दर्ज की। लगातार पांच बार के विजयी अधीर रंजन इस बार केवल 3,89,729 मत ही प्राप्त कर सके।

## कीर्ति आजाद

इस चुनाव से पहले भी 1983 वर्ल्ड कप की विजेता टीम के सदस्य कीर्ति आजाद राजनीति की पिच पर अपना झंडा गाड़ते हुए लोकसभा पहुंच चुके थे। बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री भागवत झा के पुत्र कीर्ति आजाद ने पहली बार बिहार के दरभंगा सीट से भाजपा के टिकट पर लोकसभा पहुंचे थे। बाद में वह कांग्रेस के टिकट पर झारखंड की धनबाद सीट से लड़े थे लेकिन जीत नहीं सके। इस बार वह पश्चिम बंगाल में बर्धमान-दुर्गापुर से टीएमसी के टिकट पर खड़े थे। उन्होंने राजनीति में वापसी करते हुए भाजपा के दिग्गज नेता दिलीप घोष को हराया। कीर्ति आजाद ने 1,37,981 वोट से प्रचंड जीत दर्ज की।

## दिलीप टिकी

चार बार ओलंपिक में भारत का प्रतिनिधित्व कर चुके दिलीप टिकी दूसरी बार बीजद उम्मीदवार के रूप में चुनावी मैदान में थे। हॉकी के मैदान में देश के लिए भले ही गोल बचाने वाले डिफेंडर के तौर पर वह एक अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त खिलाड़ी थे लेकिन चुनावी मैदान में अटैकर होने के बावजूद वह गोल हासिल नहीं कर सके। क्योंकि उनके सामने पांच बार सांसद रहे जुएल उरांव छठी जीत के लिए मैदान में कमर कस कर उतरे हुए थे। नतीजा यह निकला कि जुएल ने दिलीप टिकी को 1,38,808 वोटों के भारी अंतर से जीत प्राप्त की।

## देवेन्द्र झाझरिया

पैराथलेटिक्स में पूरी दुनिया में भारत का इंका बजाने वाले पैरालंपिक गोल्ड मेडलिस्ट देवेन्द्र झाझरिया राजस्थान के लोकसभा की चुरु सीट से भाजपा उम्मीदवार थे लेकिन उन्हें कांग्रेस के प्रत्याशी राहुल कस्वा ने 72,737 वोट से मात दी। □

## सुहास बने दुनिया के नंबर 1 पैरा शटलर



सफलता की कई सीढ़ियां चढ़ते हुए अंततः सुहास एल.वाई. ने वह मुकाम हासिल कर लिया जिसकी उन्हें लंबे अरसे से तलाश थी। अब वह दुनिया के नंबर 1 पैरा शटलर बन चुके हैं।

पैरा बैडमिंटन की ताजा रैंकिंग में सुहास एल.वाई. की मौजूदा रेटिंग 60,527 है। जबकि फ्रांस के दिग्गज शटलर लुकास माजुर के खाते में 58,953 रेटिंग अंक होने से वह दूसरे स्थान पर पिछड़ गए हैं।

नंबर 1 पैरा शटलर बनने पर उन्होंने एक्स पर ईश्वर और प्रशंसकों को आभार जताते हुए पोस्ट करते हुए लिखा है कि आखिरकार मैं दुनिया में नंबर 1 बन गया। वर्तमान रेटिंग को शेयर करते हुए खुशी हो रही है। बैडमिंटन विश्व महासंघ पैरा बैडमिंटन रैंकिंग में पुरुष एकल वर्ग में मुझे जीवन में पहली बार विश्व नंबर एक रैंकिंग मिली है। मैंने लंबे समय से विश्व नंबर एक खिलाड़ी फ्रांस के लुकास माजुर की जगह ली। आपके आशीर्वाद और शुभकामनाओं के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। दुनिया का नंबर 1 पैरा शटलर बनने के चलते अब जुलाई में पेरिस में होने वाले पैरालंपिक में निश्चय ही उनका आत्मविश्वास मजबूत होगा। देखा जाए तो अब सुहास की झोली में पैरालंपिक का स्वर्ण पदक ही आना बाकी है। नहीं तो उन्होंने लगभग हर बड़ी अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में अपनी सफलता के झंडे गाड़ रखे हैं।

उल्लेखनीय है कि टोक्यो पैरालंपिक के एसएल-4 वर्ग के खिलाबी मुकाबले में लुकास के हाथों हार के चलते ही उन्हें रजत पदक से संतोष करना पड़ा था। सुहास पैरा एशियन गेम्स और पैरा एशियन चैंपियनशिप में देश के लिए स्वर्णिम सफलता बटोर चुके हैं। अभी हाल में स्कॉटलैंड में 19 से 23 जून तक आयोजित पैराबैडमिंटन टूर्नामेंट में उन्होंने रजत पदक जीतने में कामयाबी हासिल की थी। इस टूर्नामेंट में भारतीय टीम ने कुल 14 पदक अपने नाम किए हैं। मौजूदा समय में सुहास पेरिस पैरालंपिक की तैयारी में जुटे हैं। खेलों के इस महाकुंभ में इस बार भी स्टार शटलर से धमाकेदार प्रदर्शन की उम्मीद की जा रही है।

## खास उपलब्धियां

- अर्जुन पुरस्कार (खेल रत्न के बाद दूसरा सर्वोच्च खेल पुरस्कार) से सम्मानित (2021)।
- यश भारती, यूपी का सर्वोच्च नागरिक सम्मान (2016)।
- तीन दिसंबर 2016 को विश्व विकलांगता दिवस पर लखनऊ में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा सर्वश्रेष्ठ पैरा खिलाड़ी का पुरस्कार।
- राष्ट्रीय खेल दिवस (29 अगस्त 2017) के अवसर पर देश के लिए अंतर्राष्ट्रीय पदक जीतने के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा विशेष पुरस्कार दिया गया। साथ में 10 लाख का नकद पुरस्कार और प्रशंसा प्रमाण पत्र भी दिया गया।
- पिछले साल यूपी दिवस पर प्रदेश के सर्वोच्च खेल सम्मान लक्ष्मण अवार्ड से सम्मानित किया गया।

इतनी उल्लेखनीय और प्रशंसनीय उपलब्धियां हासिल करने वाले सुहास एल.वाई. देश के एक मात्र आईएएस अधिकारी हैं। वह वरिष्ठ आईएएस होने के साथ ही साथ उत्तर प्रदेश के खेल विभाग में सचिव के पद पर कार्यरत हैं।



# गर्मी में स्वस्थ रखने वाले पेय



**ग**र्मियों के दिनों में मौसम गर्म रहने की वजह से शरीर में पानी की कमी होना आम बात है। इसके कारण कई तरह की स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। इससे बचाव के लिए गर्मियों में ऐसे पेय पदार्थों का सेवन करना चाहिए जो स्वादिष्ट होने के साथ-साथ हाईड्रेट रखने में भी मदद कर सके।

दरअसल गर्मियों में पसीना और निर्जलीकरण बढ़ जाता है। ऐसे में इम्युनिटी (प्रतिरक्षा) बढ़ाने वाले पेय हाइड्रेटेड रखने में मददगार हो सकते हैं। साथ ही इम्युनिटी प्रणाली को समर्थन देने के लिए आवश्यक विटामिन और खनिज प्रदान कर सकते हैं।

गर्मियों में स्वस्थ रखने के लिए इम्युनिटी बढ़ाने वाले पेय।

## ग्रीन-टी

ग्रीन टी में कैटेचिन जैसे एंटीऑक्सीडेंट भरपूर मात्रा में होते हैं। जो फ्रिरेडिकल से लड़कर प्रतिरक्षा प्रणाली बनाने में मदद करते हैं। ग्रीन टी की पत्तियों को कुछ समय के लिए गर्म पानी में उबालकर पीना चाहिए।

## नीबू पानी

नीबू पानी में विटामिन सी भरपूर मात्रा में पाया जाता है। जो इम्युनिटी सिस्टम को मजबूत बनाता है और कोलेजन उत्पादन के सहायक होता है। सुबह उठते ही एक गिलास पानी में ताजा नीबू का रस निचोड़कर पीने से इम्युनिटी सिस्टम को ताजगी मिलती है।

## नारियल पानी

नारियल पानी में इलेक्ट्रोलाइट्स और मिनरल्स भरपूर मात्रा में होते हैं। जो शरीर को हाईड्रेट रखने और प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाने में मदद करते हैं। गर्मी के दिनों में ताजगी के लिए इसका सेवन लाभप्रद होता है।

यह एक प्राकृतिक पेय है जो पोटैशियम, मैगनीज और अमीनो एसिड सहित खनिजों और इलेक्ट्रोलाइट्स से भरपूर होता है। जो शरीर में पानी की कमी को पूरा करते हैं। इसमें कैलोरी कम और पोषक तत्वों की मात्रा प्रचुर होती है। इसलिए यह शरीर को तुरंत एनर्जी देने और कई स्वास्थ्य लाभ देने में सहायक होता है।

## तजबूज का जूस

तरबूज हाईड्रेटिंग होता है। इसमें विटामिन ए और सी भरपूर मात्रा में पाया जाता है। जो प्रतिरक्षा स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में मदद करता है। ताजे तरबूज के टुकड़ों को नीबू के रस और पुदीने पत्तों के साथ मिलाकर ठंडा करके गर्मियों के लिए ताजा पेय के रूप में इस्तेमाल करना स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहता है।

## बेल का शरबत

बेल का शरबत स्वादिष्ट होने के साथ-साथ पौष्टिक भी होता है। यह लू, डिहाइड्रेशन और पेट की खराबी की समस्या से बचाव करता है। साथ ही पेट को ठंडा रखता है। इसका सेवन मधुमेह और माईग्रेन के रोगियों के लिए भी फायदेमंद है।

## एलोवेरा जूस

एलोवेरा में विटामिन खनिज और एंटीऑक्सीडेंट होते हैं जो प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करते हैं और समग्र स्वास्थ्य को बढ़ावा देते हैं। शुरु एलोवेरा जूस या ताजा एलोवेरा जेल को पानी और नीबू के रस में मिलाकर पीना भी स्वास्थ्य के लिए हितकर है। □



## निदेशक, आकार IAS का युवाओं को संदेश ‘‘चयन ही जीवन है’’

**नई उम्र की खुद मुख्तारियों को कौन समझाए,  
कहां से बचकर चलना है कहां जाना जरूरी है!**

उक्त पंक्तियां वर्तमान युवा पीढ़ी के लिए यक्ष प्रश्न बन गई हैं क्योंकि आज की GenZ पीढ़ी के पास जीवन के सभी आयाम में इतने विकल्प हैं युवाओं के मन में कोई संकल्प बन ही नहीं पा रहा है भोजन में फास्ट फूड लेने वाली पीढ़ी को सभी क्षेत्रों में फास्ट इनपुट और फास्ट आउटपुट की आदत बन चुकी है ऐसे में फास्ट के चक्कर में युवा रील लाइफ की ओर ज्यादा आकर्षित है तुलनात्मक रूप से रियल लाइफ के, ऐसे में अभाव और प्रभाव के बीच जूझती युवा पीढ़ी के स्वभाव का मार्गदर्शन आवश्यक हो चला है, खासकर युवाओं के भविष्य और करियर के मार्गदर्शन में बहुत ही सजगता की आवश्यकता बन चुकी है अभिभावक और शिक्षकों के लिए, क्योंकि भविष्य वर्तमान का ही प्रतिफल होता है, यदि वर्तमान में युवाओं के करियर को लेकर सही चयन नहीं हो पाया तो बाद में उसके परिणाम प्रभावित होंगे ही यह उसी प्रकार से है जैसे

ताला चाभी से भी खुलता है और हथौड़े से भी खुल ही जाता है, लेकिन चाभी से खुले ताले और हथौड़े से खुले ताले में श्रम और प्रभाव का अंतर हमेशा बना ही रहता है, इसलिए बच्चों के करियर के चयन के समय बहुत ही मंथन और अनुभवजनित मार्गदर्शन की अपरिहार्य आवश्यकता होती है। करियर का चयन हमेशा बच्चों की अभिक्षमता और अभिरुचि के अनुरूप ही होना चाहिए, इसको पहचानने के लिए हमेशा अनुभव संपन्न करियर काउंसलर की आवश्यकता होती है। मेरे संस्थान आकर IAS द्वारा भी समय-समय पर आवश्यकता के अनुरूप काउंसलिंग सेशन और संवाद का कार्यक्रम चलाया जाता रहता है, मेरी पूरी टीम इस बात को लेकर प्रतिबद्ध रहती है की पढ़ाई करने से पहले अभ्यर्थी अपनी



**पल्लवी सिंह**  
निदेशक, आकार IAS

अभिरुचि और अपनी अभिक्षमता का करियर चुने, ताकि उसे लक्ष्य प्राप्ति के लिए किए जाने वाले श्रम में लगाव के लिए अतिरिक्त ऊर्जा की आवश्यकता ना पड़े। हमारे संस्थान पर करियर काउंसिल का एक निशुल्क हेल्पलाइन नंबर भी उपलब्ध है जिसमें अभिभावक और अभ्यर्थी संपर्क कर सकते हैं।

**निःशुल्क हेल्पलाइन नंबर : 9519483938**

## ओलंपिक में होंगी गीतिका, भारत की अकेली महिला फोटोग्राफर

वरिष्ठ खेल पत्रकार और फोटोग्राफर गीतिका तालुकदार को 26 जुलाई से होने वाले पेरिस ओलंपिक खेलों 2024 को कवर करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) द्वारा सीधे मान्यता दी गई है। आईओसी ने महिला खेल पत्रकारों और फोटोग्राफरों को बढ़ावा देने की अपनी पहल के तहत गीतिका के खेल पत्रकारिता के प्रति समर्पण और योगदान को देखते हुए यह मान्यता प्रदान की गई है।

गुवाहाटी की गीतिका, प्रत्यक्ष मान्यता प्राप्त करने वाली भारत की पहली और एकमात्र महिला फोटोग्राफर हैं। सोशल मीडिया हैंडल पर मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा और केंद्रीय मंत्री पवित्र माधेरिटा ने इस

उपलब्धि के लिए गीतिका को बधाई दी है। डॉ. शर्मा ने कहा कि गीतिका ने भारत की पहली और एक मात्र महिला फोटोग्राफर के रूप में अपना नाम दर्ज कराया है।

गीतिका ने इसके लिए अपना आभार व्यक्त करते हुए कहा, पेरिस ओलंपिक खेल 2024 को कवर करने के लिए आईओसी से मान्यता प्राप्त करना एक सम्मान की बात है। मैं उनके उदार निर्णय के लिए आभारी हूँ जो मुझे और भी अधिक मेहनत करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

उन्होंने इस वर्ष के ओलंपिक आदर्श वाक्य, ‘गेम्स वाइड ओपन’ पर प्रकाश डाला, जो समावेशिता और समान अवसर को दर्शाता है। ओलंपिक खेलों को कवर करने का

गीतिका का यह दूसरा अवसर है। उन्होंने पहले कोविड-1



9 महामारी के दौरान जापान में टोक्यो ओलंपिक 2020 को कवर किया था। 19 साल के पत्रकारिता करियर के साथ, गीतिका ने भारत और विदेशों में कई प्रमुख प्रकाशनों के साथ काम करते हुए कई खेल आयोजनों को कवर किया है।

# एक और चुनाव की चुनौती



जिनकी सीट पर अब उप चुनाव होना है। जैसे लोकसभा का चुनाव लड़ने वाले 6 विधायकों को हार का सामना करना पड़ा है।

सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव कन्नौज से सांसद चुने गए हैं। जबकि वह मैनपुरी के

चुना होगा।

जहां तक सपा से करहल से किसी के लड़ने की संभावना है तो उनके भतीजे तेज प्रताप यादव का नाम चर्चा में है। तेज प्रताप मैनपुरी से पूर्व सांसद भी रह चुके हैं।

इसी तरह मिल्कीपुर में भी उप चुनाव होना है। क्योंकि यहां के विधायक अवधेश प्रसाद फैजाबाद से सांसद बनकर लोकसभा पहुंचे हैं।

अवधेश प्रसाद ने फैजाबाद सीट जीतकर ढेर सारी सुर्खियां बटोरी हैं। क्योंकि इसी लोकसभा सीट के अंतर्गत अयोध्या है। जैसे अब फैजाबाद का अस्तित्व नहीं रहा लेकिन चुनाव

आयोग में अब भी फैजाबाद ही संसदीय सीट है। यहां सपा ने बहुत बड़ा प्रयोग करते हुए सामान्य सीट पर दलित उम्मीदवार अवधेश प्रसाद को उतार कर बड़ा प्रयोग किया था, जो सफल रहा। अब चर्चा यह है कि मिल्कीपुर से संभावित उम्मीदवार के तौर पर अवधेश प्रसाद के बेटे अमित प्रसाद को मौका मिलेगा। अमित इससे पहले भी दावेदारी कर चुके थे।

इसी तरह कटेहरी से विधायक लालजी वर्मा अब अंबेडकरनगर से सांसद बन गए हैं। इस सीट पर भी चुनाव होना है। यहां से उनकी बेटा आंचल भी दावेदार हैं। कुर्मी बिरादरी के अन्य कई नेता भी कटेहरी से चुनाव लड़ने की कवायद में जुटे हुए हैं।

सपा से संबंधित जिया-उर-रहमान बर्क मुरादाबाद जिले के कुदरकी से विधायक रहते हुए संभल से लोकसभा का चुनाव लड़े थे और वहां से वह जीते भी हैं। ऐसे में

## • आयुष सिंह



करहल से विधायक भी हैं। अखिलेश यादव चूंकि अब केन्द्र की राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाने को तत्पर हैं इसलिए उनकी करहल सीट से उप चुनाव होना तय है। अखिलेश यादव के केन्द्र की राजनीति करने से सपा में कई बदलाव होने तय हैं। करहल में उप चुनाव तो होगा ही साथ ही अखिलेश यादव के सांसद बनने से विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष का पद भी खाली हो जाएगा। क्योंकि अखिलेश विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष भी हैं। सपा को अब नेता प्रतिपक्ष भी



अवधेश प्रसाद



जिया-उर-रहमान बर्क



लालजी वर्मा

**लो** कसभा चुनाव के खत्म होने के बाद अब उत्तर प्रदेश में एक और चुनाव की बारी है। यह चुनाव उप चुनाव होगा। क्योंकि विधायक रहते हुए जिन नेताओं ने विजय हासिल की है, उनकी रिक्त सीट भरने के लिए यह चुनाव अनिवार्य हो चुका है। और यह चुनाव भी 6 महीने के भीतर ही होना है।

इस तरह अब विधानसभा उप चुनाव में भी एनडीए और इंडिया के सामने जीत की कड़ी चुनौती होगी। लोकसभा चुनाव परिणाम आने के बाद दोनों गठबंधनों ने उप चुनाव के लिए मंथन शुरू कर दिया है। उप चुनाव कुल 10 सीटों पर होना है। क्योंकि 9 विधायकों और एक एमएलसी ने सांसदी का चुनाव जीता है। इसमें इंडिया के चार और एनडीए के पांच विधायक हैं।





अतुल गर्ग



डॉ. विनोद बिंदु



अनूप वाल्मिकी

कुंदरकी सीट पर जिया-उर-रहमान के पिता मामलुक-उर-रहमान और यहां के पूर्व विधायक मोहम्मद रिजवान प्रबल दावेदार हैं। ऐसे में सपा के सामने इन सीटों पर समन्वय स्थापित करते हुए इन्हें पुनः जीतने की चुनौती है। दूसरी चुनौती यह भी है कि उप चुनाव में कांग्रेस की क्या भूमिका होगी।

सपा के साथ गठबंधन में मीरापुर विधानसभा सीट जीतने वाले रालोद के चंदन चौहान अब भाजपाई हैं। उन्हें भाजपा ने बिजनौर से सांसदी का चुनाव लड़ाया था। उनके विजयी होने पर इस सीट पर भी लोगों की निगाहें लगी हुई हैं। कारण यह कि यह सीट उप चुनाव में रालोद के खाते में रहेगी अथवा नई रणनीति अपनाई जाएगी।

जहां तक भाजपा की बात है तो पार्टी के गाजियाबाद विधायक डॉ. अतुल गर्ग वहीं से सांसद चुने गए हैं। ऐसे में पार्टी वहां से वैश्य उम्मीदवार को उतारती है अथवा किसी अन्य पर दांव लगाती है। इसको लेकर भी चर्चा प्रारंभ हो गई है।

वहीं फूलपुर के विधायक प्रवीण पटेल इसी लोकसभा सीट से भाजपा के टिकट पर चुने गए हैं। योगी सरकार में मंत्री व अलीगढ़ की खैर सीट से विधायक अनूप प्रधान भी अब लोकसभा में नजर आएंगे। उन्होंने हाथरस सीट से जीत हासिल की है।

मिर्जापुर जिले के मझवां से निषाद पार्टी के विधायक डॉ. विनोद बिंदु अब भदोही से सांसद निर्वाचित हुए हैं। ऐसे में मझवां सीट निषाद पार्टी के खाते में रहेगी अथवा नहीं। इस पर भी चर्चा चल रही है।

इस बार यूपी विधान परिषद के तीन सदस्य लोकसभा चुनाव में उतरे थे। इनमें से केवल एक जितिन प्रसाद ही लोकसभा पहुंच पाए हैं। उन्होंने पीलीभीत से जीत दर्ज की है। उनके लोकसभा



चंदन चौहान



प्रवीण पटेल

## एमएलसी में किसे मिलेगा मौका

इस बार यूपी विधान परिषद के तीन सदस्य लोकसभा चुनाव में उतरे थे। इनमें से केवल एक जितिन प्रसाद ही लोकसभा पहुंच पाए हैं। उन्होंने पीलीभीत से जीत दर्ज की है। उनके लोकसभा चुने जाने से योगी कैबिनेट में भी बदलाव होगा। क्योंकि वह लोक निर्माण मंत्री हैं। ऐसे में विधानसभा परिषद की यह सीट भी खाली हुई है। अब इस सीट पर भाजपा किसे मौका देगी इस पर भी लोगों की नजरें लगी हुई हैं। अभी विधान परिषद में भाजपा के 72 और सपा के 7 एमएलसी हैं।



चुने जाने से योगी कैबिनेट में भी बदलाव होगा। क्योंकि वह लोक निर्माण मंत्री हैं। ऐसे में विधानसभा परिषद की यह सीट भी खाली हुई है। अब इस सीट पर भाजपा किसे मौका देगी इस पर भी लोगों की नजरें लगी हुई हैं। अभी विधान परिषद में भाजपा के 72 और सपा के 7 एमएलसी हैं।

भाजपा ने कुल 6 विधायकों को लोकसभा चुनाव में उतारा था। इनमें से चार जहां विजयी रहे वहीं नहतौर के विधायक ओम कुमार को नगीना और पर्यटन मंत्री जयवीर सिंह को मैनपुरी से चुनाव मैदान में उतारा था। ये दोनों ही जीतने में विफल रहे। □

# पर्यावरण-दिवस पर वृक्षारोपण या पौधों की हत्या ?



डॉ. राजाराम त्रिपाठी



डे

द्वे 2 महीने की चुनावी कवायद के बाद देश की सरकार बनने की आपाधापी के दरमियां 5 जून का विश्व पर्यावरण दिवस कब दबे पांव

आया और निकल लिया, यह आम अवाम को तो पता भी न चला। किंतु सोशल मीडिया व दूसरे दिन के समाचार पत्रों से पता चला कि देश भर में विभिन्न संस्थाओं सरकारी कार्यालयों में हीट वेव में भी जबरदस्त वृक्षारोपण कार्य संपन्न हुआ है। हम स्वयं पिछले 30 वर्षों से पेड़ लगा रहे हैं पर आज तक यह नहीं समझ पाये कि हमारे देश के किस विद्वान के दिमाग की उपज थी कि यहां विश्व पर्यावरण दिवस पांच जून के दिन ही वृक्षारोपण किए जाएं। जबकि विशेषज्ञों का मत है कि अर्धचिंतित क्षेत्रों में वृक्षारोपण का आदर्श समय जुलाई अगस्त होना चाहिए। अब चूंकि यह रियाज बन गया है इसलिए शासकीय कार्यालयों में स्कूलों में अधिकारीगण, नेता गण, शिक्षक, बच्चे सभी हर 5 जून को वृक्षारोपण कर रहे हैं, वन विभाग इसमें सबसे आगे है। जबकि देश के ज्यादातर हिस्सों में अभी भी नौतपा का ताप उतरा नहीं है कई स्थानों पर लू चल रही है। लू से बचने के तमाम तरीकों की जानकारी रखते हुए पढ़े लिखे जानकार व्यक्ति भी तमाम डाक्टर एवं दवाइयों के रहते भी मौत के मुंह में समा रहे हैं, ऐसी हालात में 5 जून को लगाए गए ये नन्हे पौधे 48 घंटे भी जिंदा रह पाएंगे यह कहना कठिन है।

यह स्थापित तथ्य है कि भारत में मानसून आम तौर पर 15 जून के पश्चात ही सक्रिय हो पाता है। पर पर्यावरण दिवस के नाम पर सरकारी वृक्षारोपण की खानापूर्ति 5 जून को ही होना अनिवार्य है।



## 5 जून को वृक्षारोपण पौधों की हत्या है, “हीट-वेव” में रोपित पौधों के जिंदा की संभावना बहुत कम

देश में 7-सात दशकों की वृक्षारोपण नौटंकी के बावजूद “प्रति व्यक्ति मात्र 28 पेड़” बचे हैं, जबकि विश्व में सबसे गरीब देशों में शुमार ‘इथोपिया’ हरित-संपदा के मामले में प्रति व्यक्ति 143 पेड़ों के साथ हमसे 5 गुना ज्यादा समृद्ध, आजादी के बाद से अब तक हमने देश में जितने भी पौधे रोपित किए गए, अगर उनमें से 50 प्रतिशत भी जिंदा होते तथा जंगली बचाए जाते तो हरित संपदा में हम दुनिया में नंबर एक होते। यहां मनुष्य को खड़े होने के लिए जगह नहीं बनती।

इस कार्य में हमारे वन विभाग हर साल सबको पीछे छोड़ देते हैं। स्वनामधन्य वन विभाग को इसमें सबसे आगे होना भी चाहिए। क्योंकि देश के हजारों साल पुराने व जैवविविधता से समृद्ध लगभग सभी जंगलों को तो इन्होंने काट कर, कटवा कर, बेंच बांचकर कर फूंक-ताप लिया है। इनकी सफाई पसंदगी का यह आलम है कि जंगलों में ठूठ तक नहीं छोड़ा गया है। इधर कुछेक दशकों से वृक्षारोपण नामक नए चारागाह को जंगलों की रक्षा के नाम पर बनी ये बाड़ें निर्द्वंद्व भाव से चट करते जा रही हैं। हर साल नवीन वृक्षारोपण, पुराने वनों के सुधार, पड़ती भूमि संरक्षण आदि तरह-तरह की योजनाएं बनाकर सरकार से जनता के पैसे लो, वृक्षारोपण की नौटंकी करो, फिर भगवान से दुआ करो कि सारे पौधे मर जाएं। अगले साल फिर योजना बनाओ फिर पैसे लो फिर वृक्षारोपण की नौटंकी करो। यही इस साल भी होना है।

अब तक सारे महानुभाव वृक्षारोपण की फोटो खिंचवा कर सोशल मीडिया पर चेंप चुके हैं, बस किसी तरह समाचार में यह छप जाए कि अमुक महामहिम ने पौधा रोपकर देश के पर्यावरण पर और देश पर भारी भरकम एहसान कर दिया है, अब आगे पौधा जाने, और पौधे की किस्मत जाने।

हमारे देश में सरकारी वृक्षारोपण की हालत यह है कि आजादी के बाद वृक्षारोपण कर जितने

पौधे लगाए गए उनमें से 50 प्रतिशत भी अगर जिंदा रह जाते तो या देश विश्व का सबसे हरा भरा देश होता, और शायद मनुष्य को खड़े रहने के लिए भी जगह नहीं मिलती। पर हमारे नीति निर्माता नेता गण अधिकारी गण इतने दूरदर्शी हैं कि वो जानबूझकर 5 जून को ही वृक्षारोपण कार्यक्रम संपन्न कर डालते हैं ताकि पौधा एक हफ्ता से ज्यादा जिंदा ही ना रह पाए, यानी कि न रहे बांस न बजे बांसुरी। इस तरह ये उद्योगपतियों के लिए कालोनाइजर के लिए जमीन बचाकर ये देश का भारी कल्याण कर रहे हैं।

1972 में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) द्वारा स्थापित, डब्ल्यूईडी ने पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने के 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के रूप में बनाने का निश्चय लिया। 1973 से हम इसे लगातार मना रहे हैं और हर वर्ष पर्यावरण की रक्षा हेतु विभिन्न कार्य लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं, जिस पर हर देश से पूरे वर्ष प्राथमिकता के आधार पर ठोस का करने की अपेक्षा की जाती है। सऊदी अरब साम्राज्य 2024 पर्यावरण दिवस समारोह की मेजबानी कर रहा है। पर्यावरण की रक्षा हेतु इस वर्ष भूमि बहाली, मरुस्थलीकरण और सूखे से निपटने पर संयुक्त राष्ट्र संघ के सभी सदस्य देश अपना ध्यान केंद्रित करते हुए बहुउद्देशीय योजनाओं पर कार्य कर रहे हैं। हम इसमें





क्या-क्या कर रहे हैं यह सोचने का अलग विषय है। हमारे देश में पर्यावरण रक्षा के नाम पर केवल पेड़ लगाने की नौटंकी मात्र की जाती है। लगाने के बाद इन पेड़ों को इनके हाल पर छोड़ दिया जाता है इनमें से ज्यादातर मर जाते हैं। पेड़ों के मामले में सबसे धनी देश कनाडा में

प्रति व्यक्ति पेड़ों की संख्या 10163 है, वहीं हमारे देश में जहां की कहावत है कि, “कहते हैं सब वेदपुराण, एक वृक्ष दस पुत्र समान” बावजूद वृक्षारोपण की पिछले 7 सात दशकों की सतत नौटंकी के बावजूद “प्रति व्यक्ति मात्र 28 पेड़” बचे हैं। विश्व में सबसे गरीब देशों में शुमार किए जाने वाला देश इथोपिया भी हरित संपदा के मामले में प्रति व्यक्ति 143 पेड़ों के साथ हमसे 5 गुना ज्यादा समृद्ध है।

इस पर्यावरण दिवस की खानापूर्ति करने के लिए हमने भी एक और पीपल का पेड़ अपने “इथनो मेडिको हर्बल गार्डन” में लगाया है। पीपल ही क्यों? क्योंकि श्रीमद् भागवत गीता में भगवान श्री कृष्ण ने स्वयं कहा है कि

‘अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां’ यानी कि पेड़ों में मैं पीपल हूँ।

खैर हमने जो पीपल का पौधा आज रोपा है, वह तो हम हर हाल में जिंदा रख लेंगे पर क्या आप सभी महानुभाव जिन्होंने इस 5 जून को पौधों का रोपण किया है, क्या ईमानदारी से वादा करेंगे कि आपने इस बार जितने पौधे रोपे हैं उन्हें हर हाल में आप जिंदा रखेंगे? □

(पर्यावरण मामले की जानकार अंतरराष्ट्रीय हरित योद्धा अवाई)

राष्ट्रीय संयोजक अखिल भारतीय किसान महासंघ आईफा। □

## डॉ. रहीस सिंह ने किया मीडिया मंच के वार्षिकांक का विमोचन



विगत 26 सालों से अनवरत प्रकाशित हो रही राष्ट्रीय मासिक पत्रिका मीडिया मंच के वार्षिकांक का विमोचन उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के मीडिया सलाहकार व जाने माने लेखक एवं स्तंभकार डा० रहीस सिंह ने किया।

इस मौके पर डा० रहीस सिंह ने कहा कि यह सुनकर अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा कि “मीडिया मंच” (हि.मा.) पत्रिका अपनी पत्रकारिता का 26 वर्षों का सफर पूरा कर 27 वें वर्ष में प्रवेश कर गई है। उन्होंने कहा कि यद्यपि सुचिता की पत्रकारिता का पथ चुनौतियों भरा होता है लेकिन मीडिया मंच ने जिस प्रकार से स्पष्टता, निष्पक्षता और विश्वसनीयता से परिपूर्ण सफर तय करते हुए पत्रकारिता की है वह इस बात का प्रमाण है कि चुनौतियां कर्मठता को रोक नहीं पाती। मीडिया मंच ने सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक पक्षों को लेकर लोकहित और लोकभावनाओं को समझा और उनका आदर किया और उसके लिए कार्य किया। इसके लिए संपूर्ण मीडिया मंच परिवार बधाई का पात्र है। डा० सिंह ने “मीडिया मंच” पत्रिका की उत्तरोत्तर सफलता के लिए शुभकामनाएं दीं। मीडिया मंच के संपादक टीबी सिंह ने कहा कि पत्रिका ने 26 सालों का सफर पत्रकारिता के उच्च मानदंडों को बनाए रखते हुए पूरा किया है। मीडिया मंच ने बतौर लेखक व स्तंभकार देश व प्रदेश के अनेक विख्यात नामों को अपने साथ जोड़ा है।

विमोचन के अवसर पर प्रदेश के वरिष्ठ पत्रकार सिद्धार्थ कलहंस, राजेश मिश्रा व प्रभूप्रित सिंह के साथ मीडिया मंच से जुड़े संपादकीय सलाहकार वीरेंद्र सिंह भी मौजूद रहे।

# उठ जाग इंडिया भोर भई .....



पीयूष त्रिपाठी  
7518839758



**अ**रहर की दाल क्या भाव है। चचा मुझी में कैसे लिए दुकानदार से पूछ रहे थे- दुकानदार ने चचा को धूर कर देखा और बोला। हर हर मोदी - घर घर मोदी - अरहर मोदी। सब्जियां खाइए अब कोई दाल गलने वाली नहीं हैं। चचा ने भी अपना चश्मा उतारा- दुकानदार को घूरा और पहुंच गए सब्जी मंडी भाव पूछते उसके पहले ही गरमी में तपकर भट्टी बन चुका दुकानदार खुद ही बताने लगा - आलू बीस रूपए की पचास ग्राम, टमाटर चालीस रूपए का एक पीस, कटहल 60 रूपए तोला, प्याज 25 रूपए पाव, लौकी 10 रूपए इंच, लहसुन छूने का दस रूपए, देखने का पांच रूपए, खरीदने की औकात आपकी लगती नहीं, घुड़ियां छीलने की जरूरत नहीं, आटोमैटिक है। चचा वापस लौट रहे थे कि लफंगों ने नमस्ते कर दिया- बस चचा भड़क गए- बोले जाहिलो कर दिया न बेड़ा गर्क, मैं तो सोच रहा था कि अब बुरे दिन खतम होंगे सूरज से दूधिया रोशनी आएगी, चंद्रमा हाथ से पकड़ में आ जाएगा, सितारे एलईडी बन कर चमकेंगे। समंदर का पानी बोतल बंद मिलेगा। खेतों की सिंचाई मिनरल वाटर से होगी। ट्यूबवेल से दूध, निकलेगा, नहरें रबड़ी और नालियां क्रीम से भरी होंगी। सड़कों में कालीन बिछी होगी। गेहूं चावल की जगह बर्गर-पिज्जा चाउमीन डायरेक्ट खेत में उगेगा। गौशालाएं फाइवस्टार होंगी। सांड कालोनी में रहेंगे। बिजली मुफ्त मिलेगी। युवा हृदय सम्राट युवाओं को गले में सोने की चेन, हाथ में सोने का ब्रेसलेट सरकार गिफ्ट करेगी। दारू की भट्टियों को सब्सिडी- बूढ़े खानों को कहीं भी चलाने की छूट। प्लाट-मकान-जमीन प्रापर्टी हथियाने का प्रशिक्षण दिया जाएगा। इस में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वालों को रेलवे, परिवहन, ग्राम समाज पार्क, खलिहान खेत में कब्जे का विशेष

कारीडोर बनाया जाएगा। पिछड़ा दलित अल्पसंख्यक मंत्रालय द्वारा 140 करोड़ लोगों को सरकारी नौकरियां प्रदान की जाएंगी, लूट-छिनैती को क्रिएटिव कैटेगरी में रखा जाएगा। गुंडा एक्ट में फंसने वालों को यश भारती पुरस्कार से नवाजा जाएगा। पेपर तो दूर की बात टिश्यू पेपर तक लीकप्रूफ बनाया जाएगा। कोई भी भटका नौजवान अपने नाम के साथ आईएस आईपीएस लगा सकेगा। चीन - पाकिस्तान- बांग्लादेश श्रीलंका अफगानिस्तान, सूडान, सीरिया जाने के लिए पासपोर्ट - वीजा की जरूरत खत्म कर दी जाएगी। मथुरा में जवाहर बाग बसाने में सरकार मदद करेगी। पुलिस बल को कार्यकर्ताओं से पिटने की प्रैक्टिस कराई जाएगी। कुछ तुम लूटो, कुछ हम लूटें, चौतरफा हम मिलकर टूटें। कोटा, परमिट टेकेंदारी सब अपने ही लोगों में हो कोई



रिश्तेदार न छूटे। उठ जाग इंडिया भोर भई, अब मंजन कर ठेके पर चल जी भर के पी, छूरा निकाल, फिर बैंक लूट, है खुली छूट।

अन्याय की डगर पर हम सब दिखाएं चलकर। यह देश है हमारा खा जायें इसको तलकर। चचा चकल्लस का धारा प्रवाह भाषण सुनकर सड़कें सूनी हो गयीं, आकाशवाणी हुई कि अब बस करो चचा। समाजवाद ला रहे हो कि बेड़ा गर्क किए दे रहे हो? चचा बोले अकेले यूपी में सबसे ज्यादा कुर्सियां हैं, कोई मजाक नहीं है। अगर यह सब इसी महीने नहीं हुआ तो मैं केजरीवाल की ही बैरक में डेरा जमा दूंगा। बीच-बीच में बाहर निकलूंगा और भाषण देकर फिर भीतर।

और आखिरी में.....

जिसका नाम छोटे है वह उमर में बड़ा है। जो उमर में छोटा है उसका नाम बड़े है। छोटे बड़े शहर में बड़े घर में रहता है, बड़ी बड़ी पार्टियों को हांकता है। बड़े दांव लगाकर बड़ी बात को छोटी बना देता है जिसका नाम बड़े है

वह छोटे शहर के छोटे से घर में रहता है, छोटी बात को बड़े अंदाज में कहता है। इसलिए बड़े को देखकर छोटे को छोड़िए मत। बड़ी तलवार से कपड़े नहीं सिए जाते। छोटी सुई ही काम आया करती है। इस पहली को समझने में अपना टाइम न खराब करिए, कोई और काम कीजिए।

लोकसभा चुनाव के बाद ईवीएम मशीनें अभी भी वोटों से भरी हुई रखी हैं। रात में अचानक मशीनों से इंसानी आवाजें आने लगीं- क्यों बे कौन है तू- बीप-बीप। जवाब आया - बाबू साहेब मैं चुन्नीलाल चिड़ीमार। गरीब आदमी हूँ- फुटपाथ पर रहता हूँ। घर में टीवी फ्रिज, लैपटॉप, डबल बेड सब है- गरीब आदमी हूँ। साहेब इतना गरीब कि मेरे पास कार नहीं है। मजबूरी में प्लेन-ट्रेन बस में सफर करता हूँ। हुजूर मेरे पास अपना सिनेमाघर - मॉल और तो और एक होटल तक नहीं है। मेरे पास अपना स्कूल-कालेज भी नहीं है। दूसरों से काम चला रहा हूँ। मेरे पास कमाई का जरिया भी नहीं है। एक लड़का पाकेटमार है। दूसरा डग्गामार तीसरा जहरखुरानी। चौथा उठाईगीर। पांचवां मुखबिर। छठवां। आगे बोलो छठवां क्या है। साहेब कैसे बताऊं- विधायक जी का पीआरओ कम शूटर कम लवैत कम टाइपिस्ट भी है। साहेब बहुत गरीब आदमी हूँ। राशन में गेहूं के बजाय आटा मिलने का वादा मिला तो उन्हीं को वोट दे दिया। अब गेहूं पिसवाने कौन जाया करेगा। तभी आवाज आई। बंद करो बकबक तक तक मशीन में कैद रहना पड़ेगा- एक घूंट ही देसी का मिल जाय तो चौन मिले। दारू के बदले वोट देकर आया था। यह किसी शराबी का वोट था जो बोल पड़ा। तभी किसी को आवाज आई मैं लंगड़ा हूँ पुलिस ने घर से पकड़ा- बाएं पैर के दाहिनी तरफ दन से गोली मारी जमानत पर घर आया था अब मशीन में हूँ। मेरे पूरे खानदान, रिश्तेदारों के वोट सरकार के खिलाफ नई सरकार बनवाने के लिए डाले गए थे मगर लंगडी सरकार भी नहीं बन पाई। खुदा गारत करे। फिर कोई बोल पड़ा अबे अकल के लंगडो तुम्हारी तो बीप-बीप-बीप। सो जाओ चुपचाप नहीं तो अबकी बार चतुर्भुज पार करवा दूंगा। फिर एक साथ सारी मशीनों से धांय-धूम-धडाम, दिशुम- चटाक-फटाक हुस्स हुई की आवाजें आने लगीं। सारे वोट एक दूसरे को गाली-गलौज के साथ मारने-पीटने लगे। मशीन इस बार मजे से सब सुनती रही। बदनामी से बच गयी थी- इसलिए। □



# जम्हूरियत जिंदाबाद



वीरेन्द्र सिंह  
9410704385



**बी**

ते दिनों लोकसभा चुनाव में जम्हूरियत का जलवा दिखाई दिया। हार की हैट्रिक लगाने के बाद भी कांग्रेस ने जीत का जश्न मनाया। जीत की हैट्रिक लगाने के बाद भी बीजेपी उदास रही। दमदार दखल देकर सपा गदगद दिखी। इस बार ईवीएम की इज्जत बच गई। किसी ने सवाल नहीं उठाया।

सब खुश हैं। बीजेपी खुश है कि वह बिना 272 का जादुई आंकड़ा छुए तीसरी दफा सरकार बनाने में सफल रही। कांग्रेस खुश है कि दस साल तक हाशिए में रहने के बाद वह देश की दूसरी सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी। मजबूत विपक्ष लोकतंत्र को मजबूत करेगा। राहुल भी खुश हैं कि आखिर उनकी पार्टी ने उन्हें ठोक बजा कर नेता बना ही दिया। सपा खुश है कि वह पहली बार अखिलेश के नेतृत्व में यूपी की सबसे ज्यादा सीटों वाली पार्टी बन गई। 36 सीटें जीत कर वह राष्ट्रीय स्तर पर तीसरी सबसे बड़ी पार्टी बन गई। मामता दीदी की टीएमसी खुश है कि उसने पश्चिम बंगाल में बीजेपी के लगातार आगे बढ़ते जा रहे अश्वमेघ घोड़े को 12 सीटों पर रोक दिया। 2019 में बीजेपी ने यहां 18 सीटें जीत ली थीं। हालांकि, इस बार भी बंगाल चुनाव में हिंसा हुई बिहार में नीतीश बाबू और तेलंगाना के चन्द्रबाबू नायडू खुश हैं कि वे अब किंग मेकर की भूमिका में आ गए। महाराष्ट्र में उद्व ठाकरे खुश हैं कि उनके नकली शिवसेना को चुनाव में पीछे छोड़ अपनी विरासत पर कब्जा कर लिया। सब खुश हैं लेकिन लोकतंत्र अपने ही शिकंजे में फंस गया है।

इस चुनाव को कुछ लोग धर्म और अधर्म के बीच का युद्ध बता रहे थे। कुछ ईमान और बेईमान का संघर्ष तो कुछ अहंकार और

लोकतंत्र की लड़ाई। संविधान रक्षा की दुहाई जमकर दी गई। किसी ने नहीं पूछा 80 से ज्यादा संविधान संशोधन किसने किया। असलियत यह है कि ऐसा कौन हरिश्चन्द्र बचा है आज राजनीति के मैदान में, जो दूसरे को बेबाकी से ललकार सके। या लोकतंत्र की इस नाव में कौन ऐसा पुण्यात्मा बैठा है जो कहे वे ही बैठे रहें, जिसने कभी कोई पाप नहीं किए हों। वस्तुतः यह पूरी नाव ही हमारे राजनेताओं ने जर्जर की है। भाई भतीजावाद, परिवारवाद, भ्रष्टाचार के चूहे इसे कुतर गये हैं। ऐसे में दुष्यंत का शेर याद आता है- 'इस नदी की धार से एक हवा आती तो है, नाव जर्जर ही सही लहरों से टकराती तो है।'

वैसे देखा जाय तो उपलब्ध तमाम विकल्पों में लोकतंत्र ही सर्वश्रेष्ठ विकल्प है। यह अवसर है सभी मतदाताओं के लिए सही जन प्रतिनिधि के चुनाव का। अन्यथा का पछताने जब अवसर बीते ? बाद में बहुआ मत देना और कोसना भी मत फिर। धक्के भी मत खाना नगरी नगरी, द्वारे द्वारे। पांच साल बाद ही यही पंछी फिर दिखेगा इतना विनम्र और इतना कातर, सज्जनता की मूर्ति बन के। चुनाव नहीं था यह आपकी परिपक्वता के निर्णायक क्षण था।

हर चुनाव निम्न से निम्नतर होता जाता है। समय बदल चुका है जनता को तड़का चाहिये, ग्लैमर चाहिये। पार्टियों को गुलदस्ते चाहिये, कठपुतलियां चाहिये जो उनके इशारे पर नाचें, उतना ही मुस्कुरायें जितना आलाकमान कहे। आंतरिक लोकतंत्र की हालत सभी पार्टियों में खस्ता है। आवाज उठाने वाले को कौन सुनना चाहता है ? आप भी तुरंत उस कलपुर्जे और कुर्सी -पलंग को ठीक करवाते हैं जो चू-चू करता है। फिर जो चू चपड़ भी करता हो उसे कौन बर्दाश्त करेगा भला ?

क्या पार्टी प्रेसिडेंट का चुनाव, संसदीय दल के नेता का चुनाव सर्वसम्मति से होता है! लोकतंत्र में लोक गायब है। कभी कभी तो लगता है भारत में अभी भी राजतंत्र है। राजा का लड़का ही राजा होगा। या यूं कहें कि लोकतंत्र राजतंत्र गड्डमड्ड हो गए हैं। वस्तुतः हम आज भी राजे रजवाड़ों को देखकर मोहित होते हैं, चमत्कार देखकर सम्मोहित।

भारत में सबका अपना-अपना 'लोकतंत्र' है। ताकतवर का अलग, कमजोर का अलग, अमीर का अलग, गरीब का अलग! यहां किसी को 'लोकतंत्र' से वंचित नहीं किया जाता। सब अपने-अपने क्षेत्र में अपना-अपना विकास करने के लिए स्वतंत्र हैं।

भारत में 'लोकतंत्र ही लोकतंत्र' है। और सबसे बड़ी बात, सबका अपना-अपना 'लोकतंत्र' है! जो जितना ताकतवर, जितना अमीर, उसका उतना ही अधिक 'लोकतंत्र'! जो जितना छोटा, उसका उतना ही कम 'लोकतंत्र' बल्कि उसके छोटे होने से भी ज्यादा छोटा 'लोकतंत्र'। ज्यादा लोकतंत्र वह बेचारा ढो भी नहीं सकता! उसे वोट डालने की जितनी छूट है, भ्रूखे रहने की उससे भी अधिक छूट दी गई है। बेरोजगारी की, धक्के और लातें खाने की, धूल में मिल जाने की तो 101 प्रतिशत छूट है। उसके बच्चे बीमारी से, भ्रूख से रोते रहें दिनभर-रातभर, तड़पते रहें, मर जाएं, छूट ही छूट है। और कोई सरकार इससे अधिक क्या छूट दे सकती है ? और कितना 'लोकतंत्र' दे सकती है ? इतना 'लोकतंत्र' तो विकसित से विकसित लोकतंत्रों में भी नहीं पाया जाता! अल्लामा इकबाल ने फर्माया है-

'जम्हूरियत इक तर्ज-ए-हुकूमत है कि जिसमें,

बंदों को गिना करते हैं, तौला नहीं करते। □

# पाकिस्तान में बढ़ रहे गधे



**पा**किस्तान की सरकार द्वारा जारी एक इकोनॉमिक सर्वे में अपनी ग्रोथ रेट के साथ गधों के आंकड़ों का भी जिक्र किया है।

पाकिस्तान की इकोनामी के खस्ता हालात के बारे में पूरी दुनिया को पता है। मंहगाई ने वहां के लोगों का जीना दूभर कर दिया है। अब पाकिस्तान को आखिरी उम्मीद 'गधों' से है। जो उसकी इकोनामी सुधारने का दम रखते हैं।

पाकिस्तान के इकोनामिक सर्वे में चौंकाने वाली बात यह है कि यहां पर गधों की संख्या में

पिछले साल के मुकाबले 1.72 फीसदी का इजाफा देखने को मिला है। खास बात यह है कि पाकिस्तान की इकोनामी के लिए गधे काफी अहम हैं। खासकर ग्रामीण इलाकों में रहने वाले लोगों के लिए गधे आखिरी उम्मीद हैं।

पाकिस्तान में पशुधन पर पेश नए डाटा के मुताबिक, 2023-24 के दौरान देश में गधों की संख्या 1.72 प्रतिशत बढ़कर 59 लाख हो गई है। जबकि 2020-21 में 56 लाख, 2021-22 में 57 लाख और 2022-23 में 58 लाख थी। जबकि 2023-24 में यह

बढ़कर 59 लाख हो गई। साथ ही यह भी कहा गया है कि घोड़े और खच्चरों की संख्या में पिछले पांच वर्षों में कोई खास बदलाव नहीं आया है। यह चार लाख और दो लाख है।

गधे कई पाकिस्तानियों की आखिरी उम्मीद हैं। खासकर उन लोगों के लिए जो ग्रामीण इलाकों में रहते हैं। ग्रामीण इलाकों में अर्थव्यवस्था इन जानवरों के साथ गहरे से जुड़ी हुई है। यहां ऊंटों की संख्या 12 लाख पहुंच गई है। □

## मीडिया मंच

के 26वें

स्थापना दिवस पर

हार्दिक शुभकामनाएं

दिनेश कुमार

RTO

बरेली



# फिल्म सिटी के लिए हुआ करार



**मु**

ख्यमंत्री योगी के ड्रीम प्रोजेक्ट अंतर्राष्ट्रीय फिल्म सिटी ने आकार लेना प्रारंभ कर दिया है। यमुना एक्सप्रेस वे औद्योगिक विकास प्राधिकरण (यीडा) क्षेत्र के तहत नोएडा के सेक्टर 21 में बनने वाली यह सिटी आठ वर्षों में पूरी तरह तैयार होगी। इसके लिए यीडा के सीईओ डॉ. अरुणवीर सिंह और बोनी कपूर प्रसिद्ध फिल्म निर्माता बोनी कपूर की कंपनी बेब्यू प्रोजेक्ट एलएलपी व आशीष भूटानी की कंपनी इंप्रा के बीच हस्ताक्षर कंसेशन एग्रीमेंट पर हस्ताक्षर हुए। कंसेशन एग्रीमेंट प्राधिकरण के सीईओ डॉ. अरुणवीर सिंह और बोनी कपूर के बीच साइन किया गया। इस दौरान अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्रुति और आशीष भूटानी भी उपस्थित थे।

यीडा के सीईओ डॉ. अरुणवीर सिंह का कहना है कि फिल्म सिटी के पूरे प्रोजेक्ट को आठ वर्ष या 2920 दिन में पूरा किया जाएगा। वहीं फिल्म फैशिलिटीज और फिल्म इंस्टीट्यूट के लिए तीन वर्ष या 1095 दिनों का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इस पूरे प्रोजेक्ट पर कुल 1510 करोड़ रुपये का खर्च आएगा।

पहले दो साल फिल्म सिटी के निर्माण में 50 करोड़ रुपये खर्च होंगे तो वहीं तीसरे वर्ष में 50 करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे।



# यूपी में करना होगा योगी की ताकत पर भरोसा



हेमंत तिवारी  
मो.-9889433333



उत्तर प्रदेश में उम्मीद से उलट नतीजों के बाद सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी में मंथन और विश्लेषणों का दौर चल रहा है। संगठन ने टीमों भेज कर और हारे-जीते प्रत्याशियों से चर्चा के बाद प्राथमिक रिपोर्ट भी तैयार कर ली है। मनमाफिक नतीजे न आने के कोई एक नहीं बल्कि दर्जन भर कारण सामने आए हैं। हालांकि इन सबके बीच जो बात प्रमुखता से सामने आयी है वो यह है कि प्रदेश की जनता का भरोसा मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ में कायम है और पक्ष-विपक्ष के तमाम नेताओं के बीच उनकी लोकप्रियता पहले जैसी सबसे ज्यादा है।

लोकसभा चुनावों के बाद बदली हुयी परिस्थितियों में भाजपा को यूपी में आत्मविश्वास से भरे विपक्ष का मुकाबला करना है। चुनावी नतीजों के बाद समाजवादी पार्टी और कांग्रेस ने यह स्पष्ट कर दिया है उनका गठबंधन आगे भी जारी रहेगा और विधानसभा चुनावों में दोनों दल मिलकर चुनौती पेश करेंगे। आखिर समाजवादी पार्टी ने अपनी स्थापना के बाद से अब तक के इतिहास में सबसे बेहतरीन प्रदर्शन कर दिखाया है। सपा ने अपने इंडिया गठबंधन के सहयोगी कांग्रेस के साथ मिलकर प्रदेश की 80 में से 43 सीटों पर कब्जा किया जबकि भाजपा को महज 33 सीटों पर संतोष करना पड़ा है। लिहाजा अब यूपी में भाजपा का मुकाबला पस्त हाल नहीं बल्कि हौसलों से भरे विपक्ष से है।

आने वाले दिनों में भाजपा को उत्तर प्रदेश में लोकसभा चुनावों में सबसे अहम साबित हुए संविधान और आरक्षण पर खतरे के मुद्दे के साथ ही पेपरलीक, बेरोजगारी, मंहगाई व गैर-यादव पिछड़े मतों की बेरुखी से पार पाना है।



लोकसभा चुनावों के दौरान विपक्ष ने जनता तक और खासकर दलितों व पिछड़ों के बीच जोर-शोर से यह प्रसारित करने में कामयाबी पायी कि भाजपा की सरकार संविधान को बदलना चाहती और आरक्षण को खत्म करना चाहती है। दलितों के बीच ये बात घर कर गयी कि बाबा साहब भीमराव अंबेडकर के संविधान पर खतरा मंडरा रहा है और इसे बचाने के लिए भाजपा को रोकना बहुत जरूरी है। युवाओं के बीच बेरोजगारी व पेपरलीक जैसे मुद्दे खासे असर दिखाते नजर आए हैं जिनसे भाजपा को निपटना है। हालिया जीत के बाद आक्रमक विपक्ष के आरोपों की काट हर रोज भाजपा को तलाशनी होगी।

पिछले दो लोकसभा चुनावों व दो विधानसभा चुनावों में गैर यादव पिछड़ों व गैर जाटव दलितों को साध कर भाजपा ने शानदार विजय हासिल की थी। इस बार के चुनाव में बड़ी तादाद में गैर यादव पिछड़े भाजपा से छिटक गए और दलितों में गैर जाटवों के साथ कुछ हद तक जाटव भी इंडिया गठबंधन के साथ आ जुड़े। भाजपा के लिए एक बार फिर से अपनी सोशल इंजीनियरिंग के फार्मूले को दुरुस्त करना होगा ताकि इन तबकों का विश्वास हासिल किया जा सके।

भाजपा की पिछली कई जीतों में सोशल मीडिया व वैकल्पिक मीडिया जैसे यूट्यूब व वेबसाइटों पर इसकी प्रभावी उपस्थिति व असरदार अभियान की भूमिका रही है। इस बार विपक्ष ने इसका बेहतर इस्तेमाल किया और भाजपा को उसी के हथियार से मात दी। सोशल

मीडिया जैसे फेसबुक, ट्विटर और वाट्सअप पर संसाधनों की कमी के बाद भी विपक्ष में प्रभावी उपस्थिति दर्ज करायी वहीं भाजपा इस मोर्चे पर बेपरवाह नजर आयी। अब आगे के दिनों में भाजपा को फिर से अपने इस सबसे प्रभावी हथियार को धारदार बनाने की जरूरत महसूस की जा रही है।

हालांकि चुनाव दर चुनाव जीत हासिल करती रही भाजपा ने कम से कम खुद को मांजने और नए सिरे से लड़ाई के लिए तैयार करने की कला में महारत हासिल कर रखी है। यूपी में आज भी उसके पास तुरुप के इक्के के तौर पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ हैं जिनकी लोकप्रियता न केवल अपने बल्कि देश के अन्य प्रदेश में बढ़ती ही जा रही है। प्रदेश में आने वाले दिनों में होने वाले दस विधानसभा सीटों के उपचुनाव हों या कि 2027 में होने वाले चुनाव, योगी आदित्यनाथ की छवि, स्वीकार्यता व ताकत विपक्ष के किसी भी नेता से सामने बहुत भारी है।

तमाम मंथन, आत्मावलोकन के बाद तय है कि खुद को पहले जैसी मजबूत बनाने के लिए भाजपा जल्द ही यूपी के कील-कांटे दुरुस्त करने के काम पर जुटेगी और इसकी शुरुआत खुद योगी आदित्यनाथ कर भी चुके हैं। संदेश साफ है कि प्रदेश के मुखिया की ताकत पर भरोसा करते हुए फिर से पहले जैसी एकजुटता के साथ जनता के बीच खुद को झोंकना होगा।

□

hemant.jansandesh@gmail.com



# स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) उ.प्र. की उपलब्धियां

स्वच्छ भारत मिशन प्रथम चरण वर्ष (2014-2019) जिसमें 2.18 करोड़ शौचालय निर्माण के साथ प्रदेश की समस्त ग्राम पंचायतों को खुले में शौच से मुक्त/ओडीएफ घोषित किया गया। पेयजल एवं स्वच्छता विभाग, जल शक्ति मंत्रालय भारत सरकार 1 अप्रैल 2020 से स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) के दूसरे चरण का प्रारम्भ किया गया है।

1. मुख्य उद्देश्य - गाँवों के ओ.डी.एफ. की स्थिति को बनाए रखना, ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबंधन तथा दृष्टिगोचर स्वच्छता बनाए रखना है।
2. ओडीएफ प्लस मानक श्रेणी : ओडीएफ प्लस ग्राम को तीन श्रेणियों / चरणों में विभक्त किया गया है, ओ.डी.एफ प्लस-उदीयमान, उज्ज्वल एवं उत्कृष्ट।
3. ओडीएफ प्लस हेतु निर्धारित लक्ष्य के सापेक्ष नियोजित गतिविधियां एवं प्रगति
  - ❏ वित्तीय वर्ष 2022-23 एवं 23-24 में चयनित ग्रामों/ग्राम पंचायतों के प्रधान, सचिव, पंचायत सहायक, सफाई कर्मी, राजगीर, डीसी, डीपीआरओ, डीडीपी एवं रामिस्त्रियों सहित कुल लगभग 1.12 लाख से अधिक स्टेकहोल्डर्स को प्रशिक्षित किया गया है।
  - ❏ राज्य स्तर से 2582 अधिकारी व कंसल्टेंट कर्मचारी प्रशिक्षित।
  - ❏ बुलंदशहर में ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबंधन हेतु विभिन्न मॉडलों का प्रदर्शन एवं प्रशिक्षण केंद्र द्वारा लगभग 17607 प्रधान/राजगीर/डीसी/डीपीआरओ/डीडीपी आदि।
  - ❏ वित्तीय वर्ष 2024-25 में 69500 स्टेकहोल्डर्स को प्रशिक्षित किया जा रहा है।

## 4. 2023-24 में लक्षित ग्राम

❏ वर्ष 2023-24 ग्रामों की योजना के अनुसार 29596 ग्राम पंचायतों को रु. 3659.80 करोड़ रुपये की निर्गत क्रेडिट लिमिट के सापेक्ष कुल रु. 2070.96 करोड़ ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबंधन के कार्यों में व्यय की गई (56.59 प्रतिशत व्यय) है।

## 5. ओ.डी.एफ. प्लस घोषित ग्रामों की स्थिति

❏ उदीयमान श्रेणी में - 4305, उज्ज्वल श्रेणी में - 1391 एवं उत्कृष्ट ओ.डी.एफ. प्लस ग्राम - 27982 है।

## 6. शौचालय की सुलभता एवं व्यक्तिगत शौचालयों का निर्माण

❏ वर्ष 2023-24 में लक्षित 1716921 के सापेक्ष 1696507 शौचालय निर्मित (98.81 प्रतिशत) है।

❏ प्रदेश की 57691 ग्राम पंचायतों में सामुदायिक शौचालयों का निर्माण कराया गया है, जिनका संचालन एवं रख-रखाव स्वयं सहायता समूह के माध्यम से कराया जा रहा है।

## 7. ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबंधन अंतर्गत प्रगति

- ❏ सामुदायिक खाद गड्डे का निर्माण- 95281
- ❏ सामुदायिक सोखा गड्डे का निर्माण- 112189
- ❏ गोबरधन परियोजना-42 जनपदों में 61 योजना का कार्य पूर्ण।
- ❏ प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन के लिए 40 पी.डब्ल्यू.एम. यूनिट का कार्य पूर्ण।

8. वित्तीय वर्ष में 450478 लाभार्थियों के निर्मित शौचालय के रैट्रोफिटिंग का कार्य कराया गया है।





योगी आदित्यनाथ  
मुख्यमंत्री  
उत्तर प्रदेश

## यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण के

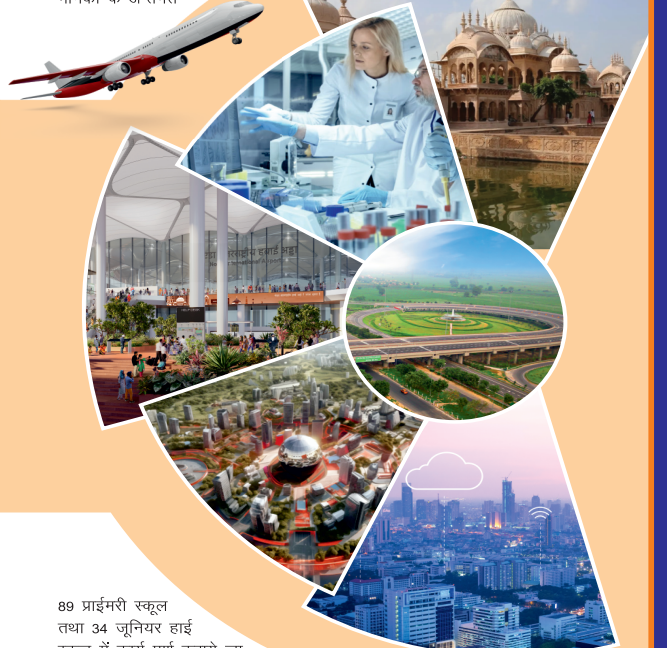
# सर्वांगीण विकास की राह में बढ़ते कदम...



नन्द गोपाल गुप्ता 'नन्दी'  
मंत्री, औद्योगिक विकास,  
उत्तर प्रदेश सरकार

- **औद्योगिक भूखण्डों का आवंटन** : प्राधिकरण ने कलस्टर आधारित उद्योगों के विकास हेतु प्रमाणी कार्यवाही की है। प्राधिकरण के औद्योगिक सैक्टरों में MSME पार्क, टॉय सिटी एवं हैडक्वार्टर पार्क एवं अपैरल पार्क का विकास किया गया है। वित्तीय वर्ष 2017 से 31 जनवरी 2024 तक कलस्टर आधारित औद्योगिक पार्कों एवं मिश्रित भू-उपयोग में कुल 2209 औद्योगिक ईकाईयों की स्थापना हेतु भूमि का आवंटन किया गया है। इन उद्योगों के स्थापना से प्राधिकरण क्षेत्र में लगभग रु. 31,110.98 करोड़ रुपये का निवेश प्राप्त होगा तथा 3,62,208 लोगों को रोजगार की प्राप्ति होगी।
- **मेडिकल डिवाइस पार्क** : भारत सरकार की योजना के अंतर्गत मेडिकल डिवाइस पार्क की स्थापना यमुना एक्सप्रेसवे प्राधिकरण द्वारा सैक्टर-28 में की जा रही है। परियोजना की कुल लागत रु. 439.40 करोड़ (भूमि लागत को छोड़कर) है। मेडिकल डिवाइस पॉलसी के अंतर्गत रु. 100 करोड़ का ग्रांट भारत सरकार द्वारा दिया जाना है जिसके सापेक्ष रु. 30 करोड़ प्राप्त हो चुके हैं। मेडिकल डिवाइस पार्क में इकाईयों की स्थापना के लिए भारत सरकार द्वारा सैद्धांतिक अनुमति में वणिग विशेष प्रोत्साहन लाभ प्रदान करने हेतु फार्मास्यूटिकल मैनुफैक्चरिंग नीति-2018 (यथा संशोधित) के प्रस्तर-12.5 के तहत प्रस्ताव पर मा. मंत्री परिषद द्वारा दिनांक 14.06.2022 को अनुमोदन प्रदान कर दिया गया है। Scheme for promotion of Medical Devices Park के अनुसार मेडिकल डिवाइस पार्क योजना-02 वर्ष में क्रियान्वित की जानी है। मेडिकल डिवाइस पार्क योजना के अंतर्गत फेज-1 में 36, फेज-2 में 25 एवं फेज-3 में 13 भूखण्डों का आवंटन हो चुका है। इस योजना में लगभग 3,800 करोड़ का निवेश प्राप्त होगा साथ ही 15,000 रोजगार का सृजन होगा।
- **इन्टरनेशनल फिल्म सिटी** : इन्टरनेशनल फिल्म सिटी : उ.प्र. में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की फिल्म सिटी के स्थापना की उ.प्र. शासन की परिकल्पना ने लिया आकार। यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण के विकसित क्षेत्र में 230 एकड़ में फिल्म सिटी की स्थापना हेतु निर्माता निर्देशक बोनी कपूर एवं ब्रूनी ईफ्रा सफल निविदाकार रहे।
- **नॉयडा इन्टरनेशनल एयरपोर्ट, जेवर** : नॉयडा इन्टरनेशनल एयरपोर्ट, जेवर नागरिक उड्डयन विभाग, उ.प्र. शासन की पी.पी.पी. मोड पर आधारित परियोजना है। इसका विकास प्राधिकरण के मास्टर प्लान क्षेत्र इन्टरनेशनल एयरपोर्ट एण्ड एविएशन हब के अंतर्गत 1334 हेक्टेयर क्षेत्र में जेवर के निकट किया जा रहा है। इस हेतु 1334 हेक्टेयर भूमि का अधिग्रहण किया जा चुका है तथा भारत सरकार की विभिन्न एजेंसियों से सभी प्रकार की एन.ओ.सी. एवं इन्वायर्समेंट क्लेरिन्स प्राप्त हो चुका है। ग्लोबल बिडिंग प्रक्रिया से Zurich Airport International AG का चयन कंसेशनायर/विकासकर्ता के रूप में किया गया है। समस्त भूमि का कब्जा विकासकर्ता को प्रदान किया जा चुका है तथा विकास हेतु Master Plan एवं Development Plan अनुमोदित किया जा चुका है। वर्तमान में विकासकर्ता Yamuna International Airport Pvt. Ltd. जो Zurich Airport International AG की SPV है, के द्वारा Terminal Building, रनवे, ATC Building के निर्माण कार्य किया जा रहा है। प्रथम चरण में 12 मिलियन यात्रियों के लिए एयरपोर्ट का निर्माण होगा जिसमें रु. 5,730 करोड़ की धनराशि कम्पनी द्वारा व्यय की जाएगी। एयरपोर्ट की स्थापना से औद्योगिक अवस्थापना का संरचनात्मक विकास होगा, जिससे रोजगार के अवसर बढ़ेंगे, विनिर्माण एवं निर्यात को प्रोत्साहन मिलेगा तथा हवाई यातायात सुगम होगा साथ ही पर्यटन में उल्लेखनीय वृद्धि होगी।
- **हेरीटेज सिटी** : राया नगरीय केन्द्र (वृन्दावन) प्राधिकरण की महायोजना में शासन द्वारा अनुमोदित है, जहाँ प्राधिकरण द्वारा हेरीटेज सिटी के रूप में विकास किये जाने की योजना है। इसके अध्ययन हेतु M/s CBRE South Asia Pvt. Ltd. को परामर्शदाता के रूप में चयन किया गया है। ब्रज विकास परिषद के सुझाव पर इसका विकास श्री बांकेबिहारी मंदिर के समीप ग्रीनफील्ड एरिया में किया जाएगा जहाँ पर पूर्व से ही भगवान श्रीकृष्ण से सम्बन्धित कई पौराणिक स्थल मौजूद हैं। इस योजना में यमुना एक्सप्रेसवे से श्री बांकेबिहारी मंदिर हेतु ग्रीनफील्ड कनेक्टिविटी प्रदान की जाएगी साथ ही रिवर फ्रन्ट, योग केंद्र, प्रार्थना स्थल आदि का भी विकास हेरीटेज सिटी में सम्मिलित है। इसका DPR कंसल्टेंट द्वारा तैयार किया जा रहा है। DPR के अनुमोदन के उपरान्त विकासकर्ता का चयन पी.पी.पी. मोड पर किया जाएगा।
- **डेटा सेंटर पार्क** : सैक्टर-28 में डेटा सेंटर पार्क 100 एकड़ में विभिन्न आकार के 10 भूखण्डों के आवंटन की योजना लायी गयी है। डेटा सेंटर पार्क और एविएशन हब के बीच की दूरी 2.5 कि.मी. है। डेटा सेंटर पार्क के अंतर्गत 2 भूखण्डों का आवंटन हो चुका है।
- **लॉजिस्टिक पार्क** : यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण क्षेत्र में टपल-बाजना नगरीय केन्द्र के रूप में महायोजना में उ. प्र. शासन द्वारा अनुमोदित किया गया है। लॉजिस्टिक पार्क का विकास टपल-बाजना नगरीय केन्द्र में प्रथम चरण के रूप में विकसित किया जाना है। Deloitte Touche Tohmatsu India LLP को इस के अध्ययन हेतु परामर्शदाता नियुक्त किया गया है। जेवर एयरपोर्ट की स्थापना के दृष्टिगत लॉजिस्टिक हब की सम्भावित मांग के दृष्टिगत इसका विकास किया जाना है। परामर्शदाता Deloitte द्वारा डीपीआर बनाया जा चुका है जिसे प्राधिकरण बोर्ड में दिनांक 24.08.2022 को फेज-1 (205 एकड़) का अनुमोदन प्रदान किया है इसका विकास पी.पी.पी. मोड पर UPP.P.P. Guidelines 2016 के प्राविधानों के क्रम में किया जायेगा।
- **एफ.डी.आई.** : यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण क्षेत्र में उ. प्र. सरकार की नई एफ.डी.आई. व फॉचून-500 कम्पनी निवेश प्रोत्साहन नीति के अंतर्गत M/s. Fuji Silvertch Concrete Pvt. Ltd. को सैक्टर-32 में 20 एकड़ भूखण्ड का आवंटन किया गया है।

- **ग्रामों का सैक्टरों की तर्ज पर स्मार्ट विलेज के रूप में विकास** : प्रथम फेज में प्राधिकरण द्वारा अधिग्रहित क्षेत्र के कुल 29 औद्योगिक नगरों को स्मार्ट विलेज के रूप में विकसित किया जाना प्रस्तावित है। 06 औद्योगिक नगरों निलौनी, रामपुर बांगर, अच्छेजा बुजुर्ग, डूंगरपुर रौलका, मिर्जापुर व रुस्तमपुर का कार्य पूर्ण करा दिया गया है। 13 औद्योगिक नगरों (सलारपुर, मूजखेडा, चपरगढ़, (माजरा-मिर्जापुर), गुनपुरा, मुरादगढ़ी, मौहम्मदपुर गुर्जर, खेरली भाव, औरंगपुर, अट्टा गुजरान, दनकौर जगनपुर, अफजलपुर, रौनिजा एवं चांदपुर) में कुल रु. 9584.08 लाख के विकास कार्य प्रगति में है। शेष 11 औद्योगिक नगरों के प्राक्कलन तैयार किया जाना प्रस्तावित है।
- **प्राधिकरण के 96 औद्योगिक नगरी क्षेत्रों के अंतर्गत स्कूलों के कायाकल्प के कार्य** : आपरेशन कायाकल्प के अंतर्गत परिषदीय विद्यालयों को अवस्थापना से संतुष्ट कराये जाने हेतु बेसिक शिक्षा अधिकारी द्वारा कराये गये सर्वे में 14 मानकों के अंतर्गत



89 प्राईमरी स्कूल तथा 34 जूनियर हाई स्कूल में कार्य पूर्ण कराये जा चुके हैं।

### ● अभ्युदय कम्पोजिट विद्यालय :

प्राधिकरण सीमा के अंतर्गत आने वाले 15 विद्यालयों की सूची तैयार कर प्रस्तुत की गयी है, जिसमें नयी शिक्षा नीति-2020 के अनुरूप "At Grade Learning" की अवधारणा के आधार पर उक्त चिन्हित विद्यालयों में पढ़ रहे बच्चों को विश्वस्तरीय एवं आधुनिक अवस्थापना सुविधाओं के साथ बेहतर शैक्षणिक परिवेश में शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से परिषदीय कम्पोजिट विद्यालयों को अभ्युदय कम्पोजिट विद्यालय के रूप में उन्वीकृत किये जाने हेतु प्रस्ताव प्रेषित किया गया है। इसके अंतर्गत विद्यालय में 05 कक्षाओं से युक्त 01 एकीकृत भवन का निर्माण किया जाएगा, जहाँ निम्नलिखित आधुनिक अवस्थापना सुविधाओं को विकसित किया जाएगा:

- Library with dedicated reading Corner • Computer lab with language lab solution
- Modular composite (Math & Science) laboratory • High-tech Smart class by interactive display smart board with virtual class room • Staff room with attached toilet

अभ्युदय कम्पोजिट विद्यालय राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप डिजिटल शिक्षा पर विशेष ध्यान देने के उद्देश्य से बच्चों को डिजिटल एजुकेशन प्लेटफार्म एवं डिजिटल लर्निंग के माध्यम से गुणवत्तापरक शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए आधुनिक स्मार्ट क्लास रूम को भी तैयार किया जायेगा। प्राधिकरण द्वारा कुल 12 विद्यालयों को दो चरणों में अभ्युदय कम्पोजिट विद्यालयों के रूप में विकसित किये जाने हेतु कार्य प्रगति में है।



## यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण

प्रथम तल, कॉमर्शियल कॉम्प्लेक्स, पी-2, सैक्टर ओपेगा-1, ग्रेटर नोएडा 201308, जनपद-गौतमबुद्ध नगर  
Tollfree No. : 180018 08296 वेबसाईट: www.yamunaexpresswayauthority.com